लाल देव कामत

लेखक परिचय-
नाओं: लाल देव कामत
ई-पत्र:**lalkamatdeo@gmail.com**
माताक नाओं: स्व अरहुल देवी (नैहर गम्हरिया)
बाबुजी: स्व बाबुचन कामत उर्फ बाबु लाल
बावाजी: स्व. ललित कामत (असेशर)
द्वितीय मैयाँ **:** रानी देवी (नैहर सुकमारपुर)
जन्मतिथि: (सरकारी कागतमे) **2/4/1971**ई.
शिक्षा: स्नातक (कला) **1988-1991** ई.
पत्राचार पता: ग्राम पंचायत नौआबाखर **14,**
डाकघर हटनी (मूलबासी)**,**
थाना**+**वाया-घोघरडीहा, रेलवे स्टेशन, विधानसभा
39, फुलपरास एन.एच. **57,** लोकसभा क्षेत्र-**7**
झंझारपुर, जिला- मधुबनी, (बिहार)**,** पिन नं
847402 हाट्सऐप नं.: **7631390761**
नाना: स्व. संजीत भंडारी, नानी स्व. सोनिया देवी,
नैहर-कुम्हरौली, प्रखंड- नवहट्टा (सहरसा)।
अग्रज बहिन: सरस्वती देवी, सासुर: क्योटापट्टी-
रसुआर (सुपौल)
अनुज भाय: उमाकान्त एवं महाकान्त।
पत्नी: सूमित्रा देवी उर्फ पुतूल 'मुन्नी', (बाल
बिआह)**,** मैके खड़ौवा, पो. सिरखरिया,
तुलापतगंज, (अड़रिया संग्राम)।
पुत्र: क्रमश: सुभाष कुमार कामत, **+2**
बी.पी.एस.सी. शिक्षक (हरभंगा, लखनौर)**,**
कैलाश आनन्द, **+2** बी.पी.एस.सी.
शिक्षक (जाले, दरभंगा)**,**
आकाश 'लूलु'**:** स्नातक (ऑनर्स) अमानत,
सहरसा,
लवकुश कुमार: स्नातक, आई.टी.आई प्रशिक्षण।
पुत्री: प्रिति- टीडिसि पार्ट-**3,** सी.एम.बी. कॉलेज-
डेवढ घोघरडीहा (अध्ययनरत)

अभिरूचि: समाजसेवा, **9** बेर चुनाव लड़ि
हारबाक अनुभव। 'सगर राति दीप जरय' मैथिली
कथागोष्ठीक **106** ठम् आयोजन कोसी क्षेत्र,
हटनी पुस्तकालय, ब्रह्मस्थान परिसरमे।
सार्वजनिक रूप सँ घोषणा **-:** अन्तर्राष्ट्रीय
अंगदान दिवस पर अपन दूनू नेत्र जीवनक
अन्तमे कोनू जरूरतमंद लेल दान।

पल्लवी प्रकाशन
जे.एल.नेहरू मार्ग, तुलसी भवन
निर्मली, सुपौल, बिहार : 847452
मूल्य : ₹300/-

गँहकी नजैर(प्रबन्ध-निबन्द-समालोचना) **:** लालदेव कामत

पल्लवी प्रकाशन

गँहकी नजैर

लालदेव कामत

भारतीय गणतंत्र क' अमृतकाल वर्ष

भारत रत्न कर्पुरी ठाकुर

समर्पण

दिवंगत पूज्य बाबा आ अम्मा जीकेँ
विनम्र श्रद्धा सुमन अर्पित रूपेँ समर्पित
अछि ई मैथिली पोथी!
ऊँ शांति! शत् - शत् नमन् !!

परिनिर्वाण तिथि अष्टमी बुधदिन, १०.३५ मीनट पर दि० १०-६-२०१५ई०

देहावसान
दिनाँक २० - ६ - २०१६ सोमवार
प्रभातकाल सद्गति

संदेश

प्रसिद्ध व्यक्तित्व आ दिव्यदृष्टि मैथिली भाषा मेँ साहित्यिक पोथी के लेखक श्री लालदेव बाबू केँ लेखनगति केर हम स्तुत्य करैत नव पोथी ' गैहँकि नजैर' केर पाण्डुलिपि पढ़ि अति हरखित छी। हिनक वोधगम्य ठेंठी मैथिलीमे सिरजल गेल रचना लेल बधाय आ मंगल कामना करैत छी।

- शिवसुन्दर कामत (बीजेपी नेता) मधुबनी, मिथिला

दू टप्पी !

सादगीके प्रतिमूर्ति ,महान् व्यक्तित्वके पुतला , अतिपिछड़ा 'क बेटा दिवंगत कर्पूरी ठाकुर जीकेँ भारतरत्न केर उपाधि भेटला सँ हम अत्यंत प्रसन्न छी। समरासन लाखों पढल - लिखल लोक अत्यंत खुशी मनाबैत हुनक जन्मशती समारोहके पूर्व संध्या पर मोदीजी के केन्द्रीय सरकार दिश सँ महामहिम राष्ट्रपति कार्यालय केर विज्ञप्ति जारी होइते स्वत: धन्य -धन्य कहलनि अछि। गुदरीके लाल वीर कर्पूरी ठाकुर जीकेँ मरणोपरांत चिरप्रतीक्षित माँग हुनक जन्म शताब्दी वर्षमे " भारत रत्न" भेटला सँ अतितमे हुनक कयल संघर्ष सदा स्मरण भ' उठलैक। जननायक केँ जानय - बूझय लेल 'कर्पूरी संग्रहालय ' पटना पहुँच अवलोकन कय सकैत छी। ओतय निहरला सँ हुनक सरकारी निवासमे राखल हुनकर डेबल १५० वौस्त धरोहर रूपेँ व्यवस्थित राखल छन्हि। से सहजे बुझाइत अछि जे ओ केहन सादगीक मनुख छलाह। ओ अपन राजनीतिक जीवनमे कारी कोठलिक दाग अपना उपर नहिं लागए देलनि। बिहार क' राजधानी पटना शहर स्थित सूबेक दोसर उपमुख्यमंत्री आओर दूबेर एगारहम मुख्यमंत्री रहल जननायक कहौलाह। हुनका नामे आवंटित सरकारी बंगला केँ १९९० ई०मे स्मृति संग्रहालय बनावल गेलैक।

देशरत्न मार्ग स्थित अवस्थित राजभवन आ मुख्यमंत्री आवासके एकातमे ठाढ़ ई ढ़ांचा आब कला संस्कृति आ युवा विभागक देखरेखमे छैक। ओहि शासकीय डेरापर १७ फरबरी १९८८ धरि जीबैत काल पूर्व प्रधानमंत्री चंद्रशेखर, डॉ ० राममनोहर लोहिया, लोकनायक जयप्रकाश नारायण, लालकृष्ण आडवाणी, धनिक लाल मंडल जी सन - सन राजनेता हुनका सँ भेंट परामर्श लेल अबैत रहलाह। प्राथमिक कक्षाक' हमरा पाठ्यक्रम मेँ पढ़ौनी भेल रहय ' पटने का वाढ : संकट का सामना ' से १९ सितम्बर १९६९ केर प्रल्यंकारी भीषण वाढिमे हुनक निरीक्षण करयबला भरिडांड़ पानिमे ठाढ़ हेबाक अनोखा फ़ोटो देखल जाईछ। प्रसिद्ध संग्रहालयमे डेढसय हुनक कठिणताक दस्तावेज रूपेँ सजाओल राखल चीजवस्तु अवलोकन करय लेल छैक। सयनकक्ष सँ ल' के वस्त्र,बेग, घड़ी, कलम, स्नातक पढाय केर अंकपत्र आ इसकूलके प्रमाण पत्र ओ चेशमा लौकैत छै।

राजनीति कैँ सामाजिक बदलावके ओजार मानैत ओ अपन राजनीतिक यात्राके क्रममे उपेक्षित आ वंचित वर्गक लेल अगूआ सदन सँ सड़कधरि बनल रहलाह। ओ निजी जीवनमे मिलनसार लोक रहथि ,ताहि कारणेँ सरकारी कामकाज पछुवा जाईत रहनि। सन् १९६० बैचके बिहार कैडरके आईएएस यशवंत सिन्हा जी हुनक प्रधान सचिवक हैसियत सँ दैनिक रूटीन बना देने रहैनि , मुदा ओ तैयो लोकसभ सँ भेँटघांटमे अधिक समय लगाबैत रहलाह। वादमे १९५१ बैचके बिहार कैडर आफिसर पीएस अप्पू कैँ अपन मुख्य सचिव बनौलनि आ हाईकोर ईमानदारीके बेमिसाल परिचय देलनि। स्व० कर्पूरी जी व्यक्तिगत जीवनमे एकदम साधारण लोक रहथि। सधारण जीवन यापन आ सधारण भोजन पसीन करथि। जनताक भीड़ सँ बचबाक परियास करथि मुदा लोक अपना बेगरते शौचालय पर्यन्त तकके गेट लग कतार लगा दैन। ताहि कारणेँ ओ समय सँ जलखै कलौ धरि नै क' पबैत छलाह। दोसरो ठामक मुख्यमंत्री हुनक बात मानि अगिला डेग बढाबैक। मुंगेरी लाल कमीशन आ कोन कोन न आयोगके परता परल प्रतिवेदन कैँ जनहित मेँ समक्ष आनबामे कसरि नहिं रखलाह। आरक्षण आ अधिक पछुआएल लोकक ओकालति खातिर हुनका अपमानों सहय पडलनि। हुनक जातिगत फार्मूला कैँ देशभरिमे पहचानिके लागू करबाक खगौट छै।

तखने समानताके अधिकार संवैधानिक लक्ष्य प्राप्त करत।

जय कर्पुरी!

गुदरी'क लाल : कर्पुरी ठाकुर जी

हम अपना गामक चुनावी सभामे कचहरी स्कूल पर फुलपरास विधानसभा क्षेत्र सँ विधायक लेल चुनाव लड़ैत आ भाषण करैत हुनका देखने रहियैक। १९७८ ई.मेँ हजारी बाबूक हाथी पर चढि धारक लचकापुल लग सँ नौआबाखर दाहारण धरि कतेको ठाम तोरणद्वार केरागाछक घौदलागल थम्ह उत्साह सँ नवजुबक लोकनि गारने रहैक।हमर बालसंगी प्रमोदजी उर्फ बेचू ठाकुर पं०स०सदस्य धरि आह्लादित भ' गेनाफुलक जयमाला पहिरेने रहनि। हम-सब भोर सांझ हुनक चक्रबीच हलधर छापके नोटीशपर्चा ल ' केँ जुलूस निकालैत रहलहुँ। ताहि समय सँ हमर वर्ग शिक्षक आदरणीय यमुना साफीजी हमरा एक नव नाम सँ विद्यार्थी गणक समक्ष सम्वोधन करथि -: नेताजी लालकृष्ण आडवाणी।

भारत सरकार बीर कर्पुरी जीके नामे भारत रत्न उपाधि सँ अलंकृत करय,से बिहार बासीक माँग थीक। भारत देशक स्वतंत्रता सेनानी ,शिक्षक, राजनीतिज्ञ एवं बिहार'क द्वीतीय उपमुख्यमंत्री आओर दूबेर प्रभावशाली मुख्यमंत्री रहल छलाह ओ। लोकप्रियताक कारणेँ हुनका जन नायक कहल जाइत रहनि। तत्कालीन दरभंगा जिला आब समस्तीपुर जिलांतर्गत पितौझिया गाछकवन लग पितौझिया (कर्पुरी ग्राम) गाममे नाई उप जातिक गरीब परीवारमे

श्री गोकुल ठाकुर जी आ श्रीमती रामदुलारी देवी जीके घर हुनकर जन्म २४ जनवरी १९२४ ई०केँ भेल छलन्हि। सीमान्त श्रेणीक खेतिहर किसान केँ संग-संग हुनकर पिताजी गीरहतक केशदाढी काटबाक काज सेहो डेबने रहथि। १९४०ई० मेँ ओ मैट्रिक पास केलनि। यूपी0 केर सहजानंद सरस्वती जीके किसान आन्दोलन बिहार मेँ खूब चरम पर रहय,ताहीमे श्री ठाकुर जी रुचि लेमय लगला।ओही समयक साथी नरेन्द्र देवक संग राजनीति शुरू कयलन्हि। कर्पुरी जीक भारत छोड़ो आंदोलन मेँ बहुत शानदार भुमिका छैन,तकर विशद् चर्चा एहि लघु आलेख में संभव नहिँ होयत। ओ दुसाल दूमास जहल काटलनि ।

सरल हृदयके राजनेता ठाकुरजी'क बाल विवाह फुलेश्वरी देवी सँ भेल रहनि,जाहि सँ हुनका दू पुत्र आ एक पुत्री भेल छलन्हि।कर्पुरी जीके जेष्ट बालक मा०रामनाथ ठाकुर जीक सौभाग्य एहन रहलैन जे पिताजी क' सुझाव पत्र निरन्तर भेटनि आ वादमे विधान पार्षद व राजसभा सदस्यता पार्टी अनुकम्पा सँ बनाबैत गेलनि। विधायक आ मंत्रीधरि राज्य सरकारमे रहलैक हन। कर्पुरी जी दूरदर्शी हेबाक संग-संग स्पष्ट वक्ता रहथि।

एक दिन ओ पटनाक कृष्ण टाकीज हालमे क्रान्तिकारी भाषण देने छलाह-: हमरा देशक ततेक न वेशी अवादी अछि जे सब थुक फेंक देत तँ अंग्रेजी हुकूमत बहि - भाषि जाएत। एहि वकतव्य लेल हुनका डण्ड भोगय पड़ल रहनि। श्री ठाकुर जी देशवासीकेँ हरदम जगबैत रहैत , अपन अधिकार लेल सजग आ जागरुक करैथ। ओ दसकों धरि माननीय विधायक आ विरोधी दलक नेता सदनमे बनल रहला। १९५२ मेँ पहिलवेर विधायक तारापुर सँ चुनेलाह तँ कहियो फेर चुनाव हारलाह नँय। ७० के दशकमे बिहारक राजधानी पटनामे विधायक आ पूर्व विधायक केँ नीजी आवास लेल भुमि सस्ता दर पर सरकार द' रहल छलैक। ठाकुरजी केँ अपने पार्टीके एक विधायक कहलकैन - अपनौंह जमीन किन लियौक, ता परोक्ष भेलासन्ता बाल-बच्चा एतय रहि सकत। ताही मादें ओ अस्वीकार करैत बजलथीन - बालक सब गामे रहय से नीक। एक बेर हुनकर बहनोंई हुनका भाय राम सुगत ठाकुर जीके संग पटना पहुंच कय सरकारी नौकरी धरा दिय कहलकैन,तँ ५० गो टाका दैत उत्तर देलखिन ऐ पाई सँ लोहखर चुमौटी कीन लेब आ गामेमे पुश्तैनी पेशा हजामत आरम्भ करू ग। १९७०-७१ मेँ करपुरी जी अपना बेटीक बियाह मेँ मुख्यमंत्री रहैत आदर्श उपस्थित कयलन्हि। ओ लड़का देखय राँची गेलाह तँ प्राइवेट मोटरगाड़िये सँ। आ विवाह करावय चाहैत रहथि देवघर मंडीलमे,परंच पत्निक विशेष आग्रह (जिध) पर अपन पैतृक गांव मेँ सादगीक संग सम्पन्न कयलन्हि। कोनू अपना कैवनेट सदस्य आ अफसर केँ आमंत्रण जनतव नहिं कयलनि। नीजी सचिव लक्ष्मी साह जी केँ एतेधरि जे आदेशित कयने रहथि , विवाह दिन बिहार सरकारक कोनू विमान हमरा बिनु निर्देशक लगिचक दरिभंगा आ सहरसा हबाई अड्डा पर विमान नहिँ उतारि सकैछ। हुनकर सीमीत ईष्टमित्र स्थानीय लोक साधारण रुपेँ सहभागी बनलैक। १९७७ मेँ फेर सँ भेल मुख्यमंत्री रहथि,जेपी०निवास पर जयप्रकाश नारायण बाबुक जन्मदिन मनाओल जा रहल छलैक। ताहि सुअवसर पर चरखा समिति , कदमकुआँ - पटनामे जनता पार्टी क' पैघ - पैघ स्तरके नेतागण जुटल रहैथि।

कर्पुरी जीके टुटल चप्पल आ फाटल कुर्ता तथा बिनु सीटल केश देखतहि हुनक व्यस्तताके सहजे गमि कियो (एक नेताजी) टिप देलकैन , मुख्यमंत्री जी ठीक तरहेँ गुजारा ले कतेक वेतन भत्ता होना चाही। ता नानाजी देशमुख केर समक्षे अपन नम्हर कुर्ता केँ चन्द्र शेखर आगू उठबैत सबहक कुर्सी लग धरि बेराबेरी जाईत कहैथ -: कर्पूरी जीके कुर्ता फण्डमे दान दिअ! आ गोटेक सय टाका पुराकय दैत हुनका कहल गेलैन एहि राशी सँ मात्रे कुर्ता - धोती अपना लेल किनियौ! हुनका मुखाकृति पर कोनू असहज भाव नै छलैक। ओ कहलथिन ऐ फंड केँ हम मुख्यमंत्री राहत कोष मेँ जम्मा करब। समाजवादी आन्दोलनमे कर्पूरी जीक सादगी आ ईमानदारीक बानगी भुतपूर्व विधान पार्षद सूर्यनारायण चौधरी जी बहुतो बेर राजनैतिक कार्यकर्ता लग हुनकर प्रेरक प्रसंग सुनौने छलाह। चौधरी जी सचीव आ ठाकुरजी अध्यक्ष केर हैसियत सँ शोसलिस्ट खेमा दिश सँ कौमी एकता आ सम्पूर्ण क्रान्ति पर राजगीरमे कार्यक्रम आयोजन सफलता पूर्वक कयने रहथि। कहल जाईछ ठाकुरजीके वाणी पर कठोर नियन्त्रण रहय।

पाठ्य पुस्तकमे आब हुनका विषयमे पढौनी होईछ जाहि में जन्म १९२२ ई० लिखल छैक। ओ भाषाक कुशल कारीगर मानल जाइत छलाह। बिहार क' मिडील आ हायस्कूल मेँ विद्यार्थी क' मासीक शुल्क माफ कयलन्हि। पहिल वर्गक छात्र - छात्रा सबकेँ मातृभाषामे शिक्षण केर ओरियाउन धरेलनि। गाँधी मैदानमे(पटना) अभियन्त्रण पढौनी कयल बेरोजगार युवाकेँ रैली करैत नियुक्ति पत्र बाँटलनि। ग्राम पंचायत राज केर प्रथम चुनाव आ फेर १९७८ मेँ मुखिया - सरपंचक आम चुनाव करेलनि। हुनकर संभाषण आडम्बर रहित , उत्साहवर्धक ओ चिन्तापरक होईत छलैन। विपक्षी सेहो हुनकर वार्ता शैली आ वोधगम्य भाषा वकतव्यक' कायल रहनि। कहियो असहज - अपमानित नहिं बुझि पड़ैक विपक्षी दलकेँ। हुनक आवाजो तेहने खनकदार रहनि । कर्पुरी जी कहथिन सुनूं सबहक- करु अपने मनक।

देशभरिमे कांग्रेसक भीतर जे कतेको तरहक खामियां आबि गेल छलै, तेँ ओकरा कड़ा सबक सीखबय ले १९६७ केँ आम चुनावमे डा०राम मनोहर लोहिया जीके नेतृत्वमे गैर कांग्रेसवाद क' नारा बुलन्द भेल । कांग्रेस सगतर पराजीत भेल आ बिहारोमे पहिलखेप गैरकांग्रेसी सरकार गठित भेल रहैक। सत्तामे आम जनता आ पिछरल तबकाक भागेदारी बढलैक।

कर्पुरी जीकेँ उपमुख्यमंत्री आ शिक्षामंत्री बनिते हुनक भुट कद-काठी आरो बढि गेलनि। १९७७मेँ जनता पार्टी क' विजयश्री भेटलापर ओ बिहार क' मुख्यमंत्री बनिए गेलाह। पिछरल वर्गक मालीहालत सुधारबाक लेल ओ सरकारी नौकरीमे आरक्षण केर व्यवस्था करैत अगड़ा जातिगत गरीब आ महिला लेल ३-३ प्रतिशत सीट , आ २६ प्रतिशत सीट पिछरल तबका लेल बहाल रखलैन।एनेक्सर १केँ भारत भरिमे बिहारेटामे पृथक पहचान अति पिछड़ा वर्ग रुपेँ दियेलनि। एहन प्रावधन भारत सरकारमे सेहो ओबीसी २७ प्रतिशत आरक्षणमे सीटक संख्या विभाजन हुअय। नव अतिपिछड़ा अधिकार लै लेल तँ बिहार राज्य केर आरक्षण सीटमे आयल , परंच जाहि ऐने-२ सँ बहरायल ततय हुनकर आरक्षण सीट रहिये गेलै। एहि सँ कर्पूरी फार्मूला केँ आंच अयलैक, जे अदालत मेँ चुनौतीक मूद्दा छी। एखन कर्पुरीसन जीवन त्यागी राजनेतागण क' आवश्यकता अछि। ओ प्रथमबेर विधायक बनलापर आष्ट्रिया जेबाक प्रतिनिधिमे नाम शामिल देख एक मित्र सँ कोट मांगलैन ,से फाटल रहनि। ई देख यूगोस्लोवियाक मुखिया मार्शल टीटो नैका कोट हुनका उपहार देलकैन। सन् १९७४ मेँ हुनकर छोट बेटा क' मेडिकल पढायमे चयन भेल छलनि,परंच ओ बेराम पड़ि गेल रहैक। से दिल्लीके राममनोहर लोहिया होस्पीटलमे भर्ती कराओल गेलैक। हार्टक सर्जरी होयबाक रहय। श्रीमती इन्दिरा गांधी केँ पता चललनि तँ एक राज्यसभा सांसद केँ पठाकय ओकरा एम्स०मेँ भर्ती करा देलथिन। ई एकटा विडम्वना बूझल जाइत छैक जे हुनकर जीवनकाल मेँ कपटी ठाकुर धरि कहलकैक ;सेहो आब हुनकर जयन्ति कार्यक्रम आ अवसान तिथि समारोह पूर्वक राजकीय शहरमे मनाबैत छैक। वास्तवीकमे ओ गुदरीमे छिपल लाल छलाह। एहन महामानवके १७ फरवरी १९८८ केँ पटनामे आकस्मिक निधन भ' गेलैक । नुनक घोल कोनू अपेछीत पिया देने रहनि,जहनकि चिकित्सक मनाही करने छलैन। शत् शत् नमन।

भारत रत्न जननायक कर्पूरी जी
समाजवादी आन्दोलनमे कर्पूरी जीक सादगी आ
ईमानदारीक बानगी भुतपूर्व विधान पार्षद
सूर्यनारायण चौधरी जी बहुतों बेर राजनैतिक
कार्यकर्ता लग हुनकर प्रेरक प्रसंग सुनौने छलाह।
चौधरी जी सचीव आ ठाकुरजी अध्यक्ष केर हैसियत
सँ शोसलिस्ट खेमा दिश सँ कौमी एकता आ
समाजवाद पर राजगीरमे कार्यक्रम आयोजन
सफलता पूर्वक कयने रहथि। कहल जाईछ
ठाकुरजीकेँ वाणी पर कठोर नियन्त्रण रहनि। पाठ्य
पुस्तकमे आब हुनका विषयमे पढौनी होईछ। ओ
भाषाक कुशल कारीगर मानल जाइत छलाह।
बिहार क' मिडील आ हायस्कूल मेँ विद्यार्थी क'
मासीक शुल्क माफ कयलन्हि। पहिल वर्गक छात्र -
छात्रा सबकेँ मातृभाषामे शिक्षण केर ओरियाउन
धरेलनि। गाँधी मैदानमे अभियन्ता पढल बेरोजगार
युवाकेँ रैली करैत नियुक्ति पत्र बाँटलनि।ग्राम
पंचायत राज केर प्रथम चुनाव आ फेर १९७८ मेँ
मुखिया - सरपंचक चुनाव करेलनि। हुनकर
संभाषण आडम्बर रहित ,उत्साहवर्धक ओ
चिन्तापरक होइत छलैन। विपक्षी सेहो हुनकर
वार्ताक शैली आ वोधगम्य भाषा वकतव्य क'
कायल रहैक। कहियो असहज - अपमानित नहिं
बुझि पड़ैक विपक्षी दलकेँ।

हुनक आवाजों तेहने खनकदार रहनि । करपुरी जी
कहथिन सुनूं सबहक- करु अपने मोनक।
देशभरिमे कांग्रेसक भीतर जे कतेको तरहक खामियां
आबि गेल छलैक, तेँ ओकरा कड़ा सबक सीखबै ले
१९६७ केँ आमचुनावमे डा० राम मनोहर लोहिया जीके
नेतृत्वमे गैर कांग्रेसवादक' नारा बुलन्द भेल । कांग्रेस
सगतर पराजीत भेल आ बिहारोमे पहिलखेप गैरकांग्रेसी
सरकार गठित भेल रहैक। सत्तामे आम जनता आ
पिछरा तबकाक भागेदारी भेलैक। कर्पुरी जी
उपमुख्यमंत्री आ शिक्षामंत्री बनिते हुनक भुट कद-काठी
बढि गेलनि।१९७७ मेँ जनता पार्टी क' विजयश्री
भेटलापर ओ बिहार क' मुख्यमंत्री बनिए गेलाह।
पिछरल वर्गक मालीहालत सुधारबाक लेल ओ सरकारी
नौकरीमे आरक्षण केर व्यवस्था करैत अगड़ा जातिगत
गरीब आ महिला लेल ३-३ प्रतिशत सीट ,आ २०
प्रतिशत सीट पिछड़ा तबका लेल बहाल रखलैन।
एनेक्सर १ केँ भारत भरिमे बिहारेटामे पृथक अति
पिछड़ा वर्ग रुपेँ पहिचान दियेलनि। एहन प्रावधन भारत
सरकारमे सेहो ओबीसी २७ प्रतिशत आरक्षणमे सीटक
विभाजन हुअय।

नव अतिपिछड़ा अधिकार लै लेल तँ बिहार राज्य
केर आरक्षण सीटमे आयल परंच जाहि ऐने-२ सँ
बहरायल ततय हुनकर आरक्षण सीट रहिये गेल।
एहि सँ कर्पूरी फार्मूला कैँ आंच अयलैक। जे
अदालत मेँ चुनौतीक मूद्दा छी। एखन कर्पुरी जी
एहन जीवन त्यागी राजनेताक आवश्यकता देश आ
राज्यमे छैक। ओ प्रथमबेर विधायक बनलापर
आष्ट्रिया जेबाक प्रतिनिधिमे नाम शामिल देख एक
मित्र सँ कोट मांगलैन ,से फाटल रहनि। ई देख
यूगोस्लोवियाक मुखिया मार्शल टीटो हुनका कोट
नैका उपहारमे देलकैन। सन् १९७४ मेँ हुनकर छोट
बेटा क' मेडिकल पढायमे चयन भेल छलनि,परंच
ओ बेराम परि गेल रहैक। से दिल्लीके राममनोहर
लोहिया होस्पीटलमे भर्ती कराओल गेलैक। हार्टक
सर्जरी होयबाक रहय।इन्दिरा गांधी कैँ पता चललनि
तँ एक राज्यसभा सांसद कैँ पठाकय ओकरा एम्स०
मेँ भर्ती करा देलथिन। ई एकटा विडम्वना बूझल
जाइछ जे हुनकर जीवनकालमे कपटी ठाकुर धरि
जे कहलकैक सेहो आब हुनकर जयन्ति कार्यक्रम
आ अवसान तिथि समारोह पूर्वक राजकीय शहरमे
मनाबैत छैक। वास्तवीकमे ओ गुदरीमे छिपकल
लाल छलाह। एहन महामानवके १७ फरवरी १९८८
कैँ पटनामे आकस्मिक निधन भ' गेलनि ।
हुनका मरणोपरांत २०२४ मेँ जन्मशताब्दीक' पूर्व
संध्या पर महामहिम राष्ट्रपति श्रीमती द्रोपदी मूर्मू
जीक कार्यालय दिल्ली सँ विज्ञप्ति जारी होइते बिहार
बासीमे खुशीक लहैर आबि गेल। ई भारत रत्न
सम्मान हुनका पहिले कांग्रेस शासनमे भेंट जेबाक
छल! शत् शत् नमन।

एक अध्यात्म पथके पथिक - स्वतंत्रता सेनानी
जय - जय!

मधुबनी जिला अन्तर्गत प्रसिद्ध ग्राम सुन्दर बिराजीत निवासी सर्वश्री चुमन शरण आ श्रीमती देवकी देवी जीके ओहिठाम दरसन् १९१२ केर लगधकमे एक विलक्षण बालक कैँ जनम भेलनि। आनन्द'क एहि क्षणमे सरसमाज आ कैवर्त परिबारिक लोकनि हुनकर शुभ सँज्ञा रखलनि आनन्द शरण जी। आनन्द शरणजीक बाल-विवाह रेशमाक' सँग सहोरबा गाममे भेल रहनि।जाहि सँ हुनका दू पुत्र रत्न क्रमश: राम नारायण आ शिव नारायण भेलनि। हम हुनकर शक्तिस्थल पर प्रतिमा अनावरण समारोह आयोजनमे जाए, सर्वधर्म समभाव भजन, विनय - प्रार्थना धरि प्रस्तुत कयने रही।

महान स्वाधिनता सेनानी स्व० आनन्द बाबू एक यशस्वी शिक्षक रहथि। ओ हुलासपट्टी - जागेश्वर स्थानमे १९७५ ई. कैँ मिडिल स्कूल सँ सेवानिवृत्त भेलाह। ओतय पार्वती मंदिर निर्माण कय राजस्थान सँ संगमरमरके मुर्ति धरि स्थापित कयलन्हि। सामाजिक सर्वजातीय पंनचैतीमे लागल रहैत श्रधाक पात्र दसक नजैरमे छलाह। विद्यार्थी सबकैँ सांझ-प्रात पढैक प्रति जागरूक करैत पड़ोसी गामसबमे आ पहुनाईमे जाकय कुटुंब केर धीयापुताके सजग करैत रहलाह। प्रश्नावली पुछैथ आ समाधान सेहो बतबथिन। हिनक बहुतो शिष्य जीवनमे आगू बढलाह आ पद प्रतिष्ठा पौलनि। जाहिमे विधानसभा पूर्व अध्यक्ष स्व० राधानन्दन बाबु ,पटनामे पशुपालन विभाग केर निदेशक लक्ष्मी बाबू आदि छलखिन। शरणजी अपन जीवनक वेशी समय सर्वजातीय उत्थान लेल देलथिन। अ.भा.कैवर्त कल्याण समिति कोलकात्ता कैँ एक बैसारमे प्रस्ताव दैत मधुबनी,लहेरियागंजमे छात्रावास लेल आधारशिला रखलैन।ओ महान स्वतंत्रता सेनानी गड़वा निवासी स्व. अनंत लाल कामत जीक संग खुब पुरलनि।जातीय महासभा आयोजनमे जन जागृति करैत गामे - गामे कतेक़ो जिलामे भ्रमण कयने रहथि। हुनकर लिखित भाषण आ मंचीय संभाषण केर हम कायल छी। एक उदाहरण द्रष्टव्य अछि-:

हिंदीसँ मैथिली अनुवाद

बिहार प्रांतीय कृषिवर्त्त कैवर्त्त एवं केवट जातीय महासभाक १४ वां अधिवेशन सुपौल (सहर्षा) महासभाक संक्षिप्त कार्य विवरण दैत बाजल छलाह-:(दि॰१५-०५-१९६४ ई॰ कैँ) श्रध्येय सभापति जी, आगत अतिथिगण, मित्रगण आओर बहिण लोकनि! सर्वशक्तिमान सृष्टिकर्ता परमात्मा कैँ बेर-बेर नमन करैत छी। धन्य छथि ओ प्रभु जिनक असीम कृपा आ उत्साह प्रेरणा सँ एतय हम-सब एकत्रित भेलहुँ, जातिगत - गंगामे डुमकी लगाबैत बन्धू-बन्धू गारा सँ गारा जोड़कय, वैपारिक अदान प्रदान कय संगठन सूत्र कैँ मजगूत करय, राष्ट्रके पिड़ित अंगके स्वस्थ्य क' राष्ट्रोत्थानमे सहयोग करबाक लेल तरह-तरहके अभिलाषा ल' कैँ आयलहुँ अछि। एहन शुभ घरीमे चन्द शब्द सँ अपने सभक जे सेवा करबाक अहोभाग भेटल हेन, ताहि लेल अहाँक आभारी रहब, संगहि हमर हृदय आनन्द विह्वल भ' क' उमैर रहल य। बन्धूवर ! हम विगत कतेको साल सँ मंत्री पद पर रहै अहाँ सभक सेवा करैत आबि रहल छी। एहि सेवार्थ अवधिमे हमरा महासभाक कार्यक्रम आदि विषयमे जे अनुभव भेल, संक्षेपमे बुझा देनाइ अपन कर्त्तव्य बुझैत छी।

ता आगूक लेल अपने लोकिन कैँ मार्ग निर्धारणमे सहायक भ' सकय। उद्देश्य-:(१) जातिक अनेको दिवाना, जातिगत सभा कतेको ठाम कयलनि, परंच एहि जिलान्तर्गत भगवान श्री **108** शंकर लग सिंहेसर स्थान-महेश्वर लाल दास व्यासके सतत् परियास सँ **1941** ई• मेँ दरिभंगा जिलाक देवनाथपट्टी नौआबाखर मे भेल रहय। अपने तँ महान दुरद्रष्टा छलहूँ। आन सुधरल जातिक तरहेँ अपना बन्धूगण कैँ सांस्कृतिक, समाजिक, आर्थिक व राजनैतिक परिस्थितिमे सामानांतर देखय चाहैत रहथि। जातीय समाजक उत्थानक लेल हमरा वो आनो लोकके उत्प्रेरीत करैत अपेक्षित सामानताक पाठ देलनि। ताहिकैँ स्मरण करैत रग-रगमेँ जोश उमैर अबैत अछि। स्फूर्तिक संचार होइछ, परंच एखन परिवर्तित समयमे वो रहितथि तँ हमरा सभक क्रांति आरो तेज गति सँ आगू बढ़ैत' कियाक तँ जाहि समानताक पाठ ओ बहुत पहिले द' गेलाह, आई ओहि सामानताक आधार पर राष्ट्रक नव निर्माण हुअय जा रहल छैक।

परंच एहि प्रगतिक दौड़मे हम सभ गुरैक रहल छी' एक दिश संचय, दोसर दिश समन्यवयक दौड़ छैक' तेँ महासभाक निहायत आवश्यकता अछि। एहि सँ अपन पिछरल बन्धूगण कैँ चैतन्य बनाय, क्रांतिक ज्योती बारैक काज सतत् होइत रहत।

२) अनुभव-: सज्जनवृन्ध्द !

ई परिवर्तनकारी जुग थीक। आगु बढबाक उपाय ताकयमे सबके सब लागल य। एक राष्ट्र दोसर राष्ट्र कैँ पछारि अगूएबाक चेष्टा मेँ छैक। ताहि तरहेँ अपनो देशमे एक जाति दोसर जाति कैँ पछारि कय आगू बढि जेबाक कोशिश मेँ छैक। आ ई साँचक निकट गप्प य। अपना राष्ट्रक कर्णधार सब लोक संविधान निर्माण कय हमरो लेल राह प्रशस्त क' देलनि जे पिछरल कैँ सुविधा दैत एकरंगक पतियानीमे घींच लाबय चाहलथि। हमरा सबके नँय कियो उपर घीचैवाला अछि,आ नै अपना सँ हम आगूए बढि रहल छी। तकर कारणों छैक, अपन सामाजिक स्थिति आ दृष्टिकोण ओतहि छैक,जतय सहस्रो बरख पहिले हम सामाजिक , धार्मिक, राजनैतिक, सांस्कृतिक सब दृष्टिये पछुआयल तबकाक मेँ निकृष्ट स्थान पर जमल रही। सामाजिक दृष्टिये जौं हम कदाचित अपन विवेचना करैत छी तँ हम खिन्न भ' उठैत छी। इयह कृत हृदय कैँ असीम वेदना सँ भरि कालछ कटै अछि।

वैदिक युगक आगू जहन वर्णाश्रम धरमक प्रचार भेल तँ ताहि अनुकूल सामाजिक संघ बनल आ हमरा सभकैँ चतुर्थश्रेणी (शुद्र) मेँ राखल गेल। तहिया सँ हम आओर हमर समुदाय प्रदय पर्यन्त हेय दृष्टिय देखल जाऊ लागल। हम तँ प्रभूक दास छलहुँ। हमरा कमाय आ सेवा प्रभू लोकनिक हीत होईत रहय। बहुतो सदी सँ दासताक जीजीर मेँ जकरल देश तँ मुक्ती भ' गेलैक,परंच हमर दासता ,उत्प्रिड़न ,शोषण आइयो हमरा अपना चांगुरमे जकैर रखने अछि।

धार्मिक दृष्टि बावत हमर अस्थान बढ बेशी खसल य। हमरा समाजक अगुआ,धरमक ठिकेदार सब तँ एहि आराधना मे हमरे उपर प्रतिबंध लगा रखलक हन्।

जौं शास्त्रोक्त मंत्र ऋचाक प्रभाव संस्कार पर
पड़ैत होय तँ हमरा ताहिक उच्चारण के कहय
जे सूनयधरि केर अधिकार सँ वंचित कर हमरा
तथा हमर भावी पीढिक संतान कैँ संस्कारहीन
कय तेजोमय आ सम्मुन्नत बनयके मार्ग
अवरूद्ध क' देलक य। राजनैतिक क्षेत्रमे तँ
हमर दशा आरो दयनीय-सोचनीय
अछि।आजुक राजनीति तँ पाईवला आ
बहुसंख्यक वर्गक पक्षमे छैक।तेँ एहि दूनु
विन्दुक यादें अलग-अलग 'वाद' आ पार्टी सेहो
चुनाव लड़ेबाक लेल प्रत्याशी कैँ टिकश दैत
य।हम-सब दूनू संदर्भमे पिछरल छीहे।हमरो
वर्गमे एहन लोकक कमी नहिँ छैक ,जे देशक
आजादी लेल सक्रिय सहयोग दैत सन्
१९४२केर अगस्त क्रांतिक शिकार बनि
शिकंजेमे अपन प्राण त्यागलैन।

पछिला कतेको सालक अनुभव अए जे हमर
बहादुर नौजवान आगू बढबाक लेल परियास
करैत अछि आ पुनःपिछैर जाइछ।तकर
एकमात्र कारण थीक मजगूत संगठनक
अभाव।पर प्रदर्शकक हीनता आ हमर
कमजोरी सेहो छी।अंत: जाधरि सत्तारूढ़
कांग्रेस संस्था हमरा बीचक योग्य क्रियाशील
सदस्य कैँ प्रपत्रक(फार्म ए आ बी)दैत
,जीतेबाट परियास नहिं करथि वा हमरा ले
सुरक्षित क्षेत्र घोषित नँय करैथ,ताधरि हम
पिछरलके पिछरले रहैत जायब।
शैक्षणिक एवं सांस्कृतिक क्षेत्रमे समाज सँ
तिरस्कृत आ धार्मिक आचरण सँ हीन बालक
कतय धरि ओहि उच्चवर्गीय विद्यार्थी'क संग
प्रतिस्पर्धामे सफल भ' सकैछ? हँ! आधुनिक
उदार शासन-व्यवस्था'क कारणेँ किछु
सदस्यता अवश्ये प्राप्त भेल अछि।एहि दुवारे
किछ छात्र शिक्षा पाबय लांगल अछि।तकर
वादों स्नातकक संख्याँ औंगुरी पर गनय
जोकर य।
जौं सरकारी दिश सँ महाविद्यालय केर नि:
शुल्क शिक्षाक तरहेँ विद्यालयोमे नि: शुल्क
पढायके ओरियाउन होय आ पढयवाला
छात्रगणकैँ अनुदान भेटय,तखने ऐ दिशामे
प्रगति होयब संभव हेतैक।
३) कार्यकाल_ आब हम अपनेक धियान
महासभाके कार्यक्रम क' दिन मोरैत छी-:
आई सँ तीन शाल पहिले एहि महासभाक
तेरहवां अधिवेशन दरिभंगा जिला अन्तर्गत
झंझारपुर मेँ२८-२९-३० भी १९६१ मेँ
सम्पन्न भेल रहय।ओतय प्रान्तक
कोना-कोना सँ जातिक सदस्य ,,विद्वान एवं
अनन्य महानुभाव पधारलनि तथा
अनेकानेक महानुभाव अपन मधुर भाषण
सँ हमर खशलाहाके उपर स्तर उठेबाक
कोशिश कयलन्हि। अधिवेशन केर सुअवसर
पर छात्र सम्मैलन,जुबक सम्मेलन आओर
गायक सम्मैलन सेहो भेल रहय।ऐसी
अवसर पर निश्तुकि पौने छलहुँ जे एक
स्मृति-पत्र ल'के प्रतिनिधि मंडल राज्य
सरकार तथा कांग्रेस सभापति सँ भेंट करी।

से तहिना कयलो गेल ,परंच एंकर कोनू
तरहक फलाफल नँय भेटल।कईकठाम
कार्यकारिणी समितिक बैसार तथा
सार्वजानिक बैसार सेहो होईत रहल ।तकर
अलाबा जातिक अनेकों आपसी झगरा
झंझैट केर फैसला -मिलान कयल
गेल।महासभाक परियास सँ एकगोट महेश्वर
कैवर्त्त माध्यमिक विद्यालय अंधराठाढ़ी मेँ
१९४६ई० सँ चलि रहल छैक।जाहिमे सम्प्रति
..... आदेशपाल.**150**छात्र आ चारि
शिक्षक ओ एक अछि।एकटा आओर उच्च
माध्यमिक विद्यालय भूतपूर्व सभापति श्री
राजकुमार कामति जी केर सद्परियास सँ
सुनके ओतय किसान ऊच्चांगल
विद्यालय-बथनाहा 'क नाओं सँ चलि रहल
छैक।ओहिमे लगधक **15**बिगहा जमीन तथा
30हजार टाका हुनका परिवार दिशसँ देल
जा चुका छन्हि।आ **16** बिगहा जमीन
ओहिठामक जनता सेहो देलनि अछि।अर्थात्
कुल **31**बिगहा भूमि विद्यालय केँ
छैक।महासभाक परियास सँ सेहो उक्त
विद्यालय केँ हजारो टाका सँ उपर दान
भेटल छैक।

आय-व्यय-:

गत अधिवेशन केर कुल चन्दा **2205**टाकापौने
तेरह आना आयल आ **2318** टाका ||=- //आना
पाई सर्वांगीण समिति दिशसँ खर्च कयल
गेल।महासभा के उपर **112**टाका |||०||आना
करज चढि गेल।अधिवेशनक पश्चात आई तकमे
स्मृति पत्र,गत अधिवेशन क' प्रस्ताव पत्राचार
इत्यादिमे **108**टाका //_,=आना खर्च कयल
गेल।अर्थात् कुल रकम आई तारीख
24-5-1964ई०धरि **221**टाका |=✓||आनाक
देनदारी महासभाक जिम्मा रहल ह,ई टाका खुदे
हम महासभाक कार्यक्रम केँ आगू बढ़ेबाक
अभिप्राय सँ ऋण ल'केँ केलहुँ अछि।ऋणक
एकमात्र कारण हम काजकर्ताक लापरवाही कहल
जा सकैछ।

उपसंहार_"जौं-जौं औषधि कमल गेल रोगों बढैत
गेल।"अहानंक समक्ष बेकारी,बेगारी ,अशिक्षा
,बाल विवाह,अनमेल विवाह आदि अनेक लोग
पसरल चलैत रहल।तारा हटेबाक एकमात्र उपाय
अछि, शैक्षणिक कलाकेँ अपनायब,गरीब आ
मेधावी छात्र केँ उच्च शिक्षा दियेबाक लेल छात्र
कोष बनौनाई परम आवश्यक अछि।ताहि लेल
विभिन्न वर्ग सँ आगन्तुक महानुभाव सँ आ नव
युवावर्ग सँ हमर सादर अनुरोध रहत जै अहाँ व्रत
ल'केँ एतय सँ जाई,जाहि सँ उपरोक्त कष्ट केँ दुर
करैत हुअय चैन सँ बैस सकब।आब हम अपनेक
विशेष समय नहिँ लैत प्रार्थना करैत छी जे हमरा
सन अल्पज्ञ अजोग आ दीन-हीन व्यक्ति सँ
जे गलती हेबाक रहय से भेवे कयल।अतएव
अहाँ अपना हृदय में स्थान रतिभरि नहिँ
राखैत क्षमा प्रदान करैत हुअय अधिवेशन'क
प्रस्ताव केँ अमलमे अनबाक अनुकम्पा
करब। जय हिन्द!

जातिगत आकर्षण

बिहार'क प्राय: सब प्रतिष्ठित नेतागण यथा-: सच्चिदानन्द सिन्हा,डा० राजेन्द्र प्रसाद,सर गणेशदत्त,स्वामी सहजानंद, अनुग्रह नारायण सिन्हा, श्रीकृष्ण सिंह आदि अपन-अपन जातीय संगठन सँ जूड़ल छलाह। आजादी सँ पूर्वहि केवट महासभा १९११ मेँ बनल रहैक। १९३२ मेँ सम्मेलन सेहो सिंहेश्वर स्थानमे पुर्ण हेबाक चर्चा बुढपुरान लोक करैत रहथि।१९४१ ई०मेँ देवनाथपट्टी नौआबाखर गाममे अध्यक्ष झंझारपुर निवासी राम नारायण भंडारी आ महामंत्री मेँ पौनी निवासी महेश्वर लाल व्यास आ कोषाध्यक्ष खुशी लाल कामत जीक रिपोर्ताज पछिला दिन देने रही। आई १९४२मेँ जे अंधराठाढ़ी मेँ कमरकला निवासी रामरुप कामत ओही साल झिटकीमे सम्पन्न भेल कृषिवर्त कैवर्त प्रान्तीय महा सभाक किछ अंश देबाक चेष्टा करैत छी। एहिक सभापति रहथि अनन्त लाल कामत

घर-गरबा ।

लखीचंद कामत-उपसभापति -थुम्हा (सहरसा) नरेन्द्र प्रसाद वर्मा_परसा (दरभंगा) आब-मधुबनी राजकुमार कामत-बथनाहा, पो०-सिकटियाही उत्तम लाल विश्वास-चम्पानगर (पूर्णिया) रामजी प्रसाद कामत_परियाही(सहर्षा)

सरयू प्रसाद विश्वास-पोखराम पो०मुरहो-मधेपुरा

सत्य नारायण प्रसाद बसूली सिमरीया (सुपौल)

सुन्दर प्रसाद _चम्पारण

शिव नारायण भंडारी अरेड़(मधुबनी)

भागिरथ कामति- जरौली नरहिया

यदुनाथ प्रसाद बसुली

मौजे मंडल -कौआहा,कान्हरपट्टी

शिवशंकर व्यास-पौनी,बाथ

खूशहाल जी_गया

मोहन राम- डोरंडा-राँची

मीठू चौधरी-ठीकापूर,मूगेंर

भागवत कामत-पुरनिया

सीताराम कामत-तेनूआही कुमरखत

सत्यनारायण चौधरी-बिक्रमशेर,मौवाही

रामजी प्रसाद मंडल-गीदराही सहरसा

उपरोक्त आयोजक लोकनि आब दिवंगत जे भेल छथि,हुनका प्रति विनम्र श्रद्धांजलि अर्पित करैत छियैन हम।

१९४६मेँ शाहपुर (पण्डौल) मेँ लक्ष्मी नारायण भंडारी जीके अध्यक्षता मेँ महासभा भेल छन्हि।१९६४ मेए सभापति अनन्त लाल कामत आ महामंत्री आनन्द शरण जीके नेतृत्वमे झंझारपुर बजारमे महासभा सुसम्पन्न भेल छैक। ऐसी शाल सुपौलमे सेहो ओ दूनू गोटे महासभा आयोजन कयलन्हि।आखरि खेप १९८६मेँ जे महासभा सुपौलमे सम्पन्न भेल रहय , ताहीमे अध्यक्ष प्रो०रामदेव भंडारी आ महासचिव युगेश्वर मंडल एकगुट संघ तँ दोसर गुट सँ अध्यक्ष लेल रामजी मंडल शास्त्री आ महासचिव पद ले उदय कांत चौधरी - शाहपुर ठाढ भेला ; हंगामा भेल। फेर कहियो महासभा देखय केर वादक पिढिकेँ सिहंता लागले रहल अछि।ओना चकदह(मधुबनी) मेँ वेदव्यास युवा समिति क' बार्षिक सम्मेलन भेलाक वाद ओहो आईधरि सक्रिय नहिये रहल।ओहिमे सभगोटे पदधारी ३५ शाल सँ अधिक वयस के बुढजुबक रहथि।नव पिढिकेँ पुनः: दायित्व भेटबाक चाहिए छल।

पूबरिया इलाकामे जागरूक लोक समाजमे जागृति आनय ले बहुत पहिले सँ क्रियाशील छथि।

कैवर्त सुधार सभा तथा चौड़ासी मड़र सभा १९२६ मेए गठन भेलाक वाद जातीय पत्रिका "कैवर्त कौमुदी" केर प्रकाशन सम्पादक साहित्य रत्न अनुप लाल मंडल कयलन्हि आ १९३९ मेँ अपन उपन्यास "मीमांसा" केँ जाति सभामे वितरीत केलथि।ओहि हिन्दी पोथी पर किशोर शाहू जी बहुरानी "फिल्म" बनेलनि। १९७६ मेँ आबिकय जाती विमर्श लेल आ "कैवर्त नव निर्माण " पत्रिका निकालबाक लेल पटनामे बैसार कयल गेल ,आ जय नारायण मंडल जी अधिवक्ता श्री उदय कांत चौधरी जीकेँ सम्पादक बनौलनि। पहिल प्रकाशकमे तारा कांत कामत केर नाम छपल रहैक। १९७८ ई०मेँ १४ उपजातिक एकता ले डा०जयनारायण मंडल जीके अध्यक्षता मेँ जमघट बैसार भेलैक आ एक जाति निषाद लिखबैक लेल आम सहमति बनलैक। माहिष्य कैवर्त रुपौली विधानसभा क्षेत्रक पढल-लिखल लोकक घरमे एखनो देखमे अबैत छैक।

अ०भा०कैवर्त कल्याण समिति (रजि०) आई। वेदव्यास चेतना समिति (निवंधित) सँ जुरल सोजाति सँ आग्रह होयत जौं क्र०१ सँ अद्यतन महासभाक आयोजन तिथि स्थान आ अध्यक्ष ओ महामंत्री महोदयक जनतब द'सकी तँ हम अपन पोथीक एक पाठ बनयबामे समर्थ भ' सकब। सधन्यवाद।

मिथिला विभूति : खुशी लाल बाबू

बिहार प्रान्तके दरभंगा प्रमंडल अन्तर्गत मधुबनी जिलाक पूबारि छोरपर अवस्थित एक छोटेसन गाम अछि सरौती, जे घोघरडीहा प्रखंडके कोशी तटबंध'क पेटमे बसल छैक। ई सुपौल जिला सीमावर्ती क्षेत्र पुर्व विधान पार्षद परम आदरणीय कामेश्वर चौपाल जीक गाम कमरैल के पड़ोसमे सटल उत्तर भाग पड़ैछ। प्रसिद्ध सरौती गाम मधेपुर बजार सँ नरहिया बजार डिस्टीवोर्ड रोड नं० १०७ केर मध्य पड़ोसी गाम निघमा'क सटले दक्षिण कात छई। सरौती गामकेँ आब पंचायत'क दर्जा भेटल छैक। एहि पंचायतके पूरबमे अमही पंचायत आ पछिममे आदिवासी वाहुल्य बस्ती पचमनिया छै। निहमा गाममे हाथी राखैवला मरड़ परिबार सँ पटुआ सोनके कारोबार करय आयल नवानी विष्टौल लगक स्व० लक्षमण कामत जीक पूर्वज एतय अयलाह। सनय,चन्ना, चन्नी आ तोसा पटुआ सोन गोरैक (सराबैक) जगह लग सुखैत सोन किनलनि। संगहि जुटक जमीन गरहा - मैन सेहो धरि किन लेलाह। ओहि समेयमे अपभ्रंश बोलीमे सरौती बोलचाल कयल जाइत रहैक। कालान्तरमे रायसुमारी भेलासन्ता एतुका बसाबट केँ सर्बेगाम नाम पड़ल- सरौती,जतयके भ' के' रहि गेलाह केवट (केयट) परिवार। स्व० लक्षमण कामत जीक पुत्र नेवालाल कामत'क ५ अगस्त १९१९ ई०केँ प्रथम पुत्र खुशी बाबूक जनम भेलनि। ओई समय कियो जनैत छल जे ई बालक एतेक होशियार आ बुझनुक हेताह। बाल्यावस्थामे खुशी लाल बाबू केँ घरे पर महताप सिंह जी सँ खानगी शिक्षा भेटलनि। वादमे अपने गामक पुबरिया टोल शत्रुपट्टी केर हलीम मौलवी साहेब सँ हिन्दी, उर्दू आ अंग्रेजी 'क शिक्षा प्राप्त भेलनि। खुशी बाबू रतिगर धरि जागैत पढ़ैत रहथि। छात्र जीवनमे उषाकाल ३ वजे भोरे उठि उँच्च स्वरे उच्चारण जे करथि तँ लोक सुनिकेँ गामक बुढ़ पुरनियामै चर्चा'क हुलि पैस जाए। लोक अनुमान करय ई मानसिक अवसाद सँ ग्रसित तँ नहि भऽ गेलैक हन्। परंच किछुए दिनमे हुनक लगनशील अध्ययन बावत सबके सब जानि गेल। कोरेशन हाईस्कूल मधेपुर ऐ ईलाकाके एकमेव शिक्षण केन्द्र रहय,जतय सँ होस्टलर रहि नियमित पढाय करथि। प्रवेशिकोत्तीर्ण कय ओ बाहर वाराणसी हिंदू विश्वविद्यालय सँ इन्टर आ पटना कालेजक स्नातक छात्र कोना भेलाह,से बड़ रोचक प्रसंग अछि। खुशी लाल बाबू जी केँ पटना मेँ पढबाक उत्कंठा छलनि से अन्ततः शख पुर भेलनि। डॉ० सुभद्र झा नामांकन मे मियां जी लग टुसकेलनि आ कहलखिन गेटपर्दा लग आबि अपन बात हमरा समक्षे राखब।

ग्रेजुएशन केर आखरी खंडके परीक्षा सँ सोझहि ओ जिला परिषद क्षेत्र सँ चुनाव लड़ि जीत गेल रहथि। कांग्रेस संगठन सँ जुटैत ओ देश स्वाधीनता लेल लड़ायमे कूइद पड़लआह। हिनके एक रूमेट अपन

क्रान्तिकारी संगी सबके बजाकय जक्शन छात्रावासमे मंत्रणा करैत गेलाह जे काल्हिखन पटनाक सचिवालय पर तिरंगा ध्वजा फहराएके रहब। आओर झण्डा फहराबैक क्रममे सात व्यक्ति शहीद भ' गेलथि, जाहिमे एक सहरसा जिला 'क हुनक रुमेट सेहो भारत माता जय कहैत अपन प्राण त्यागने छथि। खुशी बाबू देश आजादिक वाद भेटय बाला स्वतंत्रता सेनानी पेंशन केर सहुलत नहि लैत लिखित घोषणा कय गृहमंत्री कैँ पत्र सँ सूचित कयलनि - हमर भारत देश कर्ज लऽकऽ विकास काज करैत य ,तैँ हम ओहिमे अपन ई राशि सहयोग बुझि देश के सँग ठाढ़ छी। एहन आर्थिक त्याग'क सद्भावना विरले मानवमे होईछ। १९३४ ई० के बिहार भुमकममे ओ राहत काज सेहो चलौलनि आ बढ़िचैढ़के अपना दिश सँ अपेक्षित योगदान केलनि। ओ ब्रिटिश जमानामे स्वजातीय पिछड़ापन दुर करय लेल जागरूकता अभियान 'क काजमे सेहो जुटल रहलाह। नेताजी सुभाषचंद्र बोस के परम मित्र केवट समाजक पहिल मैट्रिक पास पौनी निवासी स्व० महेश्वर लाल व्यासजी'क विचारे देवनाथपट्टी - नौआबाखर गाममे महासभा 'क आयोजन कयल। सामाजिक जागृति हेतु हिनका स्वजन सँ असीम भाईचारा आ विनम्र आहार व्यवहार रहलनि। केवट समाज केर पहिल एम.ए. प्रो० जगदीश नारायण चौधरी भुतपूर्व विधायक सँ स्नेहिल वार्ता होन्हि तँ घंटोभरि गप्प सरक्का होइते रहि जाए। कोसी विभिषिका संदर्भ मे गहन जनतब लेमय पर्यावरणविद् ई० दिनेश कुमार मिश्र जीके आगमन हिनका घर भेल रहनि, वाढ़ि विषय पर विशेष जनतब पाबै ले । गृहराज्य मंत्री जीक निजी सचिव स्व० कामेश्वर कामति (सीमरा) आ अति पिछड़ा वर्ग विमर्श लेल श्री रामबाबू चौधरी (राजनगर) ९० केर दशकमे हुनका ओतय अबैत रहथि। कोशी पीड़ित क्षेत्रके अनेको हस्तीगण समय - समय पर हिनका सँ गम्भीर विषय पर चर्चा करय अबैत रहैक। खुशी बाबू एक संत सौभावक खादीधारी वयोवृद्ध समाज सुधारक मानल जाइ छलाह। ओ धुनके पक्का समाजसेवी रहथि। सन् १९४१ सँ ४६ धरि जिला परिषद चुनावमे निर्वाचित घोषित होइतहि दरभंगा जिला परिषद के उपाध्यक्ष भेलाह आ मधुबनी सब-डिवीजन लोकल वोर्ड केर चेयरमैन पदके सुशोभित कयलनि। मुदा विशेष जश प्राप्तिक प्रश्नातो हटनी गामवासी पुकारू नाम लाल झा घोघरडीहा के राज मैनेजर भगवान बाबू सँ शिकायत क' देने रहनि जे रिलिफक साबुरदाना,मिश्री, मोमबत्ती आ बिलेती दूध वितरण मेँ तत्काल रोक लागलनि,फलत: दिव्यांग सरदारी मिश्र ओहिठाम सब वस्तुजात ओरियाकय राखल गेल। खुशी बाबू कैँ पर्दाक पांछा राखि जाँच निवारण हाकिम लालबाबू सँ सब हालसुरति सुनलनि आ एकाएक (पर्दाफाश) देखार करैत समक्षमे मुहाँमुँही कराओल तँ ओ लज्जित होईत चेअरमेन साहेब सँ माफी मँगैत गाम गेला आ भगवान कैँ भोग लगाबय ले सब सामान गाएब बताएल। ऐ प्रकरण केर बावत नैतिकता आधार पर अपन इस्तीफा देवाके पेशकश करैत देखि सभ सदस्य राजीनामा दै ले धर्मडिहा सिंहजी लग अध्यक्ष निवास ऐलाह आ कहलखिन कलक्टर साहेब कैँ विस्तृत प्रतिवेदन दियौन। तत्काल तँ खुशी बाबु मानि गेलाह मुदा दोहराकय फेर जिला परिषद चुनावमे

नहि उतलाह। १९५० ई०मेँ दत्ता साहेब खुश भएकय हुनका कुशेश्वर स्थान क्षेत्रक कोसी रिलीफ़ काजमे बतौर सप्लाई इन्स्पेक्टर पद केर दायित्व देलकनि। जलयात्रा ले बोट सेहो साधन मुहैया भेल रहनि। तमुरिया क्षेत्रक राहतकाज ले हिनका दोसर बेर प्रभारी बनाकय अपना इलाका पठाओल गेलाह। हिनक ईमानदारीक चर्चा मुख्यत: दुर-दुर धरि पसरल रहय। १९५४ ई०मे कोशी कल्याण -निरमली मे इन्स्पेक्टर पद पर कार्यरत भ' जखन ओ विभाग केँ पुनर्वास योजना रूपेँ परिवर्तित भेलासन्ता ओ स्वेच्छा सँ १९६६ मेँ नौकड़ी सँ त्याग पत्र दैत गाम आबि गेलाह। भोला उच्चांगल विद्यालय डेवढ केर प्रधानाध्यापक पर गमनके चार्य अयलापर ओ निगरानी समिति क ' हैसियत सँ सहायक शिक्षक पं० जगरनाथ मिशर (सुदै) केँ १९५५ ई० प्रधानाध्यापक केर प्रभार सौपेलनि। वादमे हुनका झंझारपुर लोकसभा चुनावमे कांग्रेस पार्टी सँ सांसद बनबाक अवसर भेटलनि। विधायक हरिनाथ मिश्र जहन बाढ़ सहाय्य मंत्री बनलाह तँ खुशी बाबू सँ राय मश्विरामे सहमति पाबि कोशी प्राधिकार लेल पहल भेल रहैक। तत्कालीन प्रधानमंत्री जवाहरलाल नेहरू जीकेँ नाम सं यात्रा क' दु:लीला तस्वीर देखौलनि ,संगहि कोशी तटबंध क' भीतर फँसल ३८८ राजस्व गामक लोकक कल्याण ले अनेको सुझाऊ बिहारी मंत्रीजी द्वारा पठौने रहथि। राजनीतिक पहुंच हुनक स्व० ललित नारायण मिश्र धरि लगीच छलनि। ओ हुनका फुलपरास विधानसभा क्षेत्र सँ परियासक बादो १९६२ आ १९६७ मेँ गाय बछरू छापक टिकट नहि दिया सकलनि,मुदा १९७२ मे कांग्रेस केर सिम्बल पर ३७ हजार सँ अधिक वोट आनि १४ हजार मत सँ संयुक्त सोशलिस्ट पार्टी के उत्तीम लाल यादव सं पछुयेबाक कल्पना धरि नहि कयने छलाह। ओहि बेर मुस्लिम समुदाय कांग्रेस सं बदैक गेल रहैक। परिवार नियोजन आ बंग्लादेश प्रकरण बेसी सुर्खीमे छलैक। ओ पटना दौड़धुप एम एल सी बनय खातीर सेहो करैत रहलाह। खुशी बाबूके रचनात्मक कार्य आ सामाजिक कार्यक संदर्भ मे एक पैग लेख लिखल जा सकैत छैक। ऐ विराट व्यक्तित्वक व्यक्तिक प्रति हम नमन करैत छी।

सरौती सपुत : खुशी बाबूक उपलवधि

कोनो एहन व्यक्ति नहिँ एहि धराधाममे जिनक कोनू इतिहास नहिँ होय। किनको कम तँ किनको बेसी ख्यायित। एहनेमे मोन पड़ैत छथि बाबू खुशी लाल कामत। हिनक जीवनी पाठकगण पढि अवश्ये अभिभूत भेल होयत। किछ विशेष जनतब संक्षेपमे राखि रहल छी। ओ वैष्णव छलाह आ प्रगतिवादी विचारधाक एक कोसी क्षेत्रिय स्तंभ रहथि। तेँ घोघरडीहा बाँध सँ दक्षिण आबय बला अनेक समाजशास्त्री, पर्यावरणविद् आ राजनेता सबसँ पहिले सरौती गाम आबि खुशी बाबू सँ भेंट करथि आ विमर्श। शिक्षाक अलख जगेबामे हुनकर छोट सतभाय नागे बाबू सेहो खूब यशस्वी भेलाह, मुदा ताहि पाछु हिनके हाथ रहनि। अपन गामक नवटोलिया (दक्षिण) मेँ प्रथमत: लूअर प्राइमरी स्कूल खोलबेलनि। जामुन गाछतर पठन-पाठन कार्य आरम्भ भेलैक। वादमे ओहि स्कूल केँ अपर प्राइमरी'क दर्जा सरकार सँ दियेलनि। ओहिमे शिक्षक पद पर ड्यौढ़ निबासी शिबाकान्त झा चटिया सभके पढ़ौनी करय। हुनका आ आरो अनेको लोकके ओ गुरूजीक सरकारी नौकड़ी धरेने रहथि। निघमा पंचायत केर तत्तकालीन मुखियाजी कमल नारायण यादव ग्राम पंचायत चुनावमे ओहि सरौती विद्यालयके बूथ दक्षिण सँ उत्तर अपना गाम निहमा आनय लेल तैयार भेल छलाह। विद्यालय केर आलय नहिँ रहला सँ ओ अपन गौशालामे मतदान केंद्रक उद्देश्य सँ जगह देने रहथि। कमल बाबूक आवेदनक जाँच डिप्टी अधिकारी केँ झक्खी सोभावक मास्टर साहेब बतेलकनि हम खुशी बाबूक नीजी बैलघरमे विद्यार्थीगणकेँ पढ़ाबैत आबि रहल छी। एहि जाँचक प्रतिवेदन अनुसारे बूथके स्थानान्तरण होएब निठाहे रहैक। तखन खुशी लाल बाबू घर सँ कनेकबे पुबभर अपन सात कठा अठारह धुर जमीन स्कूल लेल दान - पत्र लिखकय गामक बूथ कायम राखि गौआँक नाक बचेलनि। एतबे नहिँ मुजलिया कैम्प पर सँ अपन हिस्साक घर उठाकय विद्यालयके घर बनौलनि। जमीनक खाधिकेँ ग्रामीण जन सँ माइट धर्छन आ छिटा - कोदारि सँ भराएल गेलैक। ओहि बे्रक मुखिया जी पद पर चुनाव लेल गौंवारी बैठारमे काशी बाबूकेँ अपन पिताजी हजारी बाबूक जगह पर ठाढ़ हेबाक बात पक्की भेलैक। मुदा सुड़ियाही कामैत पर खुशीबाबू सँ आशिर्वाद लैत राजकुमार बाबु सोझे दरभंगा कालेज सँ घोघरडीहा आबि नवनेशन करैते गाम अयलाह आ निर्वाचित भेलाह। से दोसर बेरक चुनाव इन्जेकशन सुट लगला सँ रूकि गेलैक आ ३१ शालधरि लगातार हजारी बाबूक जेष्ठ पुत्र मुखिया बनल रहलैथ। खुशी बाबू अपन माय स्व० शंकरवती देवी नैहर पचगछिया आ धर्मपत्नी स्व० घुरनी देवी नैहर मुसहरनियाके निधन पर घाटबाट (कर्मकाण्ड) भोजभात क' जैकार करा देलनि। ओ आयुर्वेद चिकित्सा केर परम्परागत उपचार लेल स्वयं सर्टिफिकेट कोर्स करैत जीवन पर्यन्त

लोकक भलाय करैत रहलाह। किछ दवाई बाढ़िक समय वैद्यनाथ आ डावर कम्पनी'क सेहो राखैत राति विराति रोगी लेल बाँटथि। करनिनयां रातिके कारणीकेँ आगमन पर औषथिक पूर्जी लिखयमे नहिं असकताथि। काका कालेलकर आयोग केर संग अतिपिछड़ा वर्ग सुचिमे हिनके कहब पर केबट (कियोट) के पक्षमे तर्कसंगत आधार धरि बनि सकलै। हिनक साक्षात्कार वादे कर्पूरी ठाकुर जीक अभिक्रम रहनि तेँ खुशी बाबू सँ पुछिके जानिकेँ तखन ओ नाई समाजके दृष्टिकोण सँ समस्या मुजफ्फरपुर म उठेलथि। फुलपरास विधानसभा क्षेत्र सँ विधायक पदके उपचुनावमे (१९७८ ई०) जहन बिहार 'क मुख्यमंत्री मा० कर्पुरी ठाकुर जी उम्मीदवार रूपेँ अयलाह तँ कोशीवेल्टमे सरौतीक भुतपूर्व मुखिया हजारी बाबू ओहिठाम रात्रि प्रवासके रूटीन बनल। ताहि लेल हुनक हाथी पर नौआबाखर केर नदीमे नवनिर्मित चचेरी पुल लग सँ सभा कचहरी पर करैत ओ सरौती गेलथि। ओहाठाम खुशी बाबुके बजाकय स्व० ठाकुर जी कहलथिन - ऐ इलाकामे अपनेक रहैत सोझ सड़क आ सरकारी हाईस्कूल नहिं! एहि ले जगह -जगह पर व्यक्ति अपन - अपन सामुहिक माँग इयह दूनू समस्या क' समाधान ले नारा बुलन्दधरि कयने रहैक। तोरण द्वार आ मेहराउ लग खुशीलाले बाबु लोकके उत्प्रेरित कय मुस्तैद रखने छलाह। से सरौती गाममे सार्वजनिक हाईस्कूल आ सरौती सँ घोघरडीहा बजारधरि पक्की सड़क बनलै। प्रथमत: कोशीक्षेत्रीय आठ सर्कल केर आम जनता श्रमदान करैत मिट्टी कार्य कयलनि। एक जगह बिचलाखेत सँ डगर घीचैले भूमिक मालिक अर्चन ठाढ़ केलाह तँ खशीबाबू केँ हटनीक मनमोहन बाबुक छोटपुत्र श्री लखन झा जी अपन भगिनमानके बुझाबैत माँटिक बदला माँटि तेरह कठा जमीन साइकिल मिस्त्री केँ लिखदेलनि। ऐ काजकेँ सफल बनेबामे खुशीबाबू केँ लक्ष्मी कांत ज्योतखिजीक खुब साहचर्य भेटलनि। आइयो एहि २७ नम्बर टेढ़ सड़क पर चलैत एहिक निर्माणके संघर्ष पथिक मोन पाड़ैत छैक। कौमरैड जटाशंकर मिश्र जीके सँग अनेकों लालपाटीक लोक जे सरौती सँ घोघरडीहा तकके रोड लेल सब महिना उजराइतके समय अंचल कार्यालय केर घेराव करैत छलैक। तहिना सरौती हाईस्कूल खातिर इलाकाक लोक बाँस खर सहयोग करैत खुशीबाबू केँ आगुबढ़ि समर्थन दैन। ओ तिनू भाय ५.एकड़ जमीन आ पाँच हजार टाका दान देलथिन। एहि स्कूलके खड़ौआ लालदास हाईस्कूल केर सँगे कर्पुरी जी मंजूरी देलखिन। खुशी लाल बाबू अपन इलाकामे जल जमाव समस्या निदान लेल बुढ़ अवस्था धरि पटना दौड़धूप करैत रहलाह। कोशी तटबंध'क भीतर पड़री - मैनही सँ नौआबाखर होईत धावघाट आ विशनपुर धरि लगधक २० किलोमीटर पुब सँ सोझे पछिम मुहेँ धार बहैत छै। इयह विहूल बलान (भुतही) नदी नरहिया सँ चतराटोल सखुआ होइत छजना धरि पछिम सँ पुब मुहें जलधारा बहैत छै। ओना सोभाविक रुपेँ सब नदी मिथिलामे उत्तर सँ दछिन दिशन बहाऊ केने अछि। आपसी झंगरआ-झंझटि ऐ क्षेत्रमे जाहि कोनू विषय वाबत होय तँ पँच आ झमेलिया लोक हुनका लग कानूनन तर्कसंगत बात बुझय,एहन सलाह लेल आखिर वकीलके फीस देबय पढ़ैत- रहैछ। से एहन उपकारी व्यक्ति रहथि

सौभाग्यशाली खुशी बाबू। कहय चाहैत रही जे कोशी बाढ़िक वाद जे कुदरती परिवर्तन सँ इलाकाक अमही देवनाथपट्टी निघमा सरौती राजस्व मोजेक खेतीभुमिमे जलजमाव ९ मासधरि ठहराउ रहैछ ,जाहि कारणें रव्वि,खरीफ आ गरमा खाद्यान्न नहिं उपजैत छैक। तकर लघु सिंचाई विभाग सँ परसा अलोला सँ हड़री मौजा आ नौआबाखर अमही देवनाथपट्टी निघमा सरौती मोजेक जल अधिग्रहित क्षेत्र सँ निकासी लेल छोट नहरी बनेबाक सतत् प्रयास तत्कालीन मंत्री श्री मंगनीलाल मंडल जी सँ नक्शा ट्रेशींग आ आमजनता केर हस्ताक्षरित आवेदन दैत गुहार लगेलनि। संयोगवश एखनो जल संसाधन विभाग क' मंत्री अररियाक सोहनजी परिवार सँ मा० संजय झाजी छथि। मुदा विभागीय उदासीनता सँ आजादिक अमृत

मणिपद्म जीक शताब्दीक बाद

लोकगाथाके लोकभाषा मैथिलीमे स्थापित करबाक काज लेल डॉक्टर ब्रजकिशोर वर्मा ' मणिपद्म' कें सदैव स्मरण कएल जाइत रहत। उपन्यास कथा, कविता, निबन्ध साहित्य आदि विधाक माध्यमसँ आधुनिक मैथिली साहित्यमे ओ जे डांरि पारलैन । से कइयो मिलकपाथर माफिक अडिग भेल अछि। सरस आ आम लोकके मैथिली साहित्यक सरोकारसँ । यएह एकटा कारण रहलै जे केतेको शोध भेलाक बादो हुनकर सम्पूर्ण साहित्यक निचोर नहि निकैल पाउल अछि आ शोध प्रबन्धमे लागल शोधार्थी लेल चुनौती अक्षुण्ण छै। वर्तमान दरिभंगा जिलाक घनश्यामपुर प्रखण्डक बाउल ग्रामवासी डॉ. मणिपद्म जीके जीवन साहित्यकेँ समर्पित रहलैक । संगहि ओ सन् 1942 स्वाधिनता आन्दोलनके सेनानी सहित होम्योपैथिक चिकित्सक सेहो रहथि, तँए हुनका बहुमुखी प्रतिभा'क धनिक कहवामे कोनो अतिशयोक्ति नहि। 1973 इस्वीमे हुनका नयका बनिजारा' नोवेलपर साहित्य अकादमी पुरस्कार भेटलैन । ओ बौद्ध लामा सभ संगे चीन, जपान आ तिब्बत केर पठारमे मानव जीवनक अनसुलझल रहस्यक तलाश केलैन । मूलतः हिन्दी लेखक डॉ. मणिपद्म आ सूर्य नारायण चौधरी मैथिली भाषामे यात्रा वृत्तान्त' क रचना कए मैथिली साहित्य केर अक्षय भण्डार भरलैन । तइले हमरा नाज अछि। मैथिली साहित्य केँ समृद्ध करबामे हुनक अतुलनीय योगदान मानल जाइ छैन। हुनक रचना -: अनल पथ , विद्यापति , कोब्रागर्ल , कनकी , अर्ध्दनारीश्वर , लोरिक विजय, राजा सलहेस , लवहरि कुशहरि, राय रणपाल, फुटपाथ आ भारतीक बिलाड़ि (उपन्यास), कण्ठहार आ झुमकी (नाटक) , अनेक कथा ,संस्मरणात्मक आलेख आदि अछि। उपन्यास सँ पूर्व ऐ शिर्षक सँ ' नैका बनिजारा ' नामक कथा लिखने छलाह। जाहिक गल्प गुच्छ " मैथिली प्रतिनिधि पोथी " हम प्रवेशिका कक्षामे आदरणीय प्रभारी प्रधानाध्यापक स्व० सीताराम कामतजी - सरौती सँ पढ़ने रही। ओहि कथाक बीच-बीचमे नौ गोट पाँति सेहो खूब सोहनगर लागैत छल। ओहि समय के ई पाँति बाला १३ टा साहित्यकार'क सझिया पोथीमे दूनू बापुत स्व० हरिमोहन झा आ भाय साहेब अर्थात् राजमोहन झा'क कथा बढ मनलगू सेहो रहैक। नैका (नवका) बनिजारा सँ पाँति द्रष्टव्य -:

"रम्मा रौ,सुन्न भवनमे जेना एकटा दीप जरइ छैक ना।
रम्मा रौ , कमल नयन सँ जेना झर- झर ओस झरइ छैक ना।"
' रम्मा रौ! देह काँपइ पिपरक पात जकाँ ना
रम्मा रौ! मोन काँपइ पुरबा बसात जकाँ ना

लाल पलंग नैका बैसल रहए ना

धनि काँपइ माघ मासक प्रात जकाँ ना।'

रम्मा रौ..... नह सँ धरतीकेँ खोध' लगलैक ना

रम्मा रौ..... आँचर पकड़ि नैका बोधै लगलैक ना

रातिमे फुलल कमल फूल मने ना

चान सुरूज समतुल मने ना ।

रम्मा रौ ..... नैकाक मनमे पततीत भेलइ ना

छने छन अधिक पिरीत भेलइ ना

कि नैका आकाश ताकि झमान भेलइ ना

कि राति अहीमे बीत गेलइ ना ।

रम्मा रौ..... चान सन मुँह देखि तिलेसरी पजरइ ना

जहिना पुआरक धधरा होइ ना ।

धौलगिरि सन श्रृंग छइल ओकर उठल ना

पाथर - कुनन सन पीठ गठल ना

आध मोनक सोन घंटा गरदनि लटकल ना

आध कोश आगूए चलय लोक होटल ना .....

मैथिली भाषाक विख्यात साहित्यकार डॉ० मणीपद्म जीक सन्दर्भमे एक स्वयंसेवी संस्था प्रभात दास फाउण्डेशन आ मैथिली विभाग , ल० ना० मिथिला विश्वविद्यालय - दरभंगा एकटा सेमिनार आयोजित कय विर्हत् विमर्श कयल। ओ हिन्दी, बंग्ला आ अंग्रेजीक साहित्य गाथामे लोक देवता सभक साहित्य कैँ रखलनि। संगहि संस्कृत आ मैथिली साहित्यक लोक पुरुषक गाथाकैँ गम्भीरता पूर्वक अध्ययन केर खगौट पर जोर देलनि। ओ स्वंयमे एक महान कल्पनाशील आ शव्द शिल्पी व्यक्तित्वक धूमंतू लोक रह मैथिली भाषाक विख्यात साहित्यकार डॉ० मणीपद्म जीक सन्दर्भमे एक स्वयंसेवी संस्था प्रभात दास फाउण्डेशन आ मैथिली विभाग , ल० ना० मिथिला विश्वविद्यालय - दरभंगा एकटा सेमिनार आयोजित कय विर्हत् विमर्श कयल। ओ हिन्दी, बंग्ला आ अंग्रेजीक साहित्य गाथामे लोक देवता सभक साहित्य कैँ रखलनि। संगहि संस्कृत आ मैथिली साहित्यक लोक पुरुषक गाथाकैँ गम्भीरता पूर्वक अध्ययन केर खगौट पर जोर देलनि। ओ स्वंयमे एक महान कल्पनाशील आ शव्द शिल्पी व्यक्तित्वक धूमंतू लोक रहथि।अल्पायुमे हुनक देहावसान सँ साहित्य संसार मैँ भारी क्षति भेल य।थि।अल्पायुमे हुनक देहावसान सँ साहित्य संसार मैँ भारी क्षति भेल य।

एम एस यू केर हश्र - लेखक,श्री लालदेव कामत सन् २०१५ ई० मेँ दिल्ली स्थित कम्युनिस्ट खेमामे बड जोर-शोर सँ भीतरे भीतर एक चर्चा छलैक - एकटा छात्र संगठन मिथिला नाम पर हुअय। से किछ कामरेड लोक युवा वर्गमे एहि गप्प केँ पसारयमे लागि गेलाह। सँगहि इहो मनमे रोपलनि जे परिवार आ सरकुटुम मेँ सँ किछ नव पिढिक नेतृत्व विकसित करी। एहि संदर्भ ओतय सँ घोषणा पत्र जारी भेल, घोषणापत्र तँ प्राय: बराबरे निकलैत छैक। मिथिला स्टूडेंट यूनियन नाम सँ संगठन अनुप मैथिल, आदित्य मोहन,रौशन मैथिल आ नीतीश कर्ण आदि विद्यार्थीगण केँ ई संस्था चलेबाक दायित्व भेटलनि। ई छात्राक विशाल संगठनके रुपमे बिहार - झारखण्ड सँ उभैर समक्ष आयल। एहि छात्र संघ मेँ गैरछात्र जुबक लोक सेहो जुटल रहल। जखन कम्युनिस्ट केर छात्र फेडरेशन मिथिलामे कमजोर पड़ल तँ ऐ संगठनक कर्ताधर्ता लोकनिमे के बीच किछ सदस्यता बढ़ल आ थोड़ेक छीजनो भेल रहैक। एहि संगठनक उतरोतर विकास होइत गेल। कारण विद्यार्थीगणक शिक्षण समस्या सँ ल' केँ शिक्षा प्रणाली , रोजगार, मिथिला - मैथिल विषयके हर कालेज- यूनिवर्सिटी धरि चर्चाकेँ अभियान पूर्वक चलाओल जाइत रहलैक। आत्म गौरव बोध सेहो जन जन मेँ जगलैक। एहि संगठनक प्रभाव देख किछ भाजपाई सेहो अपन बाल बच्चाकेँ विद्यार्थी हैसियत सँ ऐ मुहिममे ढुकेलक। आब भीतरे भीतर छात्र - छात्राक बीच दू राजनीतिक दलक सिध्दांत सेहो पुनगैत नेतृत्व क्षमताक बले आने संस्था जेंका चन्दा बेहरी दिश उन्मुख होइत देखल गेल। कोनू संघ सोसायटी चलेबाक लेल तँ आर्थिक सहयोग चाहबे करी। एहूमे किछ छात्र प्रणीण भ' गेला जे सार्वजनिक हित ले चंदा चुटकी करैत अपन निजी लाभ बेशी कमेलनि। सबसँ पैघ उपलब्धि भेलैक जे पुरना जिल्द सँ अलख जगेबाक तथाकथित धन बटोरबाक काज ओरिया गेलनि। एहि प्रसादे निजी प्रसिद्ध आ नीक कन्वेन्ट स्कूल बिहारमे चलैत रहलैन अछि। मुदा ई सब अप्रत्यक्ष काज सुकार्यमे तखन आबि गेल जखन बड़का-बड़काके काजकेँ मिथिला स्टूडेंट्स यूनियन अपना हाथमे लेलक। दि०२१-८-२०२२ केँ पछिला साल संसद मार्ग मेँ जन्तर मन्तरमे एक दिवसीय महाधरणाक कार्यक्रम सफलता पूर्वक सम्पन्न कयल। एहन तरहक " पृथक मिथिला राज्य निर्माण" लेल आईधरि कोनू नव - पुरान समिति आयोजन नहिँ क' सकल छलैक। परोक्ष रूपेँ एहि गैर राजनीतिक संगठन केर नेतृत्वकर्ता गणमे सँ सक्रिय भाजपानुमा नेता बनय लेल तरे- तर जोर अजमाइश कय रहलैक अछि , से २०२४ केर लोकसभा आ ०२५ क' विधानसभा चुनाव मेँ आगू देखमे आओत। मिथिला स्टूडेंट यूनियन केर समस्त टीम केँ हार्दिक शुभकामना आ बधाय दैत छीयैन जे मिथिला'क अन्यान्य समस्याक समाधान लेल तैयार छथि। भाविपिढी छात्रक भाय आ परिजनके छियैन,ताहीमे सहायक होय लेल एहि तरहक संस्थाक उपयोगिता सराहनीय कहाओल जायत।

श्रद्धा सुमन अर्पित

राष्ट्रीय स्वंय सेवक संघ केर सम्मानीत सदस्य लाहौर (पाकिस्तान) धर्मपुरा इलाका निवासी हरदेव शर्मा जी अम्बाला कैंट छावनी, पंजाब आबि बसि गेलाह। हुनका २ फरबरि १९५२ कैं बेटी जन्म लेलकैन; जिनक नाम पड़लनि सुषमा शर्मा। बालपनमे शिक्षा दीक्षा नीक संस्कारमे हुअय लगलनि। कालेजमे ओ ७० के दशकमे अखिल भारतीय विद्यार्थी +919279892706 सँ ७० रहि बीए० अम्बाला एस डी कालेज सँ कयलीह। पंजाब विश्वविद्यालय सँ कानूनके डिग्रि लेलनि। जेपी० आंदोलन मैं सक्रिय रहि राजनीतिमे अयलीह। छात्र जीवन मैं ओ एनसीसी कैडरमे रहैत आर्मी मैं जाइ चाहैत रहय। परंच ओ १९७७ मैं हरियाणा सरकार मैं सबसँ कम उमेरक २५ वर्षीय कैवनेट मंत्री बनलीह। सारी परिधानमे भारतीय नारीक आभा खूब हिनका फबैत रहनि। स्वराज्य कौशलजी सँ हिनक वियाह भेलनि ,जाहि सँ बाँसुरी नामक बेटी भेल छन्हि। दिल्ली हाईकोर्ट आ सुप्रीम कोर्ट मैं बतौर वकील रहैत कुटनिति - राजनीति मैं प्रवीण सेहो रहथिन। तीन खेप विधायक बनलीह।२७ शालक वयक्रममे हरियाणा राज्य'क भाजपा प्रमुख भेलीह। सुषमा स्वराज आदर्श राजनेता , मिलनसार ओ मधुर व्यक्तित्वक धरि रहथि जे सात बेर सांसद बनलीह। हिनको भाषण बहुत आकर्षक आ हिन्दी क' प्रखर वक्ता रुपैं पहिचान बनल रहलनि। सामाजिक ओ आर्थिक प्रगति लेल सतत् महत्वपूर्ण लक्ष्य मानव केर न्यूनतम आवश्यकता पूर्ति लेल शांति प्रिय समाजक स्थापना पर बल दैत रहली। २००९ मैं भारतीय जनता पार्टी क' दिशन सँ संसदमे विपक्षक नेत्री बनली। १५वीं लोकसभामे ओजस्वी रुपैं बात रखैत रहलीह। भाजपा के १९ सदस्यीय चुनाव प्रचार समिति केर अध्यक्ष छलीह।विदिशा सँ सांसद चुनेलीह। आपातकाल समयमे हिनक तेवर प्रवल विरोधी रूपैं जगजियार भेल छलैक। १९८७ - ९० धरि शिक्षा मंत्री तकरवाद ९० मैं राज्यसभा मैं गेलीह आ वाजपेई जीके १३ दिनक केन्द्रीय सरकार मैं जगह पौलनि, सुचना प्रसारण मंत्री भेलीह। १२ वीं लोकसभा चुनाव दक्षिण दिल्ली सँ लोकसभाक सदस्य भेलीह। दूरसंचार विभाग केर सेहो अतिरिक्त मंत्रीक प्रभार रहनि। १९९८ मैं इस्तिफा दैत दिल्लीक मुख्यमंत्री बनलीह। १९९९ मैं कांग्रेस केर सोनिया गांधी क' विरूद्ध चूनावमे ठार भ' ३५८००० वोट बटोलीह आ दोसर स्थान पर रहलीह। चुनावी हार क' कारण रहैक मात्र १२ दिन प्रचार करबाक अवसर छलैक। २००० ई0 मैं फेर सँ राज्यसभा सदस्य चुनाल गेलीह। तखन लाल कृष्ण आडवाणी जीके जगह पर नेता प्रतिपक्ष रहलीह। २०१४ मैं मोदीजी सरकार मैं विदेश मंत्री रहैत स्नेह आ करूणाक प्रतिमूर्ति खूब सुयश अपना नामे अर्जीत कयलीह ।असमय कालके गालमे ६ अगस्त २०१९ केंश्रद्धा सुमन अर्पित

राष्ट्रीय स्वंय सेवक संघ केर सम्मानीत सदस्य लाहौर (पाकिस्तान) धर्मपुरा इलाका निवासी हरदेव शर्मा जी अम्बाला कैंट छावनी, पंजाब आबि बसि गेलाह। हुनका २ फरबरि १९५२ कें बेटी जन्म लेलकैन; जिनक नाम पड़लनि सुषमा शर्मा। बालपनमे शिक्षा दीक्षा नीक संस्कारमे हुअय लगलनि। कालेजमे ओ ७० के दशकमे अखिल भारतीय विद्यार्थी परिषद् सँ सम्वध्द रहि बीए० अम्बाला एस डी कालेज सँ कयलीह। पंजाब विश्वविद्यालय सँ कानूनके डिग्रि लेलनि। जेपी० आंदोलन मेँ सक्रिय रहि राजनीतिमे अयलीह। छात्र जीवन मेँ ओ एनसीसी कैडरमे रहैत आर्मी मेँ जाइ चाहैत रहय। परंच ओ १९७७ मेँ हरियाणा सरकार मेँ सबसँ कम उमेरक २५ वर्षीय कैवनेट मंत्री बनलीह। सारी परिधानमे भारतीय नारीक आभा खूब हिनका फबैत रहनि। स्वराज्य कौशलजी सँ हिनक वियाह भेलनि ,जाहि सँ बाँसुरी नामक बेटी भेल छन्हि। दिल्ली हाईकोर्ट आ सुप्रीम कोर्ट मेँ बतौर वकील रहैत कुटनिति - राजनीति मेँ प्रवीण सेहो रहथिन। तीन खेप विधायक बनलीह।२७ शालक वयक्रममे हरियाणा राज्य'क भाजपा प्रमुख भेलीह। सुषमा स्वराज आदर्श राजनेता , मिलनसार ओ मधुर व्यक्तित्वक धरि रहथि जे सात बेर सांसद बनलीह। हिनको भाषण बहुत आकर्षक आ हिन्दी क' प्रखर वक्ता रुपेँ पहिचान बनल रहलनि। सामाजिक ओ आर्थिक प्रगति लेल सतत् महत्वपूर्ण लक्ष्य मानव केर न्यूनतम आवश्यकता पूर्ति लेल शांति प्रिय समाजक स्थापना पर बल दैत रहली। २००९ मेँ भारतीय जनता पार्टी क' दिशन सँ संसदमे विपक्षक नेत्री बनली। १५वीं लोकसभामे ओजस्वी रुपेँ बात रखैत रहलीह। भाजपा के १९ सदस्यीय चुनाव प्रचार समिति केर अध्यक्ष छलीह।विदिशा सँ सांसद चुनेलीह। आपातकाल समयमे हिनक तेवर प्रवल विरोधी रूपेँ जगजियार भेल छलैक। १९८७ - ९० धरि शिक्षा मंत्री तकरवाद ९० मेँ राज्यसभा मेँ गेलीह आ वाजपेई जीके १३ दिनक केन्द्रीय सरकार मेँ जगह पौलनि, सुचना प्रसारण मंत्री भेलीह। १२ वीं लोकसभा चुनाव दक्षिण दिल्ली सँ लोकसभाक सदस्य केन्द्रीयभेलीह। दूरसंचार विभाग केर सेहो अतिरिक्त मंत्रीक प्रभार रहनि। १९९८ मेँ इस्तिफा दैत दिल्लीक मुख्यमंत्री बनलीह। १९९९ मेँ कांग्रेस केर सोनिया गांधी क' विरूद्ध चूनावमे ठार भ' ३५८००० वोट बटोलीह आ दोसर स्थान पर रहलीह। चुनावी हार क' कारण रहैक मात्र १२ दिन प्रचार करबाक अवसर छलैक। २००० ई0 मेँ फेर सँ राज्यसभा सदस्य चुनाल गेलीह। तखन लाल कृष्ण आडवाणी जीके जगह पर नेता प्रतिपक्ष रहलीह। २०१४ मेँ मोदीजी सरकार मेँ विदेश मंत्री रहैत स्नेह आ करूणाक प्रतिमूर्ति खूब सुयश अपना नामे अर्जीत कयलीह ।असमय कालके गालमे ६ अगस्त २०१९ कें एम्स दिल्लीमे रात्री ११.२३ मिनट पर आखरि सांश लेलनि। ओहि सँ एक दिन पूर्वहि जम्मू-कश्मीर सँ धारा ३७० हटाओल जा चुका छल।शत् शत् नमन्। एम्स दिल्लीमे रात्री ११.२३ मिनट पर आखरि सांश लेलनि। ओहि सँ एक दिन पूर्वहि जम्मू-कश्मीर सँ धारा ३७० हटाओल जा चुका छल।शत् शत् नमन्।

डा० राम भरोस कापड़ी "भ्रमर" : एक व्यक्तित्व

स्वनामधन्य ७१ वर्षीय बघचौरा गाम निवासी श्री रामभरोस कापड़ी एक व्यक्तियेटा नहिँ अपने आपमे एक संस्था सन लोक छथि। ई बहुआयामी प्रतिभा'क धनी साहित्यकार छथि। हिनक जन्म २००८ संवत् ,साउन मास तदनुसार ५ मई १९५१ कैँ नेपाल देशक धनुषा जिला केर गाउं पालिका वार्ड -४ बघचौरा नामक गाममे भेल छन्हि। वर्तमान मेँ ई रहय छथि उप नगरपालिका वार्ड १ शिवपथ जनकपुरधाममे,जतय ओ पाँच दशक सँ अहर्निश मैथिली साहित्य लेल सेवा करैत अयलाह अछि। हिनक दादा मिठू लाल पेसर मनोरथी क' पुत्री दाया रहनि आ पुत्र राम गुलाम व पुत्रवधू दुखनी देवी कैँ दू पुत्र क्रमश: सुकुमार आ रामभरोस एवं एक पुत्री सोनावती भेलनि। रामभरोस कापड़ी जीक किशोर अवस्था मे धनुषा जिलाक भगवानपट्टी गामक दलतीया देवी कैँ संग विवाह भेलनि,जाहि सँ तीन पुत्र क्रमश: राम नारायण कापड़ी- जनकपुर एक्सप्रेस क'सम्पादक आ राजनीति सँ सम्बन्ध , प्रदीप कापड़ी - नेपाल खाद्य संस्थान मेँ कार्यरत आ संदीप कापड़ी - उच्च कोटिक कम्प्यूटर ग्राफिक एक्सपर्ट , एवं दू विवाहित बेटी प्रमिला छन्हि। कापड़ी जीक साहित्यिक नाम 'भ्रमर ' शव्द चर्चित छन्हि। बालपनमे हिनक शिक्षा - दीक्षा गामेक एक गिरहस्त कन्हाई साहूक दलान पर मधुकरही निवासी गणेश लाल कर्ण जीक चटिसारमे शूरू भेलनि। हिनका ५०बिगहा जमीन जत्था आ जनकपुर टीशनक उत्तरवारि कात पक्का मकान रहनि, ततहि रहिकय सरस्वती हाई स्कूल सँ मैटरिक पास कयलाह। ओ त्रिभुवन विश्वविद्यालय काठमांडू के अन्तर्गत रामस्वरूप रामसागर बहुमुखी क्याम्पस सँ मैथिली विषय(पहिल बैच) मेँ एम ए,पी एच डि० (मानद) धरि कयने छथि। नेपालक मधेशक सरकार अपना प्रदेशमे मधेश प्रज्ञा प्रतिष्ठान'क गठन कय लम्वित ऐ योजनाके मंत्री परिषद सँ मंजूरी दैत हिनका संचालन समिति केर अध्यक्ष बनौलक हन्। साहित्य क्षेत्रमे हिनक ५०म् कृति मिथिला'क लोकजीवन; लोक संदर्भक किछ मास पूर्व जनकपुर धाममे विमोचन भेल छल। एहि सँ पूर्वहि ओ नेपाल सरकारक नियुक्तिमे साझा प्रकाशन अध्यक्ष आ नेपाल प्रज्ञा प्रतिष्ठानक परिषद् सदस्य भ' चुकल छथि।
भाषा समृध्दि लेल भ्रमरजी ओतुका मुख्यमंत्री लालबाबू राउत जीके ज्ञांपन दैत एक समय बुझौने रहथिन - स्थानीय किछु संघ , संस्था के उठल माँगपर सहानुभूति पूर्वक विचार कयल जाय। आब मधेश सरकार अपन प्रदेशमे मातृभाषा उत्थानक लेल एतुका संस्कृति, कला, नाट्य, संगीत, पुरातत्व अधिक

उत्थान हेतु काज आरंभ केलक। एहि विभाग क' विकासमे लागल, हेरायल , नुकाएल प्रतिभा सबके खोजिकय तकर संरक्षण , सम्बर्धनक संगहि ,सम्मान आ पुरस्कारक व्यवस्था ई प्रतिष्ठान करबे करत , पुस्तकाकार प्रकाशन सेहो । पूर्वमे रामभरोस जीकेँ नेपाल विद्या मैथिली भाषा साहित्य पारोतोषिक सेहो भेटल छन्हि। हिनका नामे आरो अनेक पुरस्कार भेटल छन्हि।

नेपाली आदि कवि बसकट्टा भानुक प्रथम कविता सँ प्रेरणा पाबि ओ बन्न कोठरी औनाईत धुआँ रचलनि। नेपाल' क पहिल 'क' श्रेणिक मैथिली भाषा मेँ "आंजुर - पत्रिका" केर विगत ३२ शाल सँ सम्पादन करैत आबि रहलाह अछि। जेबकट्टा गिरहकट्टा गरदनिकट्टा'क इतिहास कोना लिखू हम , श्रद्धांजलि रूपेँ - आजुक संदर्भमे भानुकेँ प्रति हिनक श्रद्धांजलि कविता पढैत पाठक निमग्न भ' जाईत छैक। हिनक दीर्घ कविता 'नहिँ आब नहिं ' पाठ्य करय योग्य पाठकके बुझाई छन्हि।कथा विधामे हिनक - तोरा संग जेबौ रे कुजबा केँ मैथिली अकादमी- पटना सँ १९८४ मेँ पुरस्कृत कयल गेल रहनि।गजल संग्रह- मोमक पघलैत अधर-१९८३,गीत गज़ल संग्रह अपन अनचिन्हार- कविता संग्रह १९९०,रानी चन्द्रवती ,नाटक - एकटा और बसंत , महिषासुर मुरादाबाद,अन्ततः कथा संग्रह, मैथिली संस्कृति बीच, रमाउंदा- सांस्कृतिक निवंध संग्रह नेपाली मेँ आ हिनक " नहिं आब नहिं" केर मैथिली अनुवाद भयो अब भयो, मनु ब्राजाकी द्वारा कयल गेलनि अछि। कविता - बिसरल - बिसरलसन, जनकपुर लोक चित्र (मिथिला पेंटिंग),लोक नाट्य : जट जटिन (अनुसंधान) छन्हि। हिनक सम्पादन कयल - मैथिली पद्य संग्रह,लाबाक धान कविता संग्रह-माथुरजीक " त्रिशुली" खंडकाव्य, मैथिली पत्रकारिता, मैथिली लोकनृत्य: भाव भंगिमा एवं स्वरूप - आलेख संग्रह बहुचर्चित भेल रहनि। हिनक प्रमुख पोथी :- युद्ध भुमिक एसगर योध्दा, हुगली उपर बहैत गंगा, डॉ ० प्रफुल्ल कुमार सिंह 'मौन' आ नवारम्भ प्रकाशन सँ बहराएल ' एन्टीवायरस पोथी , सुली पर ईजोत प्रकाशित छन्हि। मैथिल लोक-संस्कृति विविध आयाम- ने.प्र.प्र. आ मिथिलाक सपुत : राजा सलहेस - दीनाभद्री,अहाँ जे कहलहुँ,अन्हरियाक चान,लोक नायक सलहेस (द्वितीय खण्ड),समयको अन्तराल पहुचाउँदै, सीमा के आर- पार,चीन- जे हम देखल(यात्रा संस्मरण) केर जोरा नँय छैक।

हम सब मैथिली भाषी लोक राम भरोस कापड़ी भ्रमर जीके गीति रचना भिडियों एलबंम निम्नलिखित सुनि कीर्त कृत्य होइत छी। यथा -:

१. अहाँ आबि की छनकय हमर कंगना

२. आउ,आउ,आउ दिल खोलिकऽ आउ

३. प्रिय प्राणनाथ सादर प्रणाम यौ

४. मचल आई होरी हो

५. मनके भीतर दर्द भरल अछि

६. बहमुआ हो , करि दैहो नैहर कैँ विदाई

७. रूनझुन रुनझुन बाजे पैजनिया हो

८. पाबिने हमई जोरिया

९. राखी कैँ बन्धनमे भैया .....

राम भरोस कापड़ी पिछरल समाज मेँ शिर्ष साहित्य सेवी छथि। कोनू नौकड़ी स्कूल- कालेजमे नहिं केलनि। हिनक रचना संसार बोडरके दूनू पार खुब धूम मचेने छैक आ व्यापक समृध्दिक आचरण ग्रहण कयने छैक। कोनू पुस्तकालयमे एकठाम अध्येताके पढबाक हिनका मादे मातृभाषा अनुराग जानि सकबाक खगौट तँ अछिये।सवासय पोथीक संख्याँ पुरय से हार्दिक शुभकामना रहत।

जन्मदिन शताब्दी समारोह -पटना

कर्मयोगी पुरुष स्व० कैलाश पति मिश्र जी भाजपा के दधिचि आ भीष्म पितामह कहाबय योग्य कर्तव्यनिष्ठ महा मानव छलाह। औजके तिथि ५-१०-१९२३ कैँ हुनक जन्म बक्सर जिलाक एक छोटसन गाम दुधारचक मे एक साधारण परिवार मे भेल छलन्हि। जनसंघ सँ भारतीय जनता पार्टी धरि ओ कठिण परिश्रमी आओर कुशल संगठनकर्ता रूपेँ जानल जाइत रहलाह। हुनक ईमानदार छवि आ पार्टी कार्यकर्तागणक लेल कयल काज हरसमैत स्मरणीय रहत। भाजपाक प्रेरक स्तंभ श्रध्ये पं० दीनदयाल उपाध्याय आ श्यामा प्रसाद मुखर्जी केर विचारधारा पर चलि ओ संस्थापक सदस्य बनलथि। आई आकलन कयल जाइत अछि जे हुनक त्याग - तपस्या'क बलेँ भाजपा विश्वक सबसँ पैघ पार्टी 'क स्थान पौवने छैक। न्यायविद् दिवंगत कैलाश पति मिश्र जीके मार्गदर्शन मेँ बीजेपी नित नव कीर्तिमान गढ़लक। अविवाहित स्व० मिश्र जीक संक्षिप्त विवरण एहि तरहेँ मोन पड़ैत य -:

सन् १९४५-४६ ई०मे आरा क' प्रचारक भेलाह। १९५९ मे प्रदेश संगठन मंत्री बनल रहथि। १९७७-८८ बिक्रम विधानसभा क्षेत्र सँ विधायक बनि जननायक कर्पूरी ठाकुर जी द्वारा गठित बिहार सरकार म वित्त मंत्री रहलाह। १९८० मेँ भाजपाके पहिल प्रदेश अध्यक्ष आ पुनः १९८३-८७ धरि बिहार 'क प्रदेश अध्यक्ष छलाह। १९८४ - ९० के बीच राज्य सभा में सांसद रहथि। ताहिमध्य १९८८ सँ ९३ धरि भाजपा केर राष्ट्रीय मंत्री बनाओल गेलाह। फेर १९९३ - ९५ धरि प्रदेश भाजपाक अध्यक्ष रहैत धरातल पर काज करैत देखेलाह। आ १९९५ - २००३ भाजपा ० के राष्ट्रीय उपाध्यक्ष , राष्ट्रीय मंत्री पद पर रहैत संगठनक दायित्व बिहार, झारखंड, पश्चिम बंगाल, उड़ीसा, अंडमान - निकोबार केर काज दत्तचित्त भऽ कयलनि। ७ मई २००३ सँ ७ जुलाई २००४ तक गुजरात के संग-संग राजस्थान क' सेहो माननीय राज्यपाल बनल रहलाह। एहन यशस्वी व्यक्तित्वक दीर्घकालीन बेमारी सँ ८९ वरखक वयक्रममे शैनदिन दिनांक ०३-११-२०१२ कैँ निधन भेल छलन्हि। हुनका १९७४ केर छात्र आंदोलन'क क्रियाकलाप आ संघ सँ भाजपा धरिक काजक समर्पण लेल हरदम स्मरण कयल जाएत । शत् - शत् नमन!

- लाल देव कामत निवर्तमान प्रत्याशी फुलपरास विधानसभा क्षेत्र (२००५) एवं सोसल मीडिया प्रभारी (आई टी सेल)

सर्वश्री रासविहारी दासजी :एक विषय किर्त्तन ज्ञाता

मधुबनी जिलाक कोशीक्षेत्रक देवनथपट्टी गाममे कियोट कुलक बाबाजी कामत(मंडल) घर आई सँ करीब सयशाल पुर्व एक चंखार बालकक जन्म भेल रहनि।ओ नवजात शिशु रहय रासबिहारी जी। बाल्यकाल्यमे हुनकर माय गुजैर गेलीह तँ सरौती बाली(कुलाय चौधरीक बहिण) विमाता लालन -पालण केलकनि।हुनकर मातृक विशनपुर जि०सुपौल मेँ दू ममियौत भाय चतरी आ महादेव तथा बसुलीमे दू मसियौत भाय यदु एवं जोतीष रहथिन ।हिनक बाल विवाह सुरियाही जि०मधुबनी निवासी रामजी कामत जीक बेटी बरहनिया देवीक संग भेल रहनि।जाहि सँ हुनका तीन पुत्र आ तीन पुत्री भेलनि। जे क्रमश: चन्द्रकला (मुजियासी), त्यागी उर्फ रामनारायण,बैरागी, सुर्यकला (कुनौली), सत्येन्द्र आओर दुर्गेश (धावघाट) छन्हि।श्री दासजी रमौत वैष्णव रहथि आ गरीबीमे जीवन बितैत छलन्हि।ताहि समयमे कुम्हारक माटिक बासनमे सबकियो पाक आ भोजनलै बर्तन व्यवहार करथि।से बचपनमे ई कतेको घैल फोरि कनखा बाहर कय,ओहिमे कागत साटिके खजुरी बजबय लेल छारथि।ता गिन्न गिन्ना...धात् ता गीन.....सुपुट आबाज निकालथि।केराक थम सँ ढोलक आकार केर गरदैनमे लटका केँ डिमिक डिमिक डम डम्म....आ गपच्चि गपचि गम गम...खूब ताल बजाबैथ।कतौह गान बजान नेनामे देखथि तँ एकहाथ देवालेल कोनो धरानिये चकै के चकधुम ,चक्कै के चकधुम,मकई के बगीया ..... धरि बजाकय परा जाथि। से विवाह भेलासन्ता जे गाम सँ पड़ेलाह तँ धुन सीखैत(स्व०जगरनाथी कामत) गौआंके कलकत्तामे देखेलाह।ताधरि लोक हिनका मादें इयह बुझैक जे कतौह मरि- खैप गेल हेतैक। कोलकाता मेँ एक नामी रामलीला थियेटर कम्पनीमे ठेका बजेबाक काज मांगने रहथि,तँ मैनैजर साहेब जाँचमे अनारी मानि हटाबय चाहलक।हुनका सँ अनुनय विनय करैत चौंका केर काजक बहाने रहैत ,सब तरहक साज बाज बजौनाई सीख गेलाह।कतेको तरहक आधुनिक वाद्ययन्त्र केर मास्टर आ अभिनय कलामे पारंगत भेलाह।युवा भेलापर मारवाड़ी समाजके सहयोग सँ अपन खुदसर मण्डली बनौलनि।जखन मंडलीके बिहारक रूख करैत बंगाल सीमान सँ टपलाह आ कार्यक्रम प्रस्तुत करैत जे कैंचा पुष्कर जम्मा भेल छलनि से ५टा भोजपुरिया संगतिया ल'केँ राइतो राइत पार भ गेलैक।पोशाक आ पर्दा सेहो संगे ल'भागलनि।सात दिनधरि ओहि सोगे अन्न जल त्यागने छलाह।फेर सब घुमलैक कलकत्ता दिशन,ओतय फेर सँ मारवाड़ी समाज दिश सँ मंडली नीजी चलेबाक लेल आर्थिक मदैत लेलैन, भेटलनि।छोटछीन कार्यक्रम विषय कीर्त्तन मंडली बनाकय संचालित करयमे लागि गेलाह।धार्मिक

सांस्कृतिक जागरूकता लेल हुनका संग ढोलक बादक जीतन कामैत(अलोला) राम गुलाम यादव-झाईल (निघमा)गामेक मोहनजी सिंह हारमोनियम।वादमे भागीन बसुआरिक सोमन जी,गंगापुरक दुखी ठाकुरजी (कम्पाउण्डर)धरिसंग पुरैन।नेपालमे श्री लछमी बाबू क' (अलोला निवासी)गायन बजानमे ठकैता रहि ढोलक बजबैत अपना सँ दोबर उपर उछालि फेर लोकि ताल पकरेने रहथि रंगैली मेलामे। बहुतों शहरमे हिनक कार्यक्रम देखि पुरस्कार देल गेल छलन्हि।लखन शक्तिवाण खंड सुनैत एक प्रखर बुद्धिक लोक बाजल रहथि ई कहियो रामलीला अवश्य कयने हेताह।जाहि समयमे बिहार झारखंड एक राज्य रहैक आ १६टा जिला मात्रे रहैक, ओही समय दरभंगा जिला परिषद केर उपाध्यक्ष आ मधुबनी लोकल वोर्डक चेअरमैन बाबू खुशी लाल कामत हिनका संकिर्त्तन प्रतियोगितामे पुरस्कृत कयने छलनि। गाम देहात सँ लोक कैं एहेन गबैया जीके फेर सुनयमे दोसर नहिं उभरैक अछि,हुनकर दू घंटाक विषय किर्त्तन सुनैत देरी हमरा देहमे जेना अनुदैर्ध तरंग उठि जाय।हैरमुनियाँक मधुर आवाज कैंबन्द करै लै जैकोटक चेनक जिंझीर जकाँ खींच दैतथि।कोशी तटबंधक बरका बान्ह बनि गेलापर गाममे नाट्यकलाक आरम्भ कयलनि।तकर संचालन में जगह परक मंडील हिनक आश्रय स्थल बनल आ संरक्षण दैन स्व० बालगोविंद सिंह जी।हिनक रातिके सीखाओल रीहलसल कैं धारटपि हटनी सँ जुबक लोकनि टाटफारि देखैत वादमे दुर्गापूजा मैं प्रदर्शन करैत गेलैक।ओई सँ पूर्व हटनी भूतपूर्व अशेसर ललीत कामत पोखैर प्रांगण जे कोशीसँ कुदरती परिवर्तन भ' गेल रहैक,ततय मैनही गामक नाटककार लोकनिक साटापर प्रस्तुति होइत रहैक।गामक दूबेर सार्वजनिक काली पूजा देखकय अगहन १९९०ई०मैं एहि पवित्र धरा धाम सँ पर्यावरणीय रास बिहारी दास जीक महाप्रयाण गामहिमे भेलनि।एहि लघु आलेख में बहुत आंकड़ा वह तथ्य समा नहिँ सकल । श्रद्धा सुमन अर्पित करैत छियैन हम।ऊँ शांति!!

श्रमिक हितक उपाय होऊय

आआँधि पसारिकय देखू ते सकरीसँ निर्मली धरि आ झंझारपुर में लौकहा तक सभटा रेलवे माल गोदाम चौपट छैक। एहि छोटकी रेग लाइनक पुरान माल गोदाम परित्यक्त अछि, जकरा जीर्ण-शीर्ण अवस्था के सुधारबाक जगह तोड़बाक काज स गेल। निर्मली स्टेशन सै सरायगढ़ तक रेल अमान परिवर्तनक काज अर्थात् बड़का रेल लाईन आ कोशी महासेतुक दूनू भाग देर काज मन्दगति से श रहम छैक। कोशी रेलवे भीमनगर आ चतरा तक मालगोदामक की कहू जे रेल पटरीयों उखारि गेल छैक। फारबिसगंज से जीगबनी आओर ललितग्राम में कर्पूरीग्राम जतय जाऊ रेलवे मालगोदाम केर मजदूरक विस्थापन देख में आओत। रेलवे मार्ग कमतौल-सीतामढ़ी में दरभंगा आ कतेको जंक्शन पर मालगोदाम केर मजदूरक विपन्न स्थिति से सहृदय पाठक के कनेक दरेग तें अवश्ये हेतैन।

कोशी क्षेत्रक अधिकांश मजदूर रेलवे मालगोदाम में दैनिक श्रमिक रूप से लागल रहैत अछि। आजादीक पूर्व जे हालत एहि में लागल मजदूरक छल, वैह परिस्थिति आई आजादीक 66 साल बादों छैक। एहि मजदूरक बाल-बच्चा बेसीरास अनपढ़ अछि। खुबबेशी परिश्रम कयलाक कारण आ स्वच्छता सेवाक सुविधाक अभावक वजह से है श्रमिक वर्ग अस्वस्थ रहैत अछि। एकरा लेल चिकित्साक समुचित औरियाओन नहि छैक। परतन्त्रताक समय अंग्रेज जे व्यवस्था एकरा लूटय-शोषण करैक लेल केने रहेक, सैह इंतजाम आइयो स्वतन्त्र भारत मे रेलवे मालगोदाम श्रमिकजन पर लागू छैक। असंगठित श्रमिक अपन बहुमूल्य योगदान कए देश आ रेलक सर्वांगीण विकास में अहम भूमिका निमाहैत अछि; तकरा बादो रेलवे मालगोदाम श्रमिक केर बेबसी-लाचारी, भूख-अभाव. अशिक्षा आ दरिद्रताक जिनगी जीये परैत अछि। अपन स्वराज भेलाक 66 वर्षक बादो एकरा संग एना कियाक भ रहल छैक ?

एकटा सर्वेक्षणक मोताबिक रेलवेक सवर्स नमहर आमदनीक हिस्सा 100 पाई में 63 पाई माल भाड़ा से अबैत छैक। नित्यदिन 1200 मालगाड़ीक द्वारा 25 लाखटन माल गन्तव्य स्थान पर देशक कोना-कोना में पठावल जाइत छैक। एहि मादे मालगोदाम जन 25 लाखटन मटेरियल के लोड-अनलोड कए रेलवेक लाभ (मुनाफा) में बढ़ोतरीक कार्य कए रहल छैथ।

श्रम मन्त्रालय दिशसँ हरेक बोरा माल के रेल बोगी में उतारिकए ट्रक पर चढ़ेबाक मजदूरी 5.70 पैसा तय भेल छै, सेहो आई नहिं, 2003 वर्ष में देश के लगभग 6 लाख 85 हजार रेलवे मालगोदाम श्रमिक

भाय बन्धु, माय बहिनक जत्था के तथाकथित ठिकेदार वर्ग आर्थिक शोषण कए तैय मजुरी नहिं दै छैक। इहोबात बुझबा में ऑगठ नहिं जे एकटा मजदुर औसतन दिन भरि में 500 सें 600 बोरी माल उतारत आ चढ़ाबैत छैक, जकर मेहनताना एक मास में जौड़िकए लगभग 80,000 से 1,02,600 टाका होयत छैक। परच हमरा लोकनिक रेल बोनिहार के न्याय नहिं देलक अछि। मजदुर के रेलवे चतुर्थ वर्गीय कर्मचारीक बरोबरी 15,000 से 20,000 टाका मासिक दरमाहा दय कय एकटा मजदूर सें रेलवे के शेष राशि 60,000 से 80,000 रुपया तक मुनाफा हरेक मास होयत जे कि चन्द्र नीहित स्वार्थी आ असमाजिक तत्व के लाभ जाइत छैक। एहि में ब्रिटिश हुकूमत काल में जे ठिकेदारी प्रथा चलि आबि रहल छैक, ताहिसं त्राण दियेवाक काज लोककल्याणकारी केन्द्र सरकारक पहिल प्राथमिकता हेबाक चाहि। जैना कि भारत सरकार पूर्व मे खाद्य निगम आ फिल्ड कोयला खदानक श्रमिक के नियमित करबाक काज भेल। इहो स्मरणीय अछि जे स्वयं रेल मन्त्रालय सेहो गैंगमैन, पार्सल पोर्टर, सफाई कर्मचारी, टी.पी.टी. गड़हारा, मालगोदामक श्रमिक आओर कुली सभ के चतुर्थ वर्गीय कर्मचारी रुप में समायोजित केलक अछि।

एहि तरहक माँग के लके पछिला दू दशक से रेलवे मालगोदाम श्रमिक संघक बैनर तर प्रमुख समाजसेवी अरुण कुमार पासवान, एल. बी. सिंह, मनोरंजन बाबू, दिगम्बर प्र० मेहता जी आदि संघर्षशील पदाधिकारीगण के कुशल नेतृत्व आ जागरुक श्रमिक सतत् प्रयास में एकटा संगठित प्रयासे जनउभार भेल अछि, जाहि में सब जोन में ग्रुप डी0 आ रेलवे बोर्ड में ग्रुप सौ० के लेल सब्सिच्युटाक रुप में समायोजित कए मजदूर के स्थायी करावल जाय तें जनहित में एकटा चिरप्रतीक्षित आंकाक्षाक पूर्ति भ जायत। एहि महासंघक राष्ट्रीय महामन्त्री आ अध्यक्ष महोदय एकटा अपीलक जरिये सामाजिक-धार्मिक आ आध्यात्मिक संगठन आ राजनीतिक दल में शामील देशभक्त एवम् इमानदार लोक सॅ केलक अछि, समस्याक समाधान होयबाक चाही।

निश्चय रेल लाइनक अमान परिवर्तन नहि होयबाक कारण परित्यक्त मालगोदामक मजदूर वा तकर आश्वित के सही है लाभ भेटए से हमर अपेक्षा अछि।

प्रसिद्ध साहित्यकार स्व०फणिश्वर नाथ रेणु जीक मादै(पून्यतिथि १० अप्रैल)

अररिया जिलाक औराही गाममे ४ मार्च १९२१ कैं पानो देवी आ शिलानाथ जीक घर रेणु केर जन्म भेल छलन्हि।बाल अवस्थामे बिराटनगर मैं शिक्षा-दिछा प्राप्त करैत १९५० मैं नेपालक राणाशाहीक दमन आ अत्याचारक विरुद्ध जनताके मुक्ति दियेबाक लेल ओतुका सशक्त क्रान्तिमे भाग लेलनि। ओ भारतमे स्वतन्त्रता-संग्रामक १९४२ कैं अग्रणी भूमिका निर्वाह कयनिहारमे सँ एक रहथि। सामाजिक कार्यकर्ता'क नाते शोसलिस्ट खेमामे रहलाह आ राजनीतिक दल रुप सँ विधायक पद लेल आमचुनाव सेहो लड़लथि। हुनकर जीवन हिंदी साहित्य साधनामे बेशीकाल बितलैन। पटनाक कॉफी हाउस तँ नियमित बैसारक केन्द्र बनल रहलैक,ओही समय दीनमानक पत्रकार सूर्यना० चौधरीजी सँ सेहो मित्रवत छलाह। हुनकर उपन्यास पर हिन्दी फिल्म सहो बनल आ काफी चर्चित भेलैक। १९५४ मैं प्रकाशित "मैला आंचल" उपन्यास सँ आंचलिक पहिल उपन्यासकार रुपमे प्रतिष्ठा भेटलैन। आजादीक बाद सत्ताक दमनचक्र केर विरोधमे "पद्मश्री"उपाधि लौटेलनि आ जहल यात्राधरि कयलनि।हुनकर पंचलाईट कथा हम मैथिलीमे अनुवाद कयल।

"पार्टी का भुत" शिर्षक कहानीक पात्रमे नर्स शुशिक्षिता प्रियदर्शिनी (छद्म नाम) बंगालिन सँ अंतरंग परीचय बढलैन आ ई हुनकर गोदना देखतहिं सरनेम एम०माने मिश्र बुझलैन,मंडल नहिं; तैं तेसर जीवन संगनी बनि गेलीह। कलम केर जादुगर रुपे मुंशी प्रेमचंद'क बाद ई दोसर कथाकार भेलाह जे अपन अद्भुद लेखनी सँ पाठकक बीच जमल रहलाह। हुनकर पुण्य तिथि पर विशेष नमन।

तेसरो शपथ अर्थात् मारल गेल गुलफाम

_मूल कथाकार, फणीश्वरनाथ रेणु तिसरी कसम केर हमर मैथिली भाषा अनुवाद पढल जाय-:

हिरामन बहलमानक' पीठमे गुदगुदी लगैत छैक।...

पछिला बीश साल सँ गाड़ी हाँकैक छैक हिरामन।बरदगाड़ी।सीमानक ओहिपार ,मोरंग राज नेपाल सँ धान आ काठ उघि चुकल अछि।कण्टोलक जमाना मैं चोरबजारिक माल एहिपार सँ ओई पार पहुँचेने छैक।परंच कहियो तँ एहन गुदगुदी नहिँ लागलैक पीठमे!.....

कोटाक जमाना! हिरामन कहियो बिसरि नहिँ सकैत छैक ओई जमाना कैं।एकबेर चारिखेप सीमैट आ वस्त्रक गठरी सँ भरल गाड़ी , जोगबनी सँ बिनाठनगर पुँगेलाक वाद हिरामन केर कोढ़ पाटिल करेजा गहींर भ'गेल रहैक।फोरविशगंजक सबटा चोर वेपारी ओकरा पक्किया गाड़ीमान मानय।ओकरा बरदक। बड़ाय पैघ गद्दीक बड़का सेठजी खुदे करैत,अपना भाषा मैं,..l

गाड़ी पकरल गेल पाँचम खेप,लोडर केर के पार तराईमे।महाजनक ' मन्शी ओकरे गाड़ी पर गांठक बीच चुक्की माली मारिकय बैसल नुकाएल छल।दरोगा सेहाबक डेरहाथक' चोरवत्तीक इजोत ततेक ने प्रखर होईछ,से हिरामन जनैत छैक।घंटा भरिक लेल लोक आन्हर भ' जाईछ एकोरती चोन्हि पढ़िए जाय आँखि पर!ईजोतक संगे कर्कश हल्ला-"ऐँ-य!गाड़ी रोक! सार,गोली मारि देबौ!.." बीशोटा गाड़ी एकसंग थसथसाकय थम्हि गेलैक।हिरामन तँ पहिलो कहने छलै"ई बीश बिषायत!" दरोगा साहेब ओकरा गाड़ीमे छुपकल मन्शीजी प ईजोत दैत पिशाची होंसी होंसल-" हा-हा-हा!मन्शीजी ई-ई ई!ही-ही-ही! ऐ -य,सार बहलवान, मुँह की तकैत छेँ रें-ए-ए!कम्मर हटा ऐ बोराके मुँहना पर सँ !"हाथक छोटकी लाठी सँ मन्शीजीक धोधिमे कुबियबैतकहने छलैक," ऐ बोरा सबके! स-सार!.....",बड पुरना आंखें झझमट हेतैक दरोगा सेहाएब आ मन्शी जी मेँ। नहिं तँ ओतेक टाका गच्छैत अछैतो पुलिस दरोगा क' मोन नै मानय कतौह! चारि हजार तँ गाड़ियों पर बैसले-बैसल द' रहल छैक।पेना सँ दोसर खेप हुरकि हुराठलक दरोगा।"पाँच हजार!" फेर खींचलक_"उत्तैर जो पहिले!---"

मन्शीकेँ गाड़ी सँ नीचा उतारि केँ दरोगा ओकरा आँखिपर ईजोत ध' देवकी।फेर दू सिपाहिक संग डगर सँ बीश-पच्चीस डोरी दुर गाछ लग ल' गेल।गाड़िक बहलमान आ गाछो पर पाँच-पाँचटा बन्दूक बाला सिपाही सभक पहरा! हिरामन बुझि गेल,एहि बेर कोनू चारा नँय। .....जहल? हिरामन केँ जहलक डर नहिँ।परंच ओकर बर्थ? जानि नै जानी कतेक दिन धरि बिनु चारा पानिक सरकारी फाटकमे साधल रहत -भुखल पितांबर।फेर लिलामो भ'जायत।माय आ भाउज केँ ओ मुँह नहिँ देखा पाउत कहियो।.....विधायक बोली ओकरा कानों लग अनुगूँज भेल_एक-दू-तीन!दरोगा आ मन्शीमे बात पैंट नँय रहलैक भरिसक।

हिरामन गाड़ी लग करेकमान सिपाही अपना भाषामे दोसर सिपाही सँ नहूँये स्वरमे पुत्रक," का हो? मामला गोल होखि का?" फेर खैनी -तमाकूल दैके लाथे ओई सिपाहिये लग चलि गेल।....

एक-दू-तीन! तीन चारि गाड़ियां अढ़।हिरामन फैसला कय लेलक,ओ चुप्पै सँ अपना बरदक डोरी खोईल लेलक। गाड़ी पर फैसले बैसल दूनूके गलजोइर बान्हि देवकी।हरदोई बुद्धि गेल जे ओकरा की करबाक छैक।हिरामन उतरि ,जुअल गाड़ीमे बाँसक सिरपाहि लगाकय बरदक कान्ह बेलागि कयल। दूनूके कान लगा कुर्सियां देलक आ मोने मन बाजल, ' चलह भैयारी ,जान बँचतै तँ एहेन -एहेन सोहनगर गाड़ी बहुते भेटतै।' .....,एक-दू-तीन! न_दू-एगारह!.....गाड़ी लगाइत रस्ताक काते-काते घोनगर झौआ पसरल लागल छलैक।दम साधिकय मीनू जान झोंझि पार केलक-पैर मारिकय,बेखटक। फेर एकले-दूले -दुलकी चालि! दूनू बरद छाति तानिके फेर तरायके घनघोर वनमे डुकि गेल ।पेड़ा सुँघैत,धार-पनिबह पार करैत हुअय परायल नाँगैर उठाकय।पाछू-पाछू हिरामन।भरिराति पराईते रहल छल तिनू जन।.....

घर जुमिके दू दिन धरि अशोथकित पड़ल रहल हिरामन।होशगर होइते ओ कान पकैड़ कय किरिया खयने छलै- आब फेर कहियो एहन जीनिशक लदनी नहिँ लाधत।चोर बजारक माल?
छिया,छिया!.....जानि नै मुंशीजी कैँ की भेलैक! भगवान जानथि ओकर शोधल गाड़िक की भेल! असली इस्पात लोहाक धुरी रहय।दूनू चक्का तँ नहिं,एक पहिया एकदम सँ लबे छलैक।गाड़िमे रंगल डोरीक फुंदना बड जतन सँ बिनल गेल छलैक।दू शपथ खेयने अछि ओ ।एक चोरबजारिक मार नँय उघहब ।दोसर,बाँस।अपना सब गहिकी सँ उ पहिले पुछारि कय लैत अछि_ चोरीचमारिक चीजबौस्त तँ नहिँ छह? आओर, बाँस?बाँस लाधै ले पचासो टाका दिय कियो,हिरामन केर गाड़ी नँय भेटत।अनकर गाड़ी देखौ ग।बाँस रावल गाड़ी सँ चारि हाथ आगू बाँसक छीपी बहरायल रहैत छैक आ पांचू भाग चारि हाथ जैराठी।काबू के अलगटे रहैत य गाड़ी हरसमेत।से बेकाबुबाली लदनी आ खरैहिया।शहरवाली बात। ताही पर बाँसक अगुआ पकैरकय चलयवाला जोन महाअनारी नौकर ,बालिका विद्यालय दिश देकर लगलैक।बस,मोड़पर घोरागाड़ी सँ टकरा गेलैक।जावत् हिरामन बरदक पगहा राइस घीचै,तावत् धरि टमटम केर छतरी बाँसक मुरैठमे पैस गेल।टमटमके सहीश तरातड़ जुआली सँ मारैत गाइड़ो देने छलैक!.....

बाँसेक लदनी नहिं,हिरामन खरैहिया शहरके लदनियो छोरिये देलक।आ जहन फोरवीशगंज सँ मोरंग केर भाड़ा उठेनाइ शुरूहो कयल तँ गाड़ियों पार!....कतेको साल धरि हिरामन बरद कैँ अधिया पर जोतलक।अदहाअधि भाड़ा गाड़ीवलाकैँ आ अधहा बरदवालाक।हम! बहलमानी करू मोफत! अधिया कमाय सँ बरदोक पेट नहिँ भरत।पछिले शाल उ अपन गाड़ी बनबौलक हन्।

देवी माय भला करौ ओही सरकश कम्पनीक बाघ कैँ।पछिला साल एहि मेलामेँ बाघगाड़ी कैँ घीचैबाला दूनू घोड़ा मरि गेलै।चम्पानगर सँ फारवीशगंज मेला अबैत काल सरकश कम्पनीक ' मैनेजर गाड़ीवान अड्डा मेँ एलान क' कहल-" सय टाका किराया भेटतह!" एक - दू बहलमान रैज लेलकै।परंच, ओकर बरद बाघ गाड़ी सँ दस हाथ दुरे डर सँ डिरिया लगलै- बाँ-आँ!डोरी तोड़िकय परायल।हिरामन अपना बरदक पीठ पोछैत कहलक, " देख भैयन,एहन मोका फेर हाथ नै लगतौ। इयह मोका य अपन गाड़ीताँगा बनेबाक।नहिँ तँ फेर अधिया.....l हेरौ ,पिजरामेबोन बाघक डर केहेन? मोरंग केर तरायमे दहारैत हुअय बाघके तँ देखनै छी।फेर पीठे पर हमहूँ तँ छीहे।.....,."
बहलमानो सब मेरियाक थोपरी पड़ल एक संग।सबहक पईत राखि लेलक हीरामन केर बरद।हुमचिके आगू बढि गेल आ बाघगाड़ीमे जुए गेल एक-एक कएके। खाली दहिन बरिया बरद जुँलाक तुरत बढ़ गोतलक।हीरामन दू दिनधरि नाक परहक वस्त्रक पट्टी (मास्क) नहिँ खोललनि।बड़का गद्दीक बरका सेठजी जहाँति नकबन्धन लगेने बिनु मोंहक बर्दास नहिं कय सकैछ कियो।..,.....

बाघ गाड़िक सवारी कय चुकल छैक हिरामन। कहियो एहन गुदगुदी नँय लगलैक पीठमे।आई रहि-रहिकय ओकरा गाड़ीमे चम्पाक फूल गमैक उठै छैक।पीठमे गुदगुदी लगलापर ओ गमछा सँ पीठ झारि लैत अछि।

हिरामन कैं लगैत छैक,दू शाल सँ चम्पानगर मेलाक भगवती मैया ओकरा पर सहाय छथिन।पछिला शाल बाघगाड़ी सटि गेलैक।नगदी सय टाका भाराक अतिरिक्त बुतात ,चाह-बिसकुट आ भरि रस्ता बानर- भौल आ जोकरक तमाशा देखल से फोकट मेँ।

आओर एहि खेप ई जनाना सवारी।जनीजात छी वा चमृपाक फूल! तखने सँ गाड़ी मह-मह गमैक रहल छैक।

कच्ची सरकक एक छोटछीन सन खाधिमे गाड़ीक दहिनवरिया पहिया बेमौका गच्चा खा गेल।हिरामन केर गाड़ी सँ एकटा कनिये 'सिसकी' अवाज बहराएल।हिरामैन दहिनवरिया बरदकेँ जुआली सँ मारैत बाजल , "सार !की बुझै छिही ,बोरा केर लदनी छियै की?"

"हाँ-हाँ!मारियौ नहिं!"

अनचिन्हारि स्त्रीक बाजब तँ हिरामन कैं अचरजमे धकेल देलक।बचपनाक बोली- एहन पातर बोली ,रेडिक बोली!

मथुरामोहन नौटंकी कम्पनीमे लैला बनयबाली हीरा बायक नाँह के नै सुनने हैत कहूँ!परंच हीरामन केर बात अजबे अछि।ओ सात बरीश धरि एकतारे मेलाक लदनी लाधलनि अछि,कहियो नौटंकी थियेटर वा बायस्कोप सीलेमा नहिँ देखलनि। लयला वा हीरावायके नाओंधरि ओ नँय सुनलक कहियो।देखैके की गप्प! से मेला टुटलाक पनरह दिन पहिले अधरतिया कैं कारी ओढनिये झांपल जनिजातके देखकय ओकरा मोनमे खटका अवश्ये लागल रहैक।बक्सा उघैबाला नोकर तँ गाड़ी भारा सटा तय करैत काल मोल -मोलाय करबाक परियास करय ,तँ ओढनीबाली मुड़ी हिलबैत मनाही क' देलकै !

कथाकार अशोक मादे

- लाल देव कामत

मैथिली साहित्याकाशमे एकटा पैघ नाम उभैर आयल अछि कथाकार अशोक। नामेगुण अर्थ लागैत य ,जतय नै कोनू तरहक रहैछ शोक। से एकटा बूजूर्ग असाधारण व्यक्तित्वक अशोक कुमार झा,जिनक मधुबनी जिला आ दरिभंगा जिलाक मिलन स्थान प्रसिद्ध लोहना गाममे 18 जनवरी 1953 ई0 मेँ जन्म भेल छन्हि। 50 सँ अधिक कथा लिखनहार मिथिला मेँ अनेको रचनाकार भेल छथि। परँच नाम सँ पहिले कथाकार रूपेँ ख्याति हिनकेटा भेटलनि अछि। मैथिली साहित्य आन्दोलन मेँ जतेक जानल - पहचानल आ मानल कथाकार भेलाह अछि, ताहिमे सबसँ पहिले ओ लोकनि कविता गढलनि ; पछाति कथा दिसन उन्मुख भेल छथि। सयह आरम्भिक लक्षण हिनकोमे देखमे अबैछ। मुर्धन्य विद्वानक जुटान बनारस मेँ होइत रहैक। ओतय मैट्रिकमे पढैत कहियोकल अशोक जी स्रोता रूपेँ कविता सुनल करथि। से मनेमन हिनको किछ-किछ फुराइत रहय आ ई ताहिके शव्द आ वाक्य रुपेँ अपना रफ कागतमे उतारथि। फेयर करैत चोटीक विद्वान लोकमे अपन रचना देखाकय संशोधन कराबथि। आरम्भे मेँ हुनक रचल साहित्यक पन्ना के अपनैह हाथे फारि देबाक आदेश सेहो होईन,जे कष्टप्रद लागैन। तैयो विद्वतजन के बीच अपन मौलिक कविता ल'के' पाठ करबाक अवसर भेटनि। मुदा नव लोक छलाह,से कविताक काज छोड़ि खिस्सा लिखय ले नेर्देश भेटलनि। भारी मोन सँ लघुकथा - कथा लिखकय देखेबाक अनुभव प्राप्त कयलनि। सन् 1960 सँ 68 धरिमे 10-15 कविता गोष्ठीमे सुना चुकल छलाह,जे धियापुता पत्रिका आ मिथिला मिहिर मेँ करीब दर्जनभरि कथा धीरेन्द्र जीके देखेलाक वाद 1971 दिसम्बर अंकमे छपलनि। 1980 मे हिनक कविता संग्रह चक्रव्यूह आयल।अशोक जीक कविताक बनशव्त कथाके लोक बेशी पसीन करैन। गाम-घरमे लोक अपना नानी - मैयाँ, नाना - बाबा मुँहेँ बालपन सँ मनलगू खिस्सा रातिमे सूते सँ पहिले सुनल करय। ई हिस्सक रहने पत्र - पत्रिका मेँ कथा पढैत पाठक डुमि जाथि। ओना कथा लेखन कार्य यूरोप सँ आयल अछि,जे वर्तमान समस्या केँ केन्द्रमे राखि लिखल जाइक। कुरीति उन्मूलन - पतन संदर्भमे कथा लिखबाक प्रचलन बढल। करुण कथा सँ हरिमोहन झा व्यंग कथा दिसन आगू बैढ़ नव ढंगक कथा परसबाक परियास पाठक लग आरम्भ कयलनि। से देखा-देखी आधुनिक कथा लेखन क्रम चलैत गेल । तकरवाद छठम दशक सँ समकालीन दौड़ चलल अछि। कथाकार अशोक'क मत छन्हि- " 40 ई० सँ पूर्व करुण भावक रचना होय,1940 - 50 केर बीच खूब झमटगर कथा लिखेबाक मैथिली भाषा मेँ परिपाटी भेलैक।" देश स्वतंत्र भेलासन्ता

आमूलचूल परिवर्तन'क नव - नव विषय पर कथाकार लोकनिक डेग उठलनि । बिहार सहकारिता सेवा (1978) मेँ पदाधिकारी रूप सँ काज करैत, आब सेवानिवृत्त भेल छथि अशोकजी। हिनक कथा लेखन क्रम अनबरत चलैत रहलैन,आगुओ चलैत रहत । हिनक प्रथम कथामे शुमार "विराम सँ पहिले" छैक। ओना रचना सक्रियता बढौलनि 'बौका चुप छल' रचिकय। एखनो मैथिली भाषा मेँ कथा प्राय: जे कोनू रचनाकारक नीक लागैत छैक, तँ ओहिक पाठक तकर रसास्वादन करैत तहतक केर कथ्य पर स्वंय भाव सँ हंसनाई - कननाई वा जोर-जोर सँ हँसब,रोदन करय लागब ; ई तँ अन्त:करण केर असर होईछ। दोसर बात जे कथाक गरहैन जौँ व्यंग परक होईछ तँ पाठक अध्ययन- मनन करैत काल ओहिक आभाक प्रभावमे आबि उद्वेलित होईछ। पाठकक उपर जे मानसपटल केँ गुदगुदी लगैछ से मुश्की देवा ले रहि-रहिके जोर मारैत छैक। कविता सँ कथा दिश उन्मुख होइत रहल अशोक जीक शूरूआति परिवेश कथा मादे केन्द्रीत रहल । हुनका विषयमे वा कहू जे हुनक कथा विषयमे जौं मनोयोग पूर्वक अध्ययन कय ओहिक वास्तविक अखियास करब ,चाहे पाठक हुनक समवयसक होथि वा जेष्ट-कनिष्ट होथि पढ़ाकू लेल सम नज़र सँ देखैत छथि। पढ़ाकू वा अध्ययनशील लोक कथाकार अशोक केँ 21म् शताब्दीमे आन लेखकक तुलनामे खूब पढैत छन्हि। ई दीर्घ कथा यात्रा पर छथि। एखन बहुत किछ आरो लिखब शेष हुनक निजी अभिष्ट छन्हि। नवारम्भके प्रकाशक अजीत आजाद अपन मधुबनी डेरापर हमर परिचय कराबैत हुनका कहलकैन - ई लाल देव कामत हमर गामक संगी छथि आ हमर दुश्मन नहिँ छथि। संगहि इहो बतेलकनि कामतजी मैथिली जगतके नव पुरान लेखक पर अध्येता छथि। ओना वरेण्य साहित्यकार जगदीश प्रसाद मंडल जीक गाम बेरमा मेँ आयोजित सगर राति दीप जरय 'कथा गोष्ठीक ' अवसर पर सेहो आ कतेको ठाम अशोक जी सँ भेंटघांट भेल अछि। हिनक वकतव्यमे सुनने छी -: बेसीतर ग्रामीण क्षेत्रमे कथा गोष्ठी " सगर राति दीप जरय" कार्यक्रम आयोजन होईछ,जाहि सँ नव कथाकार बनैत अछि।" कथा पाठ कयलाक वाद लेखक केँ समीक्षक लोकनि ओहि कथा पर सोझा सोझीमे अपन नव विचार प्रवाहित कय कथाक त्रुटि पर धीयान दिअबैत छैक। आब तँ दीवा आ संध्या काल ओहि तिथिमे कथा प्रसंग आन - आन ठाम सेहो बैसारीक आयोजन हुअय लागल हन्। अनियमितकालीन संधान पत्रिका माध्यम आ संरक्षक हैसियत सँ ' उपमान ' त्रिमासिक साहित्यिक पत्रिका सँ अलख जगेबामे अशोक जी मैथिली भाषा अभियानीक बीच अगुएलाह अछि। तेँ बहुआयामी व्यक्तित्व के धनीक अशोक जीक खातामे हिन्दी क' समीक्षात्मक आलेखक प्रसंशाक सँग हिनका यशस्वी रचनाकार, कथाकार,कवि, सम्पादक,निवंधकार, व्यंग्यकार आ आलोचक रुपेँ जगजियार भ' लोकक बीच चिन्हाय छथि। हिनक चर्चित पोथी -: मैथिल आँखि (निवंध संग्रह) दाम 69 टाका, कथाक उपन्यास - उपन्यासक कथा (नोवेल) दाम 75 टाका , डैडी गाम (कथा संग्रह) दाम 200 टाका,बात विचार (निवंध संग्रह) दाम 150 टाका , नीक दिनक वाईस्कोप (लघु कथा) व्यंग संग्रह

किमत 50 टाका आ आँखिमे बसल (यात्रा कथा) दाम 150 टाका 'क मैथिली मेँ छन्हि। मैथिल बीच दृष्टिसम्पन्न रचनाकार अशोक जीक ओहि रातिक भोर, मातबर कविता संग्रह आ चक्रव्यूह निकलल छन्हि।

अशोक जीक तानपुरा कथाक बानगी ऐ तरहक होई छैक,यथा -: खर्चा आ आमदनी 'क लेखा जोखा संधारण लेल सरकारी कार्यालयक औडिट करय सँ बिनोद बाबू छीहकैत रहैत छै। हुनका बस-ट्रेन मेँ सड़क सँ यात्रा करैत आ आनो जगह तथा घरोमे आराम सरिया केँ नहिँ होई छै। घरक झंझटि तँ आरो जानमारा बुझाइछ।आफिस सँ आडिट काज कय डेरामे अयलापर पैन्ट सर्टक बटन फोलैत काल अव्यवस्थित होई छै। लुंगी बदैलैत घरी टुटल बटन देखि पत्नी रमझौहैर ठाढ क' दई छैक। पति-पत्नी क' बीच वाक्युद्ध सँ थाह चलैत छै जे दाम्पत्य जीवन नोंकझोंक सँ भरल छै। पत्निक लोहछब वाणी जेना बरछी भोकल जाइत होउ। बटनों तँ आखिर पत्नीए माया केँ टांकि टँच करय पड़ैत छै। ऐहनसन बिकट स्थिति सँ बढ़ल उलझन फेर सँ मिलानमे परिणत होई छै। एकबेर पुर्णिया सँ आडिटर महोदय घर अबैत छै, तँ रेडियो पर प्रसारित गीत ...बनके चकोड़ी.....बजैत सुनैत य। ई गीत सुनि 15 साल पुरान समयके दृश्य मोन पड़ैत छै। इयह गीत न विनोद बाबु मायाजी केँ पहिलखेप गाबि सुनौने छलैक। आ गीतक रस मुरी गोंतिके माथ झूकौने माया गंभीर भ' सुनने रहथिन। 15 वर्षीय बेटा आब सेहो संगीत सीखय चाहैत छैक। बालपनमे अपन बाबूक जूटमिल बाला डेरामे रहथि तँ ओतय अपनों संगीत पढय गुणै चाहने छलैक। परँच अंग्रेजी आओर गणितक' नीक ज्ञान रहने ,राधा कृष्ण मंदिर पर आयल गानबजान मंडलिक गबैया देखि मोनमे आयल रहैन मूलगाईन बनी।मुदा बाबूजी तैयार नहिँ भेल रहैक। हुनका तत्काल जे शिव नचारी सुनि आयल रहथि, से पाँति गबैत ....गौरा तौर अंगना .....अपन मीठ कंठ सँ पिताजी केँ सुनौने धरि रहय। पिताजी बंगाली टोलक घोषबाबू लग जाकय संगीत साँझखनके दूई घंटा २० टाका महिना दर पर नियमित सिखबाक निश्तुकी बात बताबैछ। परिवारिक आन- आन खरचमे कपैचके बीश टाकाक औरियान तँ बड़े कठिनता सँ भ' सकलैक। आब की हो! नव बखेरा समक्ष ठाढ होईछ, सुरसाक मुंह बौने। से घरेलू कोन खर्च तोरल जाए जाहि सँ २०० टाकाक हारमुनियाँ नैका आनल जायत ! एकटा किफायती जुगत धरबैत पुरना मुस कटबा बाजा मेँ मोम सँ भुरकी भरि काज निकालबाक निठाहे योजना बनलैक। डेरा पर आब अभ्यास शुरू करैत सरगम गाबैक लेल सुर सँ लगनपुरवक मेहनैतक आवश्यकता रहैक। से छुटि गेला सँ संभव नहिँ होईछ। आब तँ पिताजी जहाँति आर्थिक अभाव नहिँ छैक। तेँ सेहन्ता सँ अपन दुलारू बेटा गौतम केँ अवश्ये रियाज कराओत। पत्नी सँग अंग्रेजी सिनेमा देखेबाक एक पृथक आनन्दक अनुभूति होइत छैक। से आई पत्नी सँ विनोद बाबू आग्रह करैत छथि जे चलू भोरका उखराहाक शो मेँ ब्लू फिल्म देख अबैत छी। पत्नी निधोख भ' बजैत छथीन हम अंग्रेजी सिनेमा नहिँ देखय जाएब। ओई राति सौखगर लोक सब हमरा दिश घुईर- घुइर निहारैक। तेँ

घरेमे वीसीपी० आनि फिल्म देखेबाक नियार भास होईछ। परंच विचार मेँ पत्निक सम्पुष्टि नहिँ होई छन्हि। कारण एहन फिल्म पारिवारिक वातावरण मे देखब हुनका- अनसोहान्त बुझाइछ। अगिला मास सँ पुत्र तानपुरा किनिकय मल्लिकजी सँ अवश्ये सँगीत सिखत। मुदा पैघ हाकिम बनैमे ई संगीत - गीत सीखनाई बड बाधक भ' सकैछ। ऐ बात पर दूनू प्राणिक बीच विशेष रूपेँ सहज सहमति बनि जाईत छै। साजबाज आ गीतनादक फेरमे पड़ि बेटा बंगट बनै सँ थम्हैत य। मैथिली कथा विश्वक कथाक समकक्ष ठाढ कोनू देशक कथा समक्ष मजगुति सँ आई मोकाबला करैत छैक। मैथिली साहित्य आन्दोलन मेँ एक समय एहनो आओत जाहिमे कथाकार अशोक केर वादक कथा आ अशोक सँ पूर्वक कथा बीच अशोक युगक कथा विधा पर सम्यक विमर्श होएत।

लीला बाबूक बेटा नाम बजौलनि

- लाल देव कामत (साहित्य सेवी) मो. ७६३१३९०७६१

मिथिलांचल 'क दरभंगा प्रमंडलके मधुबनी जिला अन्तर्गत एक प्रसिद्ध गाम हटनीमे भटसिमरि सँ गेना मिश्र तीन फरीक बसय अयलाह। एतुका शस्य श्यामला भूमि ततेक ने धारलकनि जे गामक बेल्हा डिह लग पोखरि धरि खुदेलनि। गेना जीके दू बालक क्रमशः बलभद्र आ रामभद्र तथा एक जेठबेटी भेलनि। बलभद्र जीके तीन पुत्र क्रमशः रविनाथ ओ लीला कांत ओ बाला मिश्र तथा जेष्ट पुत्री (डेवढ मेँ बिवाहीत)ओ सबसँ छोट बेटी मूर्ति जे पिरोजगढमे बिवाहीत भेल रहथि हमन। रतिनाथ जीक वियाह सुदै गाममे भेल रहनि। बाला मिश्र पुशुक डाक्टर भेलथि आ मातृके डेवढमे रहि पढ़ाई लिखाई भेल रहनि। लीला बाबूक मामाजी राधे मिश्र हिनका सभकेँ कोशी बाढिमे अपना ओहिठाम राखि सदैत मदैत केलकैन। कठिणता पुर्वक हटनी इलाकाक लोक बाल बच्चाके पढ़ा सकलाह। घोघरडीहा बेसिक स्कूल आ डेवढ हाईस्कूल पढैत छात्र लोकनि केँ अनेक समस्या होईन। गरमीमे भोरका स्कूल नियमित जाईमे छावाभरि बालूमे पैर धसि जाए। बरखा समयमे नाह तीन ठाम पार उतरय पड़नि। गाम सँ पूब करीहर टोलाक नथुनी सुतिहार घर लग विद्यार्थीगण नाह सँ यात्रा करैत फेर दोसर नाह बगरबोनी पह लग आ तेसर आनन्द नगर कोसीबान्ह लग पार उतरैक। झौआ गाछ पर दके सेहो चलल करथि। लीला कांत बाबू १९६२ई० मे रमऔलई हाईस्कूल सँ मैट्रिक पास कयने रहथि। एहन कष्टप्रद हालात सँ उबारय बाला लीला बाबूक सरकुटुम्ब सराहनीय भूमिकाके निर्वाह करैत हिनका आर्मीक (एन डी ए) बहाली लेल एम ई आर / एन ई आर फार्म भरेलकनि। भारतीय सेनामे नियुक्ति उपरान्त विभागीय परीक्षामे ओ उत्तरोत्तर सफलता प्राप्त करैत , सुबेदार पद धरि प्रोन्नति पौलथि। महामहिम राष्ट्रपति महोदय सँ मेडलधरि भेटलनि। नौकड़ी सँ सेवानिवृत्ति पाबि गाममे रहय लगलाह। लीला कान्त मिश्रके साँगी गाममे सीता देवी सँग वियाह भेल रहनि। दि० २७-९- १९६९ ई० मेँ प्रथम पुत्र अजीत आजाद केर जन्म साँगी मेँ भेलैक। एहि सँ छोट बेटी गुड़िया आ बेटा राजू छैन्ह। अजितके घरक पुकारू नाम पप्पू अछि, जिनक आदर्श वियाह गजहारा गाममे भेल अछि। गुड़िया 'क वियाह लौकहा आ राजू वनारस रेलवे कैनटीनमे कार्यरत छथि। ग्रामीण विकास लेल लीला बाबूक विचार एखनो समकालीन लोकक बीच चर्चाक विषय थीक। ओ स्वयं पंचायत समिति सदस्य पद सँ आम चुनावमे ठाढ भेल रहथि। सार्वजनिक दुर्गा पूजामे बढ़ि-चढ़िकेँ भाग लैत रहल छलाह। लीला बाबूक सम्पर्क सरौतीके हरिनाथ बाबू प्रभृति अनेक गणमान्य नागरिक सँ रहनि। हटनी महादेव स्थानमे आयोजित ' सगर राति दीप जरय'क कार्यक्रम मेँ उत्साह सँ

भरल रहथि। मुदा कियो अजित जीक विरोधी बेसी मादकता मेँ धकेल देने रहनि। ओ एकदिन ऐ पाँतिक लेखक केँ कहने रहथिन-" अहाँ अजीत उपर अतिशय विश्वास कय ५००० टाका किताब मद्दमे देने छियैन। ओना अहाँक नाम पता "हिंदी पत्रकारिता कोश " पुस्तक मेँ छपल देखलहुँ ,से प्रशन्नता अछि। कविता करैबाला अजीतके आब अहाँ (सन् १९९२ मे) पत्रकारो बनाएब! अहाँक पोथी सँ पूर्व ओ पत्रकारिता बुक कहियो हाथ नहिँ लगेने अछि। हम जनैत छी ओ हिन्दी क' तमाकूल बाला कविता रंगमंच सँ दुर्गा पूजामे प्रस्तुति देने रहय। पछाति मैथिलीमे नव कविता रचय लागलाह। अजित जी गुणी लोक तँ छथिये। लीला बाबूक जीबितेमे आदरणीय कामेश्वर चौपाल जीक झंझारपुर सभामे हम सब गेल रही। गामक कामेश्वर झा मुखिया जी मंच संचालन लेल अजीत जीकेँ शोर पाड़लकनि। ओहिठाम पं० तारा कान्त झा मुख्य वक्ता आयल रहथिन। विपक्षीक आरोप रहै छैक जे भाजपाक सब लोक जयश्री राम कहबेटा करत। मुदा आरंभ सँ समापणधरि अजीत जी राम शव्द उच्चारण नहिँ कय,विरोधी पक्ष केँ छगुन्तामे छोड़ि देलनि। १९९५ मेँ घोघरडीहाके रघुनाथ झा" राजा" आनन्द मोहन सिंह केर बिपिपा० सँ विधायक पद लेल भोंटमे ठाढ़ भेला। ओई बेर किशनपुर सँ स्व० रामजी मंडल शास्त्री जी हमरो टिकट दियाबैक गप्प कयने छलैथ। हम तँ सुरेन्द्र गुप्ता लेल उदारता देखाएल आ निर्मली तथा फुलपरास विधानसभा क्षेत्र केँ प्रत्याशीक मदैतमे समय देलियैक। फुलपरास विधानसभा क्षेत्र हमर आ अजीत जीक संयुक्त रूप सँ निर्वाचन परिभ्रमण काज सँ पुरा टीम संतुष्ट रहय। सामाजिक आ ज्ञान- विज्ञान काजमे हम दूनू गोटय अनेको बैठक/सभा आयोजन करी से लीला काकाकेँ बढ़ नीक लागनि। ओ साहित्यकार लोकनिक संगतमे बेसी रमि गेलैथि आ हम कात लागल रहलौं। हमर क्षेत्र राजनीतिक गतिविधिक बेसी रहल। हमरा अजीत जीक प्रकाशित पोथी पढ़यमे नीक अभिरूचि अछि।

साहित्य अकादमी परेखलनि - पेन ड्राइवमे पृथ्वी केँ,

दरशन २०२२ लेल साहित्य अकादमी दिल्ली केर मैथिली मूल पुरस्कार मैथिलीकर्मी अजित आजाद जीके हुनक मैथिली कविता संग्रह पोथी " पेन - ड्राईवमे पृथ्वी" केँ देल जेबाक घोषणा भेल रहय। एहि जनतव सँ युवा वर्ग बीच आ साहित्य सेवी जन बीच हुनक चौतरफा स्वागत भेल।

सन् २०१८ मेँ नवारम्भ सँ प्रकाशित २५६ पृष्टक किताबक दाम २०० टाका निर्धारित करैत अपन काव्य संग्रह मेँ १८५ गोट कविता केँ अजीत जी पाठकके समक्ष अनने छथि। २००६ सँ पूर्व हिनक एकोगोट पोथी नँय छपल रहनि। आब तँ आजाद जीके अपन पोथीक संख्याँ ३० टा सँ बेशिये छैक। कविता विधा मेँ हम गप्प करय चाहैत छी, ओहिमे चर्चित पोथी सात गोट छपल छैन जे हुनक अपन नवारम्भ केर इतर आनो ठाँम सँ छपल छैक। हिनका कविताक पात्रमे एहि पाँतिक लेखक सेहो समान्य पाठकके अभरत। मैथिली परामर्शदात्री समिति क' संयोजक डाँ० अशोक झा 'अविचल' आ तीन सदस्यीय निर्णायक मंडल क्रमश: डॉ देवकांत झा,शेफालिका वर्मा आ मंत्रेश्वर झा १३ टामे ऐ पोथीके सर्वसम्मति सँ चयन

केलनि। हिनक समकालीन मैथिली कवितामे देशज शव्दक माध्यम सँ विनु छुबल विषय कैँ शिल्पक विविधता संग व्यक्त विचार प्रतिरोध आ प्रेम मूलतः रहलनि अछि। आम जन केर सरोकार सँ प्रमुख भुमिका रूपे देखाइ छथि। पुरस्कार पाबै बालामे सँ ई बेशीतर घुमक्कर आ मंचीय उपस्थिति लेल देशक कोना - कोना छान मारैत देखाइत अयलाह,जे सबसँ अलग पहिचान भेलनि। सगर रात्रि दीप जरय "कथा गोष्टीक" आयोजन अपन गाम - हटनी सँ ल'कैँ राज्यक राजधानी धरि अतितमे कयने छथि। कतेको साहित्यिक मंच आ नाट्य मंच पर अपन बेढप छाप छोरि दर्शक आ श्रोताक हृदयमे जगहधरि बनेने छैथ। आब तँ प्रकाशन आ मैथिली फिलिममे सेहो पकठोस जकाँ जमल छथि। मैथिली भाषा पत्रिका - नवारम्भ,बाल- बन्धु, मिथिला सृजन ,सखी- बहिनपा 'क सम्पादन करैत आबि रहलाह अछि। बहुतो राश पुरस्कार अपना नामे अजीत मिश्र जी अर्जीत कयने छथि,ताहीमे ई साहित्य अकादमी पुरस्कारोक ठप्पा लगने आरो परिष्कार भ' गेलाह हन्। हिनक कविताक अनुवाद हिन्दी, अंग्रेजी,उर्दू,बंगला आ नेपालीमे भेल छन्हि। आरम्भिक दौरमे हिनक कवीता "एशिया-मैत्री " आ समता प्रेस सर्विस मेँ हम सम्पादकक हैसियत सँ छापने रहियैक। आब आर्थिक सुदृढ़ीकरण लेल एक खानगी कम्पनीमे निदेशक पद पर चाकरी करैत समय खेपैत छथि। हिनक पेन-ड्रावमे पृथ्वी पोथीक पहिल कवीताक 'शिर्षक' बेबी किछु नहि केर पाँति देखल जाय-: नहि,एतेक प्रशंसा नहि
नहिं,एतेक निन्दो नहि
नहिं,एतेक भुख नहिं
नहिं , एतेक तृप्तियो नहिं .....

दोसर पाँति द्रष्टव्य अछि, आखिरि पन्नाक कवीता "शिर्षक" छोड़िए जायब सँ!
थोड़ेक बरसात
थोड़बा सुगन्धि
फाँटमे पड़त हमरा

थोड़ेक रोग
थोड़बा-थोड़ भोग
सेहो पड़त संख्या .....
एहि तरहेँ कम पाँतिक आ दू पन्नियाँ कविता सँ भरल पैघ कवीताक पैघौत तत्कालीन परिवेशमे अपन पराकाष्ठा देखबैत रहत। आजाद भाय उर्फ पप्पुजीके प्रति विशेष मंगल कामना रहत। ओ शिघ्र दादा

साहब फाल्के पुरस्कार सँ अलंकृत होथि से मन लागल हैए।

शम्भू बाबूक आत्मकथा

समीक्षक - लालदेव कामत

प्रो०रविन्द्र कुमार चौधरी कृत मैथिली कोश ५००टाका मुल्यक पोथीमे एहिबेर अनेकों नाम-पतामे अपन नाम शम्भू नाथ मिश्र जीके नहिँ छैन,मुदा ई अपन लेखनी सँ पाछु नहिँ छथि। नवारम्भ प्रकाशन -मधुबनी/पटना सँ सन् २०२३ वर्ष मेँ ७२ पृष्ठक मैथिली पोथी " जिनकीक बाट पर" बहराएल अछि,जाहिक मूल्य २०० टाका तय भेल छैक। एहि आत्मकथा पुस्तिकामे वरेण्य साहित्यकार श्री अर्धनारीश्वर जी, श्री शम्भू नाथ मिश्र जीके मादे लिखैत छथि - ई मिथिलांचल कोसी विकास समितिक माध्यम सँ एखनो हटनी एवं क्षेत्रक विकास लेल परियासरत छथि। यैह कारण अछि जे हटनीमे सार्वजनिक पुस्तकालय'क निर्माण संगहि समुन्नत उप स्वास्थ्य केन्द्रक निर्माण भ' सकल अछि। सद्यप्रकाशित एहि मैथिली भाषा पोथीमे शव्दक किछ वर्तनीमे संशोधनक आवश्यकता बुझैत अपन अनुभवक दिग्दर्शन कराबैत कहैत छथि, पैघ सँ पैघ लेखक अपन पहिल शौकिये (सख) करैत छथि। हमरो पढैत- पढैत लेखनक सौख भेल रहय। लिखबाक इयह लौल बढैत - बढ़ैत हमरा सँ जखन जे ,से लिखाए लेलक ! तेँ आश करैत छी जे शम्भू बाबूक लिखल ई लौल आओर बढ़नि आ ओ अपन जीवनानुभव केँ अधिक शव्दवध्द करथि। हिनक एक मात्र समांग लेखन क्षेत्रमे श्री अजीत आजाद मैथिली मेँ लिखैत आबि रहल छथि। ओना डॉ० बच्चएश्वर झा सेहो मातृभाषामे 'कविता निकुंज'पोथी लिखने छथि। कोसी संदेश मैथिली त्रैमासिक पत्रिका'क प्रवन्ध सम्पादक श्री शम्भू नाथ मिश्र पाँति गढ़ैत रहलाह अछि। शव्दरूप शक्ति छन्हि तेँ अपन आत्मकथा तँ लिखिए सकैत छथि। हरेक व्यक्तिमे एक अन्त:कथा छुपल रहैत छैक जे उजागर तँ तखने होयत, जौं ओहिके सार्वजनिक करबाक जीवटपन होय। शंभूनाथ जी बालपन सँ आरम्भिक पढ़ाय- लिखाय आ स्नातक (प्रतिष्ठा) धरिक चर्चा एवं अपन वियाहक प्रकरण सेहो बतौलनि अछि। टेमी दगनी पावनि सवर्ण समाजमे (ब्राह्मण जाति) परम्परा सँ होइत आबि रहलैक आ ओ एहि बिध सँ पत्नीके परिस्थितिवश मुक्त राखलनि। मधुश्रावणी आ कोजगरा पाबैन मिथिलामे किछ विशेष जाति वर्गमे होईछ,तकर निमहतामे अपना वैभब अनुसारे एक तरहक प्रतियोगिता मखाना भार बावत समाजमे देख पड़ैछ। एहि पुस्तिका केँ पढ़ि पाठकके ई जनतब होईछ जे कोसी तटबंधक भीतर बसल गाम घरक रहबासिक देश आज़ादी समयकालमे परिवेश आ स्थिति केहन रहैक। एतुका भुगोल आ सामाजशास्त्रीय अध्ययन लेल शोध प्रवन्धके विद्यार्थी केँ स्व० कमलादत्त मिश्र'क (आदि निवासी कंसी- सिमरी) वारिसक अध्ययन सँ पुख्ता थाह हेतनि। कमलादत बाबू दूभाय

सहोदर आओर एक भाय बेमातरे छलाह। कमलादत बाबू केर बालक भेलाह बाबुलाल मिश्र जिनका छह पुत्र क्रमशः श्रीकृष्ण मिश्र , जयकृष्ण मिश्र, लालदेव मिश्र, बालकृष्ण मिश्र, अभयकांत मिश्र आ राधाकांत मिश्र तथा दू बेटी रहैन जे एक राँटी-मंगरौनी आ दोसर ठढ़बिटिया बियाहल गेलीह।अभय कान्त मिश्रके एक बेटा- तपेनन्द मिश्र आ एक पुत्री देवतारणी देवी रहथिन। अभय बाबूक जुवा वयक्रममे असमय निधन भेलासन्ता धर्मपत्नी पंचमुखी देवी तीन बर्खक नेना तपेनन जीके मसोमाति परिस्थितिमे भरण - पोषण करैत अपर प्राइमरी स्कूल धरि शिक्षा दियेलथिन। कैथी अक्षरक जानकार तपेनन बाबूके सरकारी नाह भेटलनि, युवा अवस्थामे नाविकक काज (अंशकालिक) करैत पत्नी कर्पूर देवी (नैहर - कछुवी) आ तीन पुत्री ओ दू बेटाके नीक शिक्षा-दीक्षा दिएबामे समर्थ भेलाह। अपन खेती - पशुपालन सेहो करैत पूर्वजक देल जमीन जे बेलमोहन - महुलिया, हड़री मौजामे रहैन,तकर निमरजना सेहो करय पड़ैत छलैन । अनाज बुतातक इयह सहायक आ चरखा सूत कताई सँ आमदनी होइत रहलैन। भयंकर कोसी वाढ़िक चपेटमे आयल एहि गामक बहुतो लोक मोरंग आ कलकत्ता खटि गुजर करैत रहथि,परंच तपेनन्द मिश्र गामक डीहे पर रहलाह। एखन चारूबिटा पक्का मकान आ बाड़ी फुलबारी आनन्द पूर्वक सब किछु छन्हि।हुनक पुत्र शम्भू नाथ मिश्र अपन जीवनक सफरनामा पूर्ण मनोयोग सँ लिखलनि अछि। एहि आत्मकथामे ओ गामक स्व० मखसुदन बाबू आ मनमोहन बाबू दूनू भायक विरूदावली धरि लिखय सँ पाछु नहिँ रहलाह अछि। ओना गामक दुखन काका, लक्ष्मीकांत ज्योतखि जी,प्रो० विशम्बर झा,सुधीर, कालिकांत आदिक संग- संग हटनीके चौहद्दीमे जे गाम सब छैक ,ततय केर सहपाठी छात्रगणक चर्चा सेहो बढ़ सिध्दत सँ कयने छैक। अपन पढ़ाई लिखाई समाप्तिक वाद कोलकाता वाया राधास्वामी स्थान (पंजाब) आ दिल्ली स्थित भूतपूर्व सांसद गुणानंद ठाकुर जीक सानिध्यक चर्चा विस्तार सँ कयने छथि। भूतपूर्व प्रधानमंत्री स्व० इन्दिरा गांधी जीक कार्यकालमे सुपर बजारक कोपरेटिव सोसायटी मेँ काज करैत,अनेको केँ काज धराबैत सफल जीवन जीऐत सेवा निवृत्त भेला। दिल्लीमे व्यवस्थित भ' गेल छथि आ पुरान मिथिला संघ तथा विद्यापति सहकारी थ्रिप्ट एण्ड क्रेडिट सोसायटी सँ सम्वध्द रहल छथि। मनुखके जीवनक असली रहस्य अपन बितल समयके तुलन करैतकाल बूझाइछ। से शंभूजीके सेहो अपन जिनगीकेँ जखन पाछु देखैत य तँ बहुत एहन बात सभ मोन पड़ैत छैन जकर उल्लेख कोनू बेजाए नहिं कयने छैक। परंच ग्रामीणक किछ उखपाति केर उछन्नर सँ बहुतो गोटय उपटि अन्तय जा बसलैक, यथा- स्व० बौआ बाबुक बड़भाय कमल नारायण झा- सिल्लीगुड़ी,कमलझा पेसर खेलानंद - मंगासिहौल, रामचंद्र मिश्र; जगदीश मिश्रके भाय - मलछाम, हरिश्चंद्र मिश्र- कर्णपुर, जाल झा - घोघरडीहा बजार, हेमकर झाक भाय पंडित जी- राजनगर, हरिश्चंद्र झा- डेवढ आ रामचन्द्र झा दरिभंगा सुविधा कारणेँ, शम्भू मिस्तरी केर काका बली झा - गोरधनपुर, सुफल मिश्रके भाय कपलूजी- जलसैन , महावीर ठाकुर - सरायगढ़ (बनैनियां) , मल्लर कामति -

सहोरबा, रामचन्द्र कामति कलकत्ता, परमेश्वरी कामति - मैनही, राजेन्द्र कामत- सूड़ियाही,कलर कामत- बसुली,रामकिसुन कामैत- भीमनगर,रामसुन्नर कामत - रूद्रपुर, जगरनाथी कामत- देवनाथपटी,अगहनू साह- नौआबाखर,उमेश ठाकुर - जलपायगौरी ,सुटू कामत- बागडोगरा आ दिलचन कामत- जोगबनी आदि ताहि प्रसंग आंकड़ा लिखब चुकि गेलाह अछि। पूर्वमे एक आलेखक द्वारा हटनीके वर्चस्ववादी संस्कृति पर हिनक मनतव कोसिकनहा सहित मुख्यतः दुर- दुर तकके लोक जानने छथिये। ७२ वर्षीय आन्दोलनकारी पुरुष शम्भू बाबू व्यवहारिक एवम् मृदुभाषी छथि। अपन चिन्हारकेँ सतत् यथाशक्ति भरि सहयोग करैत छथीन। एक आदमी (ड्राईवर रणधीर - राजस्थानी) हिनका सँ मदैत लैत १० हजार टाकामे किनल एम्बेसडर गाड़ी पार कर देलकैक। गायब कयल घटनाक कचोट रहितो फेर बहुतो बेर ठगीक ओझराहटमे पड़लाह। जीनगिक बहुत रास दु:ख आ सुख'क वृतांत "जीनगिक बाट पर " ऐ मैथिली पोथीमे सकुचाइत केलनि अछि। हिनका विषयमे संग रहैत बहुत बात मनोवैज्ञानिक रूपेँ नहिँ बूझल रहय,से एहि पुस्तिकाके पढि हिनक रुग्णता आ स्फूर्त पक्ष बुझबाक अवसर भेटल। पोथी बेर- बेर पाठकके पढबाक उत्कण्ठा होयत। श्री मिश्र जी साहित्य सेवामे आब सन्नद्ध छथि,हिनक दोहावली'क पाँति संदर्भमे हम पूर्वमे ब्लाग लिख चुकल छी।

रिनियाँ ' क चरित्र चित्रण करैत एक पोथी

समीक्षक - लाल देव कामत

वरेण्य साहित्यकार तारानंद वियोगी- केदार कानन जीक सम्पादनमे गुलो : कला आ भाषा (विमर्श) २०२२ ई०मेँ २१५ पृष्टक 'मैथिली पोथी' किसुन संकल्प लोक सुपौल, प्रकाशित केलक। एहि गतगर साहित्य के दाम दू सय टाका छैक,जाहिमे आवरण अनुप्रिया'क आकर्षक छन्हि। पोथीमे आखरी एक पाठ मूल उपन्यास लेखक डॉ० सुभाष चन्द्र यादव जीक ' पचपनिया मैथिली 'शिर्षक सेहो लागल पाठक केँ अभरत। ऐ पोथीमे गुलोक छोट बेटीक जे मूल उपन्यास कथाक केन्द्रीय पात्र अछि, ताहि के मादे विभिन्न विद्वान समालोचना केलनि ,से हुनके शव्दमे अपनेके दिग्दर्शन कराबैत छी।

सुपौल गोठ केर रहबासी लगधक ५५ वर्षीय गुलो उर्फ गुलाब मंडल के बाबुजी सँ हुनक मसोमाति भेल बेटीक बालक चाह दोकानमे संग पूरैत गुजर बसर करैत रहै य। से नाति महिनदर एकदिन धोखा दैत बासडीह- घरारी कबाला करा लेने रहैक आ माम गुलो केँ एतय सँ भागिन सब तुरके भगा देलकैक। गरीब गुलो सरकारी डगरकात ब्रह्मस्थान टोला लग कच्चाघर बनाकय सपरिवार विस्थापित जीवन वितबैत चाहक दोकान करैत रहैछ। अपन जीवनक आखरी छ:मास पूर्व लेखक आ हुनक मित्र सँ परिचिति पाबैत छैक। कथा नायक गुलो जवानीमे गाँजा पिबैत रहथि,से आब ओ दम्मा रोग सँ ग्रसित छथि। हुनक पत्नी बेलाबाली दू बेटा- दू बेटीके जन्म दैत रोगाहि भऽ गेल छैक। डेढ़ दू सेर (लीटरध सँ गँहकि चलबैत अछि,अदहा दुधक चाह अपने परिवार मे सधि जाईछ। जेठका बेटा अरजूनमा ऐ कसबामे रिक्शे चलबैत निशेवाजी संगहतमे रहैत छैक। ओ पैनजाब खटय गेल छलैक। अपना स्रीके टाका कमाके पठबैत छैक। ओकर तीन सालक बेटा सुजीत छै से दादा-दादी लग दीदी आ अनबर क्वैक लग खूब रीताएल छै। कोशी चौक पर जे पूर्वी कोसीबान्ह सँ पूरब बेरियामंच बाला नव उपनिवेश कायम भेल छैक; ओतय छोटछीन समाजिक बसावट ढ़ांचा ठाढ़ छैक। ताहिमे अनवर कठघारा राखि सूइया दवाई के ल'के ग्रामीण सँ नीक भाईचारा मे रहैत देखाईछ। परोसमे एक भला आदमी गुलो आ इनरा गान्ही सब समांग रहैत छैक। गुलो ऋण समझि अपन छोटकी बेटीक" नाम रिनिया राखने अछि। से रिनिया कोनू गीत गबैत अपन आँगन द्वार नीपैमे निमग्न रहैत अछि,तिलासंकराइत छीयै। सद्यप्रकाशित ऐ पोथीमे सिद्दत सँ कुमार मनीष अरविंद " एहि युगक अवहट्ट उपन्यासमे" लिखैत छथि ' उपन्यासक प्रारम्भहि मे रिनिया निपिया क' रहल अछि।ओ ओढ़ना नहि ओढ़ने अछि। जाड़क मास छैक,तैयो। ओढ़ना नहि

ओढैत अछि,जे निपिया करै मे ओढ़ना लेटा जेतैक। रिनिया चाहक दोकानक निपिया करैत अछि त' दोकानक आगू सड़क पर तीन गोटय ठाढ़ छै आ रिनिया दिस ताकि रहल छै। भरिसक फ्राक सए हुलकी मारैत जौवन निहारै छै। गुलो आ बेलाबाली ई बात बुझै छै।मुदा गुलोक बेबसी देखियौ जे ओ अपन बेटीकेँ बात कह' के अतिरिक्त ओहि तीनू कें किछु नहि कहि सकैत --_अछि। ओ अपन बेटी पर बमकैत अछि, ' गए छौड़ी! छोड़लिही? आकि दियौ झापर!'

उपन्यास विन्यास आ ताहिके कथोपकथन ततेक सुस्पष्ट भेल छैन जे अपने पाठक हुनक ठेंठी मैथिली आ छोट वाक्य चयन देखि प्रफुल्लित भ' उठब। सुभाष चन्द्र बाबुक लेखन शैली एहि तरहेक होइछ-: रिनिया मनसुआयल- ए। आइ डोका के मौंस खायत। कंदाहावाली कहि कए गेल छै डोका लेने एतै। लेकिन डोका नै भेलै। ऊ घोंघा लेने एलै। घोंघा छोट होइ छै। बनबै मे भारी झंझट। आ खाइयो मे बेकार। घोंघा देख कए रिनियाक मन खसि पड़ल। ऊ रुसि रहल। ने घोंघा बनबै लए तैयार ने कोनो टहल करै लए तैयार। माय-बबा कतबो कहै छै-'पानि ला । झाड़ू लगा दही।' कोनो परवाह नै। ऊ गुमसुम बैठल-ए। माय परचारै छै-' जीबलाहि केहन! सब दिन माछे- मौंसै चाही।' रिनिया कठुआयल बैठल रहइ-ए। सुक्खल कैल केश हवा मे उड़िया रहल रहल छै। ऊ कहियो केश मे तेल नै लगबइ-ए। तेल रहिते ने छै जे लगायत। एहि तरहेक पाँति उठाकय कतेको विद्वतजन अपन आलेखमे सन्हियेने छथि। यथा-: रमण कुमार सिंह ' युगान्तकारी उपन्यास : गुलो ' मे लिखैत छथि- सर्व शिक्षा अभियान 'क सच्चाई एहि उपन्यास मे देखार पड़ैत अछि। रिनिया स्कूल पढ़ै लेल नहि बरू पोशाक राशि'क लोभ मे जाइत अछि। मैडम कहने रहैय जूता कि चप्पल किन लीहें, मुदा बाबुजी ओहि पाई सँ घरखर्चा मे सधा देने रहैक। पाँच टका मेला देखय जाई ले नहि द' सकलैक आ न कोनू बेगरता मे कनिकबो पाई। से रिनिया झूठा धरि कहैत बापके लुलकारि लै छै। अंगना दुआरि (दोकान) भोरे नीपै सँ छोटकी बेटीके मनाही करैत ओकर माय चिचिआइ छै- 'माय गे माय! छौड़ी हमरा जीअय नै देते! गे चद्दरि ओढ़ि ने ले।' नै ओढ़ै छी। भरि के लेटा जेतै!' रिनिया खौंझा कए कहै छै आ माटिक ढ़ेला गुड़ि- गुड़ि बाल्टिवाला पानि मे खसबैत जाई छै।' पृष्ठ सं० ४१ ,एक दिन गहुँम कटनी काए घुरैत- घुरैत राति के आठ बाजि गेलै। गुलो बजार गेल रहै। रिनिया कए बड़जोर भुख लागि गेलै। बबा रहितिए तऽ एक-दू टका मांगिकए कुइछ खाय लइत। गुलो आ उमेशबा के दोकान आमने-सामने छै। रिनिया देखलक उमेशबा के बेटी दोकान पर असकरे छै। लग गेल आ कहलकै- हे गे! कने पकौड़ी दे ने। बड़ भूख लागल-ए।

रिनिया पच- पच थूक फेकै य, मुदा ओ जीबलाहि नै य।अनबर चालीक कैप्सुल दै ले गुलोकेँ कहैत छै,परंच दामधरि नै पुछारि करत। सरकारी अस्पताल मे दवाय भेटि सकैछ। सतीश वर्मा " मेहनतकश बहुजन समाज 'क महाकाव्य ' शिर्षक मेँ लिखैत छथि- गुलो पढ़लाक बाद हमरो एहि उपन्यासक पात्र गुलोक बेटी रिनिया सँ बेसी जुड़ाव भ' गेल। गुलो पढ़लाक बाद हमरा लागल जे ई उपन्यास गुलोक

कथा सँ बेसी गुलोक बेटी रिनिया 'क कथा थिक। उपन्यासकार सुभाष सेहो गुलोक कथा कहैत कहैत (जाने- अनजाने) रिनियाक कथा कहय लागैत छथि आ ई अनायास नहि थिक जे उपन्यास रिनिया सँ शुरू होइत अछि आ रिनिये पर जा' के' ख़त्म होइत अछि। भरि उपन्यासमे बाप (गुलो) आ बेटी (रिनिया) 'क बीच जे फटकार- दुलारबला ममता आ प्रेमक सम्बन्ध अछि ,से उपन्यासक प्राणवायु थिक। बाधमे आइसकिरीम आ दालमोठवला फेरी लगबैत रहै छै। रिनिया गुलो सँ पाँच गो टका मांगइ-ए-' बबा पाँच गो टका दएह। आइसक्रीम खेबै।' नै छै टका-' गुलो टिरीस कए कहइ- ए।' दाए ने हौ-' रिनिया खोसामद करै छै। ' नै देबहक-' रिनिया निराश भेल जाइ-ए। गुलो के तामस उठलै- ' हे गे छौड़ी, देखबिही,बड़ आइसक्रीमवाली भेली है। तेहन मारि मारबौ जे सब आइसकिरीम घुसड़ि जेतौ।' रिनिया उदास भाए गेल।ओकर मौलायल मुँह देख कए गुलो कए ममता लागलै। ओकरा लग दुइए गो टका रहै, दाय देलकै। रिनिया चेहरा पर मुस्की एलै।

रिनिया घरो मे काज आ बाहरो काज करयमे अशकताइत नहि छैक। आशीष चमन ' बेछप उपन्यास गुलो' मे लिखैत छथि- कन्दाहाबाली अपन पाइ- कौड़ी कें घर मे खर्च- बर्च नहि करैत छैक। ओकर निजत्व तखन पराकाष्ठा पर चलि जाइत छै,जखन ओ अपन बेटा 'सुजीत' कें ओधबाध उठाबैत छैक तँ रिनिया ओकरा रोकैत छैक। ननदि- भाउज आ बादमे देओरक मध्य मारिपीट भ' जाइत छैक। ओ अपन पति 'अरजुनमा' कें फोन क' कैं सासु-ननदिक खिधांस करैत छैक आ पाँच हजार टाका अपना भायक मार्फत अरजुनमा ' सँ मंगा लैत छैक आ बजार सँ ड्राम आनि ओहि मे बोनिबला तीनों मन गहुँम ढारि ताला मारि नहिरा चलि जाइत छै,जहनकि ओहि बोनिमे रिनिया सेहो साझीदार छलैक । मन्त्रेश्वर झा ' एक विशिष्ट उपन्यास: गुलो' मेँ एकठाम लिखने छथि-" लेकिन रिनिया तँ जुलुम छै। हँसै छै त' बुझाइ छै फूल झड़ै छै...। रिनिया 'क हँसीमे जादू छै। चुम्मक जकाँ खींचै छै। निश्छल निर्मल हँसी। इजोरिया जकाँ छिटकैत। ओकर चलै के , बोलै के , ताकै के ढंग लोक कें मोहि लै छै। जे देखलक देखते रहि गेल ।' एक बेर जखन रिनिया पाँच- सात टा छीमी एके बेर खा जाइ छै त' गुलो बरजै- ' ई छौंड़ी राछछनी जकाँ करै छै। एतेक कफ छै आ केला भकोसने जाइ छै। रामलोचन ठाकुर " गुलो : आजुक पराति" मे एकठाम लिखने छथि-: मिथिला दर्शन'क साहित्य विशेषांक लेल हम लिली रे, सुभाष चन्द्र यादव एवं केदारनाथ चौधरी कें आग्रह कएने छलियनि- उपन्यासक लेल । मुदा केओ नहिं द' सकला । विभूति आनन्द आ प्रदीप बिहारी 'क आभार। किन्तु दोसरो वर्ष हम सुभाष के चरियबैत रहलियनि आ अन्ततः ' गुलो ' हमरा प्राप्त भेल। एकटा नव ढँगक कांटी मैथिली उपन्यास । यात्रीक ' सत्य थिक संघर्ष' के साकार करैत विशुद्ध मैथिली उपन्यास । मिथिलाक , वंचित- अवहेलित मिथिलाक व्यथा- कथाक विलक्षण चित्रण । 'गुलो' मिथिला दर्शनक नवम्बर- दिसम्बर २०१४ मेँ प्रकाशित भेल रहय। रिनियोँ कें जखन लोक डिठिअबै छै त' ओकरा बापके तामस होई छै, ओ रिनिया कैं दमसबैए। ओ आइसकिरीम ले

पाई मँगै छै त’ फेर तमसाइए। मुदा दू गो टाका बहार क' रिनिया कें दैत छै। ओ अपन छोटकी बेटीकें संग करैत भागिनक वियाहमे जाइए। जेठ बेटी रूनिया ओतय सेहो लियाउन भ' के आयल रहैत छैक। से ओ जिद्द करैत छैक अपना संगे किशोरी रिनिया के सासुर ल' जाए ले ,तँ रिनियाक कहल वुध्दि वढ़ विशेष होईछ- ' हम नै जेबो गे बहिन। लोग कहत पेट पोसै लए आयल छै। बाप रोगाह भाए गेलै ;दिन टगि गेलै तैँ ने तू जाइ लए कहै छिही? नै जेबौ गे बहीन, नै जेबौ।'

बैद्यनाथ झा- गुलो : एकटा पाठकीय अभिमत मेँ लिखैत छथि- गुलो उपन्यासमे जौं हमरा सँ पुछी तँ ध्यानाकर्षक चरित्र रिनिया 'क लगैत अछि- निधोख, सिध्दांतप्रिय, स्वाभिमानी , परिबारक हितमे अपन स'खक ठोंठि मोक निहारि रिनिया। रिनियाक 'अण्डरस्टैंडिग' देखियौक जे अपने स'ख मनोरथ व्यक्त करैत अछि,कोना पूरत,तकर थाह- पथाह लैत अछि, मुदा परिस्थिति देखि चुप भ' जाइत अछि। चरित्र एहन धवल जे जेठकी बहीनक देओर नेरहूक कुदृष्टि चीन्हि जाइत अछि आ माय सँ कहैत छैक- ' ओकरा कही चलि जेतौक।'

अशोक " विकासक अनघोलमे गुलो" मे लिखैत छथि- मुदा गुलोक संसार मे जे सभ सँ देखनुक पात्र अछि से रिनिया अछि। बारह- तेरह बरखक छौंड़ी। मुदा 'जुलुम' छै।" जे देखलक से देखते रहि गेल। रिनिया ककरो किछ कहि दै छै। बात केहनो रहौ, खराब नहि लगै छै। एक टका मे दू गो बीड़ी दै छै। रिनिया के दू टा देलक त' कहै छै , ' इह बुढ़बा,दूइए गो।' बीड़ी बाला एकटा आर द' दै छै। पावरोटी बाला के कहलक, हो , तू बड़ा कंजूस छहक।' आ लहकलहा पावरोटी उठा लेलक। ककरो केरा खाइत देखलक त' बाजल, भैया,अपने टा खाइ छहक।' आ ओ एगो केरा द' देलक। मुदा रिनिया कोनो बातक रोख नहि रखैये। कोनो बात भेलापर फेर लगले काज मे भीड़ि जाइये। बूझू जे एतनीटा छौड़ी पुरा घर के सम्हारने अछि। मुदा छोट भाइ छोटुआ सँ ओकरा नहि पटै छै। सदिखन झझमझ चलिते रहैत छै। रिनिया कें घरक परिस्थितिक बोध छै।

विद्यानन्द झा,लिखैत छथि- जखन रिनिया एकबेर पड़ोसक बनियाके छोट बेटी सँ किछ ल' अबैत अछि त' सब ओकरा दुरदुर क' उठैत छैक। खगलो रहला पर गुलो गाछी सँ खसल आम बिछि क' ल' जाय बला कें किछ नहि कहैत अछि। रिनिया अपना लगक गाछी बला कें अपन गाछीक आम बीछि लेला पर लोभी कहैत अछि। मुदा अपने अनकर गाछी सँ लिच्ची चोरबैत ओकरा कोनो लाज नहि ,मात्र भय होइत छै।

कृष्ण मोहन झा 'मोहन' एहि पोथी मादे कहैत छथि- 'गुलो' अनुभूतिक गहनता मे लिखल गेल छोट आकारक पैघ उपन्यास थीक। गरीब जीनगिक नमरैत संघर्ष जकाँ ,धैर्य जकाँ आ दुख-व्याधि सहबाक अपरिमित शक्ति जकाँ । एकर अन्तर यात्राक सूक्ष्मता गद्यमे काव्यक आस्वाद दैत अछि आ शिल्पक सचेतनता सहज , स्वाभाविक अभिव्यक्ति मे कथा कहैत चलि जाइत अछि। ओ छोट कथाक पैघ

उपन्यास मे लिखैत,एतबे नहि एकटा आर प्रसंग मे रिनिया मालिक- मलिकाइनिक प्रशंसा करैत कहैत अछि जे- बंबई मे एक्के ठाढ़िमे दस बारह टा आमके घौदा छै। रिनिया सोचने-ए ई घौदे मालिक कए दाए देबै। मालिक बड़ खुश हेतै। एक बेर रिनिया गछपक्कू आम लाए कए गेल रहै त' मालिक पचास गो टाका देने रहै। मलिकाईन खाइ लए देने रहै।

आओर गंगानाथ गंगेश ' उजरल- उपटल गुलोक गुलजार दुनियाँ ' मे लिखै छथि- एक राति नौ वजे मे दशरथ मंडल (पलाई मील मालिक) के मुंशी गुलो लग एलै। कहलकै-गुलो भाय, एगो बड़का पेट के बात कहै ले आएल छियह। हमरा कंपनी पठेलकै-ए। नेपाल मे एगो लड़का छै। कम्पनी के साढ़ु के बेटा छिऐ। जथा- जाल बला छिऐ। बियाह मे जते खरचा हेतइ- दस बीस हजार से कंपनीए देतह। घरक लड़की छियैक। सब किछु देखल सुनल । तोहर की बिचार से कंपनी पुछलक-ए ।' आ चारि मास सोचैक बेटा सँ विचारैक समय लैत एकदिन भुमकम सँ पहिने अपने खत्म भ' जाईछ। ताहि सँ पहिलुकवे गप्प-; गुलोक घर पछुआर मे दू टा कदम के गाछ छै। अनवर कहै छै- गुलो एकटा गाछ बेच लएह। चारि-पाँच हजार मे बिकिए जेतह, ओहि सँ घर आ कल दूनू ठीक करा लिहह।' गुलो कहै छै- अनवर भाय, ई दुनू गाछ रिनियाक बियाह लए राखने छिऐ।' अनवर अबाक् भाए जाइ-ए ।

माय के मनो कयला पर धरि ५०० मे रिनिया पाठी आनि पोसलक ,ओकरा धारतै। दू दिन धरि बरखा होइते रहलै से आरा पर मुँग तिलकय लागल रहै, रिनिया करिया छीमी बिछलक। एक पौवा दाना निकललै। से पहिल तोड़ मे सँ सतलरेनमा के दालि खाय ले दाए एलै । ऊ बीश टका देने रहै। रिनिया जुगताकए टाका राखलक,ककरो नहि देत। एहि तरहेँ आरो संदर्भ सुनल जाए! रिनिया असकरे दू दिन मुँग (खेरही) तोड़लक। एक-एक छिट्टा। एक दिन दूनू मायधी तोड़लक। दू टा जनो तोड़लकै। रिनिया मूंग सुखेलक। डंगेलक। आठ- नौ किलो तैयार भेल हेतै। एक छोहन और टुटतै। ओइ मे जे निकलै। पानि जे नै भेलै से मुंग मुनही भाए गेलै। गुलो कहै छै-'मूंग तैयार भेल छै से सभटा गिरहत कए दाए एबै। बेलाबाली जोड़ई छै। हड़ लागलै,बीया लागलै, सबटा दाए एतै तऽ पूँजियो डूबि जेतै। कहइ छै- " एते जे खरचा भेलै से घर सए देबहक? एहन खेती लोग किए करतै?

अरजुनमा गाम अबिते पहिले चाहक दोकानक मुंह अंगना दिशन घुमबैत टाट जे लगौलक से दम घुटैत गुलोके रूग्न अवस्थामे पुंगेलक। आ मुइल बापके रिनिया नहि जगा सकली। से सरकारी बीस हजार प्राप्त टाका भागिन गोठटोल सँ आबि रातियेमे अपना ओहिठाम ल' गेल। प्रातभने रिनिया ओई ठकहरबा भाय सँ सब टाका डटियारी सँ धरि माँगि आनलक। कोशिकनहा क्षेत्र मे रिनिया सन अनेको अति पिछरल-गरीब मुदा बहादुर ललना अपन उत्कर्ष देखाबैछ।

परिचय - प्रकाश : एक परिशीलन

प्रकाशक - श्लोक प्रकाशन, दरभंगा वर्ष -२०२१ पृष्ठ संख्या २९५ मुल्य ३५० टाका एवं ISBN -९७८ ९३८०५५४ ९८३ मैथिली भाषा मेँ पोथी हमरा पंचायत 'क रहवासी रचनाकारके पढबाक सौभाग्य प्राप्त भेल हन। प्रस्तुत मैथिली पोथी 'परिचय प्रकाश' मेँ आकलन कर्ता लेखकीय काज अपन स्वयं केर रचना कयल गेल "परिचय" काव्य विधा'क निहितार्थ पाठक बीच रखबाक अनोखा रहस्योद्घाटन कयलाह अछि। सद्यप्रकाशित एहि गद्यांश लेखनमे ५१ शिर्षकके विविध विषयक दिग्दर्शन होईछ। एहि पोथीक गुणवत्ता आ उपयोगिता बावत वरेण्य साहित्यकार डॉ ० इन्द्र कान्त झा'क प्राकथन पृष्ठ संख्या ९ आ १० मेँ सुस्पष्ट वक्तव्य भेल छन्हि। पोथीक पाठक लेल ई कथन मूल पाठ ५१ गोटके आखरिमे लागल रहैत तँ यथेष्ट बुझाइत। मुदा से आने पोथीक तरहेँ एहू 'यूनीक' पोथीमे विशेषता नै भ' सकल। आब अबैत छी टीकाकार लेखक के आत्मानुभूति कयल गेल लेखन कार्यक समीक्ष्य दृष्टिकोण दिश। परिचय ' पोथीक ' काव्यालोकन आ तकर निचोड़ पर समीक्षा पोथी वा पाठकीय प्रतिक्रिया समय सँ पटल पर आबयमे देरी होईत रहने ई जीवटपन अपनहि कलम सँ लिखबाक धृष्टता करैत लेखन जगतमे एसकर ठाढ देखाएल य। जीवराज अपन काव्य क्षमताक बनसव्त गद्य लेखनमे प्रविणताक परिचय सेहो देलनि अछि। तेँ एहि मादे ' युगक यथार्थ एलवम' कहैत प्रो० इन्द्र कान्त बाबू एहिक सार्थकताकेँ उचित समालोचना कहलनि। पोथीक भीतर एकावनटा कविताक भावार्थ विस्तृत रूपेँ कविता'क पाँति सहित व्याख्यान उपस्थापित करब एक नव प्रतिमान गढ़ब कहल जाएत। एहिक किछ पाठकेर सौन्दर्य बोध पाठक ले पृष्ठभूमि केँ उकेरब कोनू विन्यास नहिँ अपितु एक स्वानुभुति छी। कियाक तँ एहि सँ हम अपनाकेँ सम्पृक्त नहिं रहि सकलहुँ। लेखकक दाबी छैन जे मनुष्य मात्रमे आत्म जागरूकता'क क्षमता छैक,आ तेँ मन ओ बुद्धिक दायरा सं परे होय; परम साँच केँ बुझा समैझ सकय। अध्यात्मिक उपचार नै, खाली रोगक निदान ले एकटा व्यापक अविधान आ जीवन मार्गक दिव्य दृष्टियो रखै य। अपन नव पोथी माध्यम सँ सबमे खामी ; ताहिके खासियत मेँ बदैल उपभोगक आवश्यकता दिस प्रकाश करैत ' परिचय प्रकाशमे परिस्थितिवश डुमकि लगाकय असंतुलन सँ सिंघल जा सकैछ। तेँ सम्पूर्ण जनतब लेल परिचय काव्य केँ परिचय प्रकाश केर आवश्यकता भेल। लेखक स्वयं अपन कविता संग्रह पोथीक आवरण तस्वीर सपरिवारक उपलब्ध कराबैत पाठकके 'हम दू हमर दू' केर संदेश दैत मूल पोथी पल्लवी प्रकाशन आ द्वितीय संस्करण नवारम्भ प्रकाशन के संग- संग समीक्ष्य पोथी परिचय प्रकाश के पछिला कभर पर अपन तस्वीर मे आजादी के दिवानाक प्रतीक सरदार भगतसिंह सन टोपी पहिर मिथिला पागके जगह मुरेठाके

सेहो चुनौती दैत आंचलिकता उपर राष्ट्रव्यापी दृष्टिगोचर होयत। हिनक पोथीक प्रशंसामे मैथिलीक विज्ञान कथाकार श्री अर्धनारीश्वर, पूर्व भाजपा सांसद वीरेंद्र कुमार चौधरी , श्री रघुवीर मोची, दिव्यांशु आ अभिषेक आदि छथि। पाठकके आ स्रोताके नवोदित कवि जीक कविता यूट्यूब पर सुनि मनोरंजन होय छैन। हुनक आखरी कविता हमरा उत्प्रेरित करलक -:

..... नर मच्छर बड़ा खच्चर
राखय जारी जेहाद आ दंगा
मादा मच्छर बड़ी पिच्छर
अंडहि पाड़ैत चंगा
सभक शांति कएलनि भंग
मच्छर ई दू- टंगा
दुनियांक कोन-कोनमे पसरल आई
नहिं छलाह पहिने ई बहुसंख्यक भाई
हवाक विरुद्ध
जे अपन रफ्तार साबित कऽ देखौलक ..!!
भजनहु संध्यामे
अपमहु मंजिल पर
अपनहि रागमे नमाज सुनौलक
हमरा मच्छरदानी धरि पहुँचौलक
सीमहुमे नहिं सुरक्षित आब बुझाई छी ।
मनुक्खमे जनम लेलहुँ
हम तेँ पछताई छी।...,..,.....

(कोसी संदेश अंक-१२ सँ साभार)

दीनानाथ प्रसाद ' जीवराज ' जीक लेखनशैली अद्भुत होई छैन, जाहिमे अधिकतर शव्द चयन पाठकके सुनकर नै अरघैत रहैत छैक। वानिकी द्रष्टव्य -:

'परिचय' पोथी मैथिली भाषा मेँ हमर पहिल आ अंतिम काव्य संग्रह छी। जकर किछ कारण तऽ हम कहियो नहि कहि सकब वा नहीं कहय चाहब। मुदा जे कियो साहित्यकार वा समीक्षक लोकनि कवि जीकेँ नाम पर मैथिलीमे एकहिटा काव्य संग्रहक बात उठबैत छथि,हुनका सँ हम कहय चाहैत छियन्हि जे- हुनक व किनकहु सैकड़हु सिहित्यिक पोथी अमावश्याक अन्हारमे आकासक टिमटिमाईत तारासन पियरगर जरूर लगैत जैन मुदा पुनमक चानक इजोरियामे भागैत अन्हरियाक संग वएह अनगिनत सभ

ताराक आभा सेहो मद्धिम व मलीन भऽ जाइत अछि। तँ कि चानक संख्या एकहिटा रहलाक कारण समस्त तारागण ओकर प्रभावकें कम कहां कऽ पबैत अछि। तखन नभ नक्षत्रमे मात्रहि पूनमक चानहिटा सोहनगर लगैत अछि। 'परीचय: काव्य संग्रह सँ सेहो एहने दिव्य ईजोत बहराइत अछि। जीवराज जी दक्षणि मैथिली आ पचपनिया मैथिली सँ इतर अभिजात मैथिली मानक सँ कनेमने मिलैत-जुलैत शव्दक चयन करबामे निष्णात देखेला हन्। आश करैत छी हिनक मैथिली गीत पोथी सेहो यथाशीघ्र बहराएत।

आजुक जीवन-आजुक साहित्य

वरेण्य साहित्यकार श्री नन्दविलास राय कृत"पईत" एकांकी संचयन मैथिली भाषा क' पोथीक हालहिमे मधुरा गाममे "सगर राति दीप जरय'कथा गोष्ठीमे लोकार्पण भेल रहय। प्रसिद्ध पल्लवि प्रकाशन-निरमली बेरमा सँ ९४पृष्टक एहि सामाजिक लघु नाटिका कैँ प्रकाशित कयल गेल अछि,जकर १५० टाका किमत राखल गेल छैक।एहि चर्चित पोथीके ISBN प्राप्त भेल छैक।पोथीक मादें लेखक श्री रायजी बढैत दहेज प्रथा केर समस्या पर पाठकके ध्यान आकृष्ट करैत कण्या भ्रुणहत्या पर चिंता व्यक्त कयलाह अछि। अनेकों विधामे हिनक लेखनिक हम कायल छी,ग्राहक पोथी समीक्षा पढि बजार सँ किनैत छथि से एहू पोथीके खूब बिकेबाक आश जगैत अछि।छुहक्का उड़ैत एहि पैथीमे दूगोट एकांकी"पइत"आ लाजवाब संग्रहित छैक।क्रम०८सँ३६धरिमे पोथीक नामकरण क'शिर्षक"पइत" आ पृष्ट सं० ३८सँ ९४मेँ "लाजवाब"पाठ छपल छैक।एहिमे पात्र २२टा रखला सँ कनेक दुरूह सन लागैत छैक।पइत मेँ १३केर जगह मात्र छ:टा दृश्य देल गेला सँ हलुकसन बुझाइछ।तैयो पाठक एक सुर सँ सद्यप्रकाशित एकांकी कैँ पढि सकैछ; कियाक तँ मनलग्गू छैक। ग्रामीण क्षेत्रमे एहि एकांकी कैँ नुक्कड़ नाटक रुपेँ सेहो देखेबाक काज भविष्यमे भारत सरकार , युवा कार्यक्रम एवं संस्कृति मंत्रालय आ दृश्य निदेशालय करथि तेँ जन जागरूता बढ़तैक । 'पईत 'केर आखरी दृश्यक अंतिम वाक्य एहि तरहेँ छैक....हमर सभ केलहा-धेलहा पानिमे चलि जाएत।

मोहन बाबू:(लाल बाबू सँ आवेशमे)अहाँ चुप रहूं।अहाँक पैत हम राखब।(मोहन बाबू शोभाकान्तक पैर पर सँ पगरी उठा लालबाबुक माथ पर रखैत छथि।)प्रकाश अछिने,हमर बेटा प्रकाश ।ओकर बियाह अहाँक बेटी सँ अखन हएत -अखन।थोपरी दर्शक दिश सँ बजैत पर्दा खसैत छैक,तकर समीक्षा पाठकके बीच पछिला मास हम कयने रही,जे देसील वयनामे मुलरुप सँ पइत बहराइल रहय।तेँ आब लाजबाव पर सोझे संक्षिप्त मेँ आबय चाहैत छी। अतिपिछड़ल वर्गक विवेक कुमार २७वर्षीय जुबक गरीबीमे रहैत मेधावी छथि जे आई ए एस बनि पहिल बेर रामनगरक अनुमंडलीय पदाधिकारी रहैत मामा मुरारी लाल संग हुनकर समैध रिलाइंस केर इंजिनियर मैलाम गामवाशी सँ हुनकबेटी जे एम ए०,जे एन यू सँ छन्हि,जिनक वियाहक चर्चा टारैत अछि।फेर एकटा विरौलक अनुमंडल पदाधिकारी अंजली कुमारी सँ सेहो वियाहक चर्च कैँ अनठबैत छैक।आ फेरो प्रस्ताव रामपुर केर कलक्टर बनिते अबैछ ,एहिक ले विवेकजी अपना विवेक सँ काज लैत देखेलाह अछि।भेलैक ओना जे ५०लाख टाका नगद दिल्ली मेँ फ्लैट आ चारि चकिया मोटरगाड़ीक आफर ल'कैँ पी ए० साहेब वार्ता करैत छथि जे अपने अवश्य

वियाह कयल जाय,कन्यागत खूद सवर्ण गृहमंत्री छथि,से जौं बात नहिँ मानबै तँ नक्शली इलाकामे तबादला कर देल जायत।धमकी सँ विवेक सर केर मन विचलित नहिँ होई छथि।ललीत दुल्हा अपन काका अच्छेलाल जीके मध्यस्थामे अनुचारी दीनाक दिव्यांग बहीण जे, बीए०मेँ अंजली पढल छैक ;केर संग वियाहक घरदुआरी लगलापर बराती आ सरातीक बीच बरमालाकाल हरमाज करैत विनु कारण फसाद करैत छैक।विवेक जीके समझेला पर हुनके खुद लंगरी कन्या करय कहैत छन्हि। मनुष्यता समाप्त होइत देख ओ दुखी भेल ,दीनाके ठोस आश्वासन देलैन आ अही मंच पर स्वयं डीएम साहेब तिरस्कार भेल परीवारक पइत राखि मय टुअर-बप टुअर दिव्यांग कनियां अंगिकार करै छथि।कलान्तरमे एक बेटीक जन्मक पछाति अपन नशबंदी धरि कराय ,एक आदर्श समाज बीच उपस्थित करयमेँ पत्रकारक बीच लाजबाव मिशाल पेश करैत छथि। आरंभ मेँ मीडिया कर्मिगण केँ अपन आचरण संभाषण अनुकूल समय पर देखबाक संकेत केने रहथि,कन्या भ्रूणहत्या पर विस्तार सँ बाजल रहथिन। अपन बहिणक बिनु वियाहले आत्महत्या आ सदमा सँ माय'क निधन व बादमे बाबूजीक कहब ,जे गरीबक बेटीक उध्दार निशतुकी करीहह,सेज्ञनिकटी पर खड़ा उतरैत एहि एकांकी नाटक मेँ दृश्य भव्यताक संग प्रर्दशित करयमे लेखक दक्षता प्राप्त केलाह अछि।समाज आ सरकारमे लालची लोकक पोल फोलैत ई एकांकी संग्रह एक नव संदेश प्रसारित करबामे मैथिली भाषा साहित्य केर अक्षय भंडार केँ भरयमे एक डेग आरो आगू बढल।अनेकों एकांकी संग्रह रहैत एहि एकांकी केँ पठनीयता सब सँ भिन्न बुझाइत अछि।सजीबता पाठकके अंगेजने रहैत छैक, आखरी-आखरी धरि,इयह परिस्थिति क'विशेषता थीक।

'प्रगति के पथ पर' पढलहुँ

एकसय आठ पन्नाक सद्यप्रकाशित पोथी ' प्रगति के पथ पर ' मैथिली प्रेरणा परिषद श्रीपुर (दरभंगा) सँ लेखक श्री मोहन यादव जीक हिन्दी पोथी सन् २०२३ मेँ बहराएल अछि। ई प्रिंटवेल टावर चौक दरभंगा (बिहार) सँ छपेलनि, एकर दाम ४०० टाका छैक। एहि गद्य पोथीके ओ अपन माता-पिता,काका-काकी, भाय-भौज'क सम्मान मेँ समर्पित कयने छथि। श्री मोहन जी वैज्ञानिक आधार पर समाजक लोकमे सुधार आनबाक लेल अपन जीवनके अनुभव गनबैत ई पोथी रचलैन हन्। एहि सँ पहिने हिनक २०१३ मेँ कारू चालीसा , २०१५ मे गजल संग्रह ' जे गेल नहि बिसरल' आ कविता संग्रह २०१८ मे ' समयक गति से' तथा २०२१ मे कथा संग्रह - सारांश निकलल य। एहि रचनाशीलता केँ देख हिनका भुवनेश्वर सिंह ' भुवन' राष्ट्रीय शिखर साहित्य सम्मान, साहित्य साधना सम्मान, पं० विपिन पाण्डेय हिन्दी सेवा सम्मान आओर यात्री पुरस्कार भेट चुकल छन्हि।

दरिभंगा जिलाक सकरी कन्हौलीके निकट श्रीपुर गाममे स्नातक पास मोहन जीक जन्म सुकमारी देवी आ परमेश्वर यादव जीक घर ३१ दिसम्बर १९५० ई० केँ भेलनि। आओर स्व० मंजू गोपाल संग बियाह भेल रहनि। श्री यादव जी सहरसा सँ " सूत्रधार" पत्रिका केर सम्पादन करैत आबि रहलाह अछि। हिनक कहब छैन- " व्यवहारमे हम देखैत छी जे मंडील - महजीत , गिरिजाघर, आओर गुरूद्वारा'क संख्याँ जतेक बढ़ल य ,ओहिक खराय आ तामझाम जतेक राश बढ़लैक,तै सँ सहस्त्र गुणबेसी पापी लोकक संख्या बढि गेलैक हन्। ओकर दुःख द्रद मेँ खूबे बृध्दि भेलैक मुदा कष्ट निवारण किछ नै। गंगामे नहाति - नहाति अधिकतर लोक गंगाजलकेँ घोंकलक आ गन्दा केलक अछि। परंच किनको मोनक मोइल नहि मोलल गेल छैक। से सरिपहु आरो अधिक मोन मलिन होईत विचार- वेवहार दुर्गन्धित भेलैक अछि। लक्ष्मी पूजा भारतमे होइतो गरीबी छैक। मुदा रूस, अमेरिका,चीन, जापान, इंग्लैंड, फ्रांस, जर्मनी, डेनमार्क, इजरायल, अरबके देश आ सिंगापुर धनिक छै,जहनकि ओतय लक्ष्मीजी नै पूजित होईछ। संगहि ओतुका देश म सरस्वती पूजन सेहो नहिं चलैन रहैत विद्वान तँ घनेरो छैक। हिनक पोथी पढ़ल लिखल समाजमे नवजागरण करय आ अंधश्रधा हटावय जे विस्वास जगैत अछि। पोथीमे यात्रा वृत्तांत'क एक रोचक दृष्टांत हिनका रचनामे इहो छैक,यथा-: १ जून २०१३ ई० । हमरा जीवनक एक एहेन परावकेर सुखद मुरेठ आयल जे आई ऐ मुकाम पर आबि गेल छी, जतयधरि पहुंचय ले जानि नै लोक कतेक जतन आ खरच करबाक वादो नहिये टा जा पबैत छैक। लोकक नियारल सपने धरि बनल रहि जाईछ, सपना साकार नहि भ' पबैछ। थाकि हारि लोक परियास करबो

केनाई तखन छोड़ि दैछ। वा ई कहू जे ओ कालक भेंट वृध भ' चढ़ि जाईछ।

ओई दिन हम बाबा रामदेव जीक पतंजलि केर फेज-२ स्थित पारकके मंडपमे बैस कैं लोकक आध्यात्मिक, मूर्तिपूजा, अंधविश्वास, पाखंड आ कर्मकाण्ड सँ संवंधित सबालके जवाब द'रहल छलूँह। हमरा समक्ष आ अगल-बगल बैठल लोकमे सँ एक रहथि बनारस जिलाके सारनाथ थाना अंतर्गत व्यासपुर निवासी जे दिल्ली संगम विहार केर रहयवाला बाबू प्रेमचन्द यादव जी। लगधक दूई घंटा धरिके प्रश्नोत्तरी केर वादे कियो कतौह गेलाह। सबसँ आखरिमे ओ हमर नाम पता पुछलनि,अपन सेहो नाम पता जनेलाह। इहो बतौलाह जे ओहो एतय वाल्मीकि आश्रममे टिकल छथि। कनिये कालक गप्प - सप सँ बुझना गेल जे हमरे जँका इहो मूर्तिपूजक नहिं छैथि। आ प्रकृति आ विज्ञानमे विसबास करय बाला विद्वान छथिन। तैं हमरा दूनूक बीच आत्मीयता क' भावना अंकुरित भेल जाइत रहय। रतुका खाना पतंजलि'क भोजनालय " प्रसादम् " मैं कयलाक वाद दूनू गोटेए वाल्मीकि आश्रम केर अपन-अपन कोठलीमे सुतय चलि गेलहुँ। प्रातः भने भोजनालय केर उपर बनल योग साधना कक्षमे योगासन कयल,संगहि प्रभात कालीन सैर करैत बहरेलौं। लगधक दू घंटा टहलबाक क्रममे एतेक लगीच आबि गेलहुँ जे आगू यात्रा संग - संग करबाक निठाही कएल। औतय सँ जलपान कयलासन्ता आश्रम डेरा पर एके कक्षमे आबि रहैत १० दिन ओहिठाम सँ हरिद्वार, ऋषिकेश, देहरादून एवं मसुरी भ्रमण कयलहुँ ।

ताहिक्रममे केदारनाथ, बद्रीनाथ, यमनोत्री आ गंगोत्री घुमय जेबाक नियार भेल। हरिद्वार सँ रिजर्व टैक्सी गाड़ी हमसब लैत गौरीकुंड पहुँचलौं। अगिला दिन भोरे जलखई खेलाक बाद पैदल केदारनाथ दिस विदा भेलहुँ। साँझमे केदारनाथ पहुँचल, घुमैत-फिरैत राति विश्राम कए अगिला दिन १६ जून 2०१३ कैं दुपहर 2 बजे गौरीकुंड लेल विदा भेलौ।

करीब दस किलोमीटर चललाक बाद एकटा जोरदार हल्ला सुनबामे आयल। निकटमे कतहु भारी विस्फोट भेल अछि। एकर बाद एकटा अजीब आवाज लोकक पीछा करय लागल। आवाजक तीव्रता बढ़ि रहल छल। हम सभ तीस गोटे एक संग चलैत रही। कोनो अप्रिय घटनाक चिन्ता सँ हम सब डेराए गेल रही। हमरा सभकैं किछु बुझबासँ पहिने सँ आगू बहैत मंदाकिनी नदी उग्र रूप लेबऽ लागल छल । उँच - ठाढ़ पानिक धारा करीब पन्द्रह-बीस फीट धरि सब किछु अपना संग ल' क' जा रहल छल। खतराके अशंका करैत हम सब तुरंत पहाड़ पर चढ़ि गेलहुँ। जे चढ़ि नहि सकल, ओ मृत्युक पचड़ामे खसि पड़ल।

पहाड़क नीचाँ तबाही देखि हम सब खूब डरा गेल रही। ऊपर सँ लगातार बरखा हमरा सब लेल माथ दर्द बनि रहल छल। सबहक सोझाँ मृत्युक तबाही मचा रहल छल । किछ गोटेय नीचाँ नहि जा सकल आ ने

ऊपर चलि सकल। जंगली शिकारी जानवरक डर अलगे-अलग परेशान करय बला छल। साँझ होबय बला छल आ राति मे भोजन, पीबय लेल शुद्ध जल आ आराम करयके जगह नहि छल.

हमसब भय सँ अक्रान्त पहाड़ पर जागल राति बिता देलहुं। सब कियो भूख-प्यास सँ कानि रहल छल। जाड़सँ सिहरि रहल छलाह। चलबाक सामर्थ्य ककरो नहि छल। तैयो एखनो लोक चलैत छल। 'हर हर महादेव' सुना क' चारि गोटे केदारनाथ कैँ प्यारा भ' गेल छलाह। रास्ता मे आओर कतेको मृत शरीर देखल गेल। नीचाँक बाट पानि मे डूबल छल। एकोटा घर कतहु नहि देखाइत छल। तैँ पहाड़ पर चलैत आगू बढ़ब हमरा लोकनिक मजबूरी छल ।

मरैतो पर लोक की नै करै छै। गाछक पात चीबाबैत आगू बढ़ैत छी। तेसर दिन हमरा लोकनि कैँ जीवित रहबाक आशा फेर सँ भेटल। हेलीकॉप्टर सँ भोजनक पैकेट आ पानिक बोतल खसा देल गेल। किछु दवाई सेहो छल। भोजन केलाक बाद फेर आगू बढ़लहुं। चारिम दिन सेहो पहाड़ पर जंगल मे रातिजगा कय बिताबय पड़ल।

पांचम दिन ४ बजे हमरा सबके हेलीकॉप्टर रेस्क्यू सँ बचा क' देहरादून केर कैंपमे आनल गेल। तुरत भोजन देल गेल आ जांच के बाद दवाई देल गेल। चारिमे दिन हमरा दुनू मित्रके एक-एक हजार रुपैया देल गेल आ घर जेबाक अनुमति भेटल रहय।

ओहि त्रासदीमे करीब दस हजार लोकक मृत्यु भ गेल रहैक । किछु लोकक मृत शरीर तक नहि भेटलैक। हजारो घर तबाह भ' गेल। लोकके अरबों टाकाके नुकसान भेल छल, सड़क टूटि गेल छल। लगधग सबटा पुल नष्ट भ' गेल छल। बिजली आ इंटरनेट सेवा पूर्णरूप सँ बाधित भ' गेल। विनाशक मलबा चारू कात छिड़िया गेल छल। ककरो ख्याल रखनिहार कियो नहि छल। बाबा केदारनाथ सेहो एकदम सँ चुप भ’ गेलाह।

आइ फेर केदारनाथ चर्चामे छथि , तैँ पुरान स्मरण तरो ताजा भ' गेल अछि । समाचारके अनुसारे मंदिरके अभयारण्यमैँ अरबों टाकाके सोनाकैँ पीतैरमे बदलल गेल अछि। चोरी आ बेईमानी करय वालाके हिम्मतके प्रशंसा महादेवके सामने गर्भगृह मैँ करय पड़त। हमरा लगैत अछि जे चोर, बेईमान, भ्रष्ट, बलात्कारी आ हत्यारा सोचैत अछि जे महादेव ओकरा कोनो नुकसान नहि क' सकैत अछि ! यैहटा कारण अछि जे मंदिरमे सेहो बिना कोनो भयके पाप होइत रहैत अछि |
दोसर दृष्टांत सेहो देखू-: शनिपुराके शनिदेव मंदिर बहुत प्रसिद्ध छै | नित्यदिन देश भरि सँ भारी संख्याँ मे लोक पूजाक लेल एतय अबैत छथि । एक अनुमान केर अनुसारे एतय रोज दस क्विंटल सरसबके तेल, साठि सँ सत्तर हजार फूलडाली भरल आ करीब एक सौ क्विंटल मिठाई बिकाइत अछि। एकर

अतिरिक्त लोक एहि मंदिर सभमे रोज करीब चालीस लाख टाकाक' दान दैत छथिन्ह. एहि ठाम होटल आ वाहन 'क कारोबार सेहो नीक अछि। पनपैत अछि। किराना, कपड़ा, फल, फूल आ सइंगआर-पेटारके दोकान सेहो कतौह सँ कम नहि अछि।

हम अपन व्यवसायिक काज समाप्त कए अपन गाड़ी मे बैसि गेलहुँ। ड्राइवर साबुन कीनय लेल किराना दोकान पर ठाढ़ छल। एम्हर धरती एहि तरहेँ काँपय लागल आ काँपय लागल ऐ तरहेँ जे मीनटके भीतरे समस्त शनिपुरा खंडहर मे बदलि गेलै । मंदिरक अतापता सेहो गायब भ’ गेल। जे घरमे छल ओ मलबा केर नीचा दबि गेल आ जे बाहर छल ओ भागय लेल एम्हर-ओम्हर दौड़ैत हकमैत छल । हमर ड्राइवर भागि गेल। मुदा गाड़ी करीब सौ मीटर आगू बढ़लाक बाद फँसि गेल। ओतय सड़क फाटि गेल छल। किछुए कालमे हजारों गाड़ी आगू-पाछू फँसल। सब ठाम चिचियाहटि आ घबराएल के दृश्य छल।

किछु लोक अपन जान बचाबय लेल गाछ पर चहैर गेल छलाह. हमहूँ ड्राइवरक संग गाछ पर चढ़ि गेलहुँ। बीस मिनटक बाद गाछ फेर काँपि उठल। जे किछु बचल छलैक धरती, ओकरा सेहो भस्म करबा पर झुकल छलैक। हजारो गाछ खसि पड़ल आ हजारो गाड़ी जमीन मे दबि गेल। धन्य हो। जाहि गाछ पर हम सभ शरण ल' रहल छलहुँ से नहि खसल। भरि राति ओही गाछ पर भोरक प्रतीक्षा करैत रहलहुँ । धरती बीच-बीच मे काँपैत रहल। मुदा एकर कोनो असरि नहि भेल। कम्पन कमजोर भ’ गेल छल।

भोर होइते स्थानीय लोक गाछ पर स उतरि अपन परिजनके हालतके विषयमे पूछताछ केलक। जे बाहरक छल आ गाड़ी छलै, से अपन-अपन गाड़ी तकबा लेल निकलि गेल। हमहूँ ड्राइवरक संग गाड़ी खोजबा लेल निकललौं। गाड़ी दरारिमे एहन तरहेँ पैसल छल जे झट बाहर नहिँ निकालल जा सकल।

आब हमरा सभकेँ खाली समस्ये समस्या छल। हमर घर साठि किलोमीटर दूर छल। ओतय पहुँचब आसान नहि छल। हमरा काफी भूख आ पियास लागि रहल छल। कतौह पानि नहि देखाइत छल। किछु खायके कल्पना तक करब असंभव छल। तखन हम ड्राइवरके संग घर दिस बढ़य लगलहुं। मुदा आगू बढ़ब बहुत कठिन छल। सड़क पर मलबा छिड़िया गेल छल। खसल गाछ सँ सड़क सेहो जाम भ गेल छल। कतेको ठाम दरारि पड़ल रोड सेहो हमरा सब कए आगू बढ़बा सँ रोकि रहल छल। तइयो मुईला पर की नहि होइत छैक? आगू बढ़बाक प्रयास करैत रहलौं।

बाट ततेक कठिन छल जे एक घंटामे दू किलोमीटर पैदल तक नहि चलि सकलहुँ । भूख, प्यास आ अशोथकित देह ततेक ने बढ़ि गेल छल जे ठाढ़ रहब बढ़कठिन भ' रहल छल। खाइ-पीबैक कोनो सम्भावना नहि छल। बुझायल जेना बाँचल लोक भूख-प्यास सँ मरिए जायत।

चारू कात कानखीज आ चिचियाहटि के कारण माहौल भारी भ रहल छल। ककरो सँ किछु माँगबाक वा मांग करबाक स्थितिमे कियो नहि छल । अन्हारमे सब कियो दौड़-धूप क’ रहल छल।

खसल गाछ पर किछु काल आराम केलाक बाद फेर आगू चलय लगलहुँ । मुदा दस मिनट चललाक बाद हमर पैर जबाब दैत बाहर भ’ गेल। तखन ओतहि खसल गाछ पर बैसल। ओतहु किछु लोक बैसल आ लग मे पड़ल छल।

करीब 12 बजे एकटा हेलीकॉप्टर हमरा सब पर पानिक बोतल आ बिस्कुट केर पैकेट खसौलक। हमर ड्राइवरकेँ चारि बोतल पानि आ पाँच पैकेट बिस्कुट भेटल। तखन हमरा लोकनि केँ किछ होश आबि गेल।

हमसब फेर बिस्कुट आ पानि ल' क' आगू बढ़लहुँ। साँझमे एकटा शौचालयक आगू सड़क पर बैसि जाय गेलौह। ओतय बड़का भीड़ छल। शौचालय एतेक गंदा छल जे ओतय रहब कठिन छल। कतहु एक बूंद पानि नहि छल। ई सोचि हम सभ आगू बढ़लहुँ।

कतहुँ बिजली नहि छल। चारू कात अन्हारक साम्राज्य स्थापित भेल। करीब सय मीटर आगू बढ़लाक बाद सड़कक कातमे एकटा छोट सन पोखरि देखबामे आयल। एतय सेहो बहुत भीड़ छल। दुरगंधसँ हमर नाक फाटल जा रहल छल। एखनो लोक जमल छल। ई ओकर मजबूरी छलैक। हमरा सभकेँ सेहो एहने मजबूरी छल। तेँ एतहि राति बिताबय नीक मानल गेल ।

अगिला दिन सूर्योदयसँ पहिने आगू बढ़लहुँ । दू घंटा चललाक बाद जान बचेबाक आशा छल। ओतय ग्रामीण केर सहयोग सँ भोजन बांटल जा रहल छल। खूब खयलहुँ। एतेक स्वादिष्ट पुरी तरकारी हमरा कहियो नहि नशीब भेल छल।

गामक लोकक आग्रह पर गामक पोखरिक महार पर बनल स्कूलमे गेलहुँ । शौचालयमे शौच केलाक बाद पोखरिमे नहा लेलक सब। दू-तीन घंटा सुतलाक बाद फेर आराम सँ घर दिस विदा भेलहुं।

मुख्य सड़क पर पहुँचलाक बाद फेर पुरी आ तरकारी खा कए आगू बढ़लहुं। पाँच किलोमीटर पैदल चललाक बाद हम सब सुखपुरमे राति बिताबयके निर्णय लेलहुं। एतय सेहो गामक लोक द्वारा राहत शिविर चलाओल जा रहल छल |

अगिला दिन फेर सूर्योदय सँ पहिने आगू बढ़लहुँ। एखन धरि सवारी सड़क पर नहि चलि रहल छल। सड़क पर बड़का-बड़का दरारि पड़ल छल। किछु मोटरसाइकिल चलैत देखल गेल। बिजली आ इंटरनेट क सुविधा बाधित भ गेल।

सात किलोमीटर पैदल चललाक बाद गामक लोक द्वारा संचालित राहत शिविरमे भोजन केलाक बाद फेर आगू बढ़लहुँ। एहि तरहेँ रस्तामे गामक लोक द्वारा संचालित राहत शिविरमे भोजन आ आराम केलाक बाद छठम दिन अपन घर पहुँचलहुँ ।

गाम आ घरक हाल सेहो नीक नहि छल। मुदा शनिपुरा सन स्थिति एतय नहि छल । एतय जान-मालके नोकसान कम छलै। किछु घर ढहि ढनमना गेल छल। मुदा बेसी घर मे दरक्का लागल छल। किछु घर आवासक लेल एकदम योग्य नहि छल । एतहु मोटरबला सड़क नहि छल। एहि ठाम सेहो बिजली आ इंटरनेटक सुविधा बाधित भ' गेल। तइयो एतय सेहो गामक लोक द्वारा राहत शिविर चलाओल गेल रहय | हमर परिवारक सभ सदस्य सुरक्षित रहथि। मुदा घर क्षतिग्रस्त भ' गेल। ओ रहय जीबय योग्य नहि छलैक। तेँ घरक बाहर एकटा अस्थायी शेडमे सब कियो रहैत छल ।

रातिमे सुतैत काल मोनमे किछु प्रश्न चमकय लागल। आखिर एहि देव-देव-देवताक कोन काज? एतेक मंदिर-मस्जिद आ चर्च-गुरुद्वारा किएक बनल अछि? एतेक पूजा, प्रार्थना आ इवादत कियैक होइत अछि? एतेक पाबनि आ व्रत किएक होइत छैक? एहि सबहक बादो चोरी, डकैती, बेईमानी, भ्रष्टाचार, ईर्ष्या, बलात्कार, हत्या, भूख, कुपोषण, रोग, महामारी, भूमकंप, बेसी बरखा, रौदी, अशिक्षा, महंगाई आ गरीबी किएक बढ़ि रहल अछि? ई देवता-देवता अपन घर किएक नहि बचा सकैत छथि ? मंदिरक मूर्ति चोराबय वालाके चोरी करय सँ किएक नहि रोकि सकैत छथिन्ह।

हम भरि राति एहि सभ तरहक प्रश्नक उत्तर ताकैत रहलहुँ । अंत मे एकटा उत्तर छल – दृश्यमानक प्रमाण की अछि ? जे होइ छै, किछु दैत अछि। जे नहि होइत छैक से उ की देत खाक !
जातिय आधार पर भारतमे श्रेष्ठता बोध मानवता पर प्रश्नक नम्हर चेनहासि ठार करैत अछि। जातीयता संकीर्णता सँ ऊपर ऊठि मोहन यादवजी पैघोत बोधकेँ हीन भावना कहैत बुझू जे सिरे सँ खारिज करैत छैथ।

टटका मैथिली पोथी

सगर राति दीप जरय'क कथा गोष्ठी बेरमामे दि० ३०-१२-२०२३ कैं सुसम्पन्न भेल रहय। ओहिठाम लोकार्पित ' मटाएल ज़िन्दगी ' १०६ पृष्टक पोथीक दाम २०० टाका छैक। दू दर्जन नवकथा'क संग्रह , वयोवृद्ध कथाकार श्री कपलेश्वर राउत जी अपन स्व० पिता,माय ओ पत्नी कैं समर्पण कयने छथि। से पल्लवी प्रकाशन निर्मली सँ प्रकाशित करेबामे अपन ग्रामीण , दिल्ली हाईकोर्ट केर चर्चित अधिवक्ता बरमानन्द प्रसाद जीके सौजन्य सँ भेल छन्हि। सद्यप्रकाशित एहि पोथीक' आमुखमे वरेण्य साहित्यकार श्री नन्दविलास रायजी विस्तार सँ लिखने छथि - जे प्राय: सभ कथा पर संक्षिप्त रुपेँ प्रकास डालने छथि। ई सर्वश्री कपिलेश्वर बाबूक चारिम मैथिली भाषा साहित्यमे प्रकाशित पोथी छी। अपन बातमे लेखक महोदय परता परल सब कथाक प्रकाश्य लेल आभार जतेने छथि। पाठककैं हिनक कथामे समाजक रीति-कुरीति, भेदभाव, अंधश्रद्धा, कट्टरपंथी जे गाम देहातमे देखबामे अबैछ ; ताहि संदर्भमे नव दिशा देखबैक आगू डेग बढेला अछि। पोथिक चर्चा करैत कहब एहिने पहिल कथा आयल अछि - दाही रौदी' कमलाक छहर टुटने तीन दिन पहिले ५०-६० गाममे बाढ़ि आयल ' भुटकून मचान पर गर लागल रहैछ, कारण आँगनघर जल सँ उबडूब भेल छै। ओ करिया काका लग जाकए काकीक चाह पिबैत बाढ़ि समस्या सँ खेती आ दहनाल केर गप्प चलेने छैक। बिरारक उंचका खेत पर करबाक काका अपन अनुभव गनबैत रौदी सँ दाहीके नीक बतबैत रहैछ। पहिले ओहि खेतमे तरकारी उपजाबैत रहय, से ऐबेर धान उबजाएत । प्रल्यंकारी जे भीषण बाढ़ि २०-२५ दिन धरि बढ़ल रहलैक ताहिमे नरुआर आ गोपलखामे बेसी क्षतिक बनसव्त एने एको कोन उपजबे करतैन जजात से आश जगैत छै। आन उपकथाक अंशत: चर्च सेहो भेल छैक।

गंगालाभ शिर्षक - बाबाक संस्कारमे जहिना मास करैत जीबीतेमे बेटा ठोठमोकिया दैत सिमरियामे गंगालाभ केने रहथि, तहिना श्यामचरण बुढ़ मायके जीवतेमे गंगाजीक अगम पानिमे धकेलैत देखेलाह। धरि गाममे श्राधकर्म आ रसगुल्लाक भोजक बाद निनमे सपन देखैत चौकैत छै।

खराप शीर्षक - कथामे कहलगेल छैक जएह वस्तु ककरो लेल नीक, सयह वस्तु अनको ले बेजाय होइछ।

सुलोचना दादीक बालपनमे रविन्दर खीसा सुनने रहय बीरबल बाला। से मल सँ घीननै , जैविक उर्वरक खेतीलायक आ पैघ वयस भेलासन्ता दिल्ली पंजाब पलायन नहि कय गामेमे कृषिकार्य उन्नत रुपेँ करैत जिला स्तरीय सम्मान धरि पबैत छैक।

गोलमाल पंचायत चुनाव शिर्षकमे - बिकासपुर पंचायतमे जीबकान्त बाबाक वार्तालाप उदयकान्त सँ होइछ, जाहिमे टाका पाबि कर्मचारी बोटक गनतीमे कोना हेड़फेर करैत हारल कैँ जीता दैत छैक। से समस्या प्रखंडमे धरणा आ जिलामे अनशन कार्यक्रमके जरीय भष्टाचारक देखार कयल गेलैक। अनेक विकासकार्यमे धांधली बावत चर्चामे आजादीक लड़ाई क' पुरान संघर्ष संदर्भ सेहो विस्तार सँ चर्चा भेल छै।

मराएल जिनगी शिर्षक - केन्द्रीय कथामादे नन्दविलास रायजी कथाक एक अंश लेखकक लेखनी द्रष्टव्य रुपेँ रखने छथि; यथा-ऐ कथाक मादे कथाकारक एकटा कहब छैन जे जँ समयकै चिन्ह कऽ नइ काज करब तँ पछाइत जीवनमे निराशा आ पछतावाक अतिरिक्त आर किछु नहि भेटत। आ दोसर कहब छैन जे खराप काजक नतीजा खरापे होइ छइ।

फूलचन्द्र काकाकै तीन लड़कामे मोहन माझिल अछि जे बी.ए. धरि पढ़लैन, माने बी.ए. पास केलैन। कलिकापुर आओर संतनगरमे पिताजी फूलचन्द काका आ मामा रामअवतार हाईस्कूलमे नौकरी करए लेल मोहनसँ कहलकैन तँ मोहन बजला- "अतेक जे पढ़लों से नौकरीए करैले।" मोहनक बातसँ फूलचन्द काका चुप्पे भऽ गेला। की बजितैथ? मुदा रामअवतार भागीन मोहनकै कहि देलखिन- "जा नीक नइ बजलह हेन।"

तीन भाँइक भैयारीमे मोहन बेसी पढ़ल-लिखल रहैथ तँए परिवारक जुति-भाँति वएह लगाबए लगला। सामन्ती सोचक मुताविक चलए लगला। नियतमे बदनियत आबि गेलैन। अपना धिया-पुताकें नीक नजैरसँ आ भाय सबहक धिया-पुताकें हेय दृष्टिसँ देखए लगला। नतीजा भेलै जे परिवारमे खटास उत्पन्न भऽ गेलै आ किछु दिनक पछाइत परिवारमे भिनभिनौज भऽ गेलइ।

मोहन बेटा सभकें पढ़ौलैन-लिखौलैन। जेठ बेटा नेनादत्त कौलेजमे प्रोफेसरीमे गेला आ छोट बेटा किसान सलाहकारक पदपर रोजी-रोटीक जोगार केलैन। मोहनक दुनू बेटा अप्पन-अप्पन परिवार लऽ बाहरे रहए लगलैन। मोहनकै कोनो तरहक आर्थिक सहयोग नहि करैन । तखन मोहनकें गुजर-वसर करैमे दिक्कत होमए लगलै। तखन ओ नौकरीक लेल परियास करए लगला। तावत उमेरो 57-58 वर्षक भऽ गेल रहेन। 'का बरखा जब कृषि सुखानी' बला कहावत भऽ गेलैन ।

पछाइत मोहन गामक खानगि धिया-पुताकँ पढ़बए लगला। किछु दिनक बाद पत्नी मरि गेली। आब तँ आर दिक्कत भऽ गेलैन। आब ओ बिक्षुब्ध भऽ गेला। अपनेसँ भानस-भात केनाइ, धिया-पुताकें पढ़ौनाइ, कनी-मनी खेती केनाइ। आब ई सभ हिनका जपाल बुझना जाइ छेलैन, मुदा बेटा सभ लेल धैनसन ।

एक दिन मोहन बेमार पड़ि गेला। पैखाना-पेशाव बन्द भऽ गेलैन। छटपट्टीमे ओसारपर सँ गिर पड़ला आ पैरक घुट्ठीक एकटा हड्डी टुटि गेलैन।

जखन समाजक लोक आ परिवारक भाए-भैयारी सभ डॉक्टर लग लऽ गेलैन तँ मोहन डॉक्टरकै कहलखिन- "मरैबला सुइया दऽ दिअ, डाक्टर साहेब।"

मोहन अपना जिनगीसँ तेतेक निराश भऽ गेला जे अस्पतालोमे डॉक्टर जे दवाइ खाइ लेल देने रहेन से नहि खा अगल-बगलमे फेक दैत रहथिन। अन्न-पानि त्यागि देलैन, नतीजा पनरहे दिनक भीतर प्राण-पखेरु उड़ि गेलैन।

ऐ संग्रहक सभ कथा रुचिगर आ प्रेरक अछि। श्री कपिलेश्वर राउतजीकें सहृदय धन्यवाद। घुसखोरी, ओझरी, उच्छन्नर, महामारी करोना, जन आन्दोलन, मायबापक कर्ज, चेफरी, त्रिशंकु, कपटीबाबा, कदीमा एवं जाइतिक बन्हन खूबनीक कथा अछि। लोड़ही आ गोबरकढ़नी, गीदर भभकी, बेइमान नेता, बापक आंगा बैटाक योग्यता, कोरा कागज तथा मशीनबाला चाउर लघुकथा सनियाएल छैक। कथा क्रम सुचिमे कपिलेश्वर राउतजीक चारिम पोथी 'मराएल जिनगी' पृ• ९ आ अपनबात -१४ पृष्टपर अनुपयुक्त ठाम लगौनाई प्रकाशकक भुल थीक। संगहि चौदह गोट कथा पृष्ट १० पर आ २२ टा कथा पृ• १४ में उल्लेखित अछि जे भ्रामक य।

प्रक्रियाधीन सामाजिक परिवर्तन'क स्वर

उपन्यास समीक्षक- लाल देव कामत

मैथिली साहित्यमे राजनीति शास्त्रीय आ मनोवैज्ञानिक साहित्य क' रचना कम देखल जाईत अछि। आजुक परिवेश मेँ एकछाहा नवकविता वा कहि सकैत छी अकविता लिखबाक बाढि आयल छैक। पद्दके बनशव्त गद्य लेखन काज कम भ' रहलैक हन्। एहि चलनसारिके ढिठियाबैत आत्मकथा, निवंध, यात्रा प्रसंग, कथा संग्रह आ प्रेरक संस्मरण दिश उन्मुख रहैत श्री रविन्द्र नारायण मिश्र जी एगारह गोट उपन्यास धरि प्रकाशित कय चुकल छथि।हालहिमे हुनक " बदलि रहल अछि सभ किछु " मैथिली उपन्यास पढलौंह। जेकर ओ स्वयं लेखक आ प्रकाशक छथि। एहि पोथी मेँ १३२ टा पन्ना अछि। निमन कागतमे छपल पोथीके सरकारी आईएसबी एन प्राप्त भेल छैक आ २५० टाका दामधरि निर्धारण कयने छथि। १४ अप्रैल २०२२ केँ ग्रेटर नोएडा (उ०प्र०) दिल्ली एनसीआर प्रक्षेत्र सँ छपल एहि पोथीके ओ अपन पितामह स्व० श्रीशरण मिश्र जीके स्मृतिमे समर्पण कयने छथि।पोथीक मादे पाठक केँ अपन रचना सभक विषयमे सेहो कहने छथिन जे "ई- पत्रिका विदेह" मेँ नियमित अभरैत रहलाह हन्। धरि आवरण रंगील गत्ताक विषयमे पृथक सँ जनतब देलनि,जे पौत्री काश्वी दिशसँ दिवाल पर उकेरल गेल चित्र थिकैनि।हिनकर पूर्व प्रकाशित उपन्यास विधामे यथा-: नमस्तस्यै,महराज,लजकोटर,सीमाक ओहिपार , मातृभूमि ,स्वप्नलोक, शंखनाद, ढहैत देबाल,हम आबि रहल छी,प्रलयक प्रात,बिति गेल समय, प्रतिबिम्व आओर सद्य:प्रकाशित नव उपन्यास ' बदलि रहल अछि सभ किछु ' छन्हि। हिन्दी आ अंग्रेजी मेँ सेहो पुस्तकक रचना कतेको भेल छन्हि, जे ईन्टरनेट पर उपलब्ध छैक। एहिमे पाठककेँ राजनीति दलक नेताक आन्तरिक चरित्र आ व्यवहारिक चरित्रमे जे अन्तर छैई तेकर ठेह भेटैत य। कुल ३४ टा पाठके एकेसुरमे गहींर अभिरुचि केर संग पढल जा सकैत छै।ओना मैथिलीमे पाठकक आब अकाल अछि। तेँ पत्र_ पत्रिकाक संगहि स्तरीय पोथीक किननिहार लोक आ संस्था कमशम देखाइ छथि। बहुत परिपक्व पाठक पोथी समीक्षा पढि - गमि नव पोथी किनैमे प्रकाशन आ दोकानधरि पहुँचैत छथि।एखन राजनीति जे बिहारक चलैत आछि से पुर्णत: राजनितिज्ञ क' आगू- पाछू घुमैत अछि।तै मेँ समाजक लोकके समय आ परिश्रम सेहो जाइत छैन्।संतोखक लेल भेटैत छन्हि संररक्षक सँ प्रत्यक्ष वा परोक्ष रूपेँ संरक्षण।रहस्यमय स्थितिक राज बनाकय उपयोग करैत जे नायक कार्यकर्ता ओ लठैत - समांग बनाकय पोसने रहैत ; अपना पाँछा टिकौने रहैत छथि, सयह पैघौत बनल देखाईछ। मुदा जहिना उदय भेलासन्ता सूरूजो कमतर होईछ,तहिना स्थापित नेताजी केँ समयक सँग परिस्थिति भोगय पड़ैत

छैक। प्रस्तुत उपन्यासक कथ्य, भाव-भंगिमा क' नाप शिर्षस्थ उत्कर्ष धरि पहुँचल छैक।आखिर समकालीन उपन्यासकार हेतुकर झा जे "ककरा ले अरजब हे !" मेँ क्षेत्रीय निम्नता _पंचकोशी,दक्षिणाहा आ भदौसक प्रयोग कयने छथि,ओहिठाम रविन्द्र नारायण मिश्र फरीछ स्थान शक्तिपुरम आ विजयपुरम सन भारतमे प्रचलित दक्षिण ईलाकाक नाम मुन्दर्य कयलनि अछि।देहाती मयटुअर-बपटुअर अबोध बालिका'क भरण- पोषण ओकर मामाजी अपना गाममे करैत बी ए धरि पढबैत छैक।एक प्रतापी नेताजी केँ ओ बालिका केर मामूजी ओहिठामक अबरजात रहैत छैक। से हुनक गहिंकी नजैर अवश्ये पड़ल छलैक,तेँ सुझाव दैत छैक जे एकरा वियाहक चिन्ता एखन नँय करी। हमरा डेरा पर शहरमे लेने अबियौक।ओतय नीक जकाँ ओरियाउन क' संगहि नोकरी धरा देबैनि।ओहि सँ कथा-संबंध पैघ घर-बड़मे आसान सँ भ' जायत। मुदा हुनका हृदयमे किछ दोहरे भाव उमरैत रहैक।आने किछु लोकसन संदीपजी सेहो ओझरा गेलाह नेताजीक संग। उपन्यास'क पाठक पढैतकाल आरम्भे मेँ वास्तविक जीनगिक अनुभव करैत संभवत: स्व० रेलमंत्री ललीत नारायण मिश्र जीके बंम हत्याकांड आ स्व० प्रधानमंत्री राजीव गांधी जीके मृत्यु बंमविस्फोट कांड , मंच परहक दृश्य सँ भयाक्रान्त भ' उठैत होथि।ओना आगू जे दृष्टांत भेटैछ नेताजीक पत्नि महिमाक ' राज्यप्रमुख बनैत घरी स्वत: वास्तबिक जीवनमे बिहार'क एक मुख्यमंत्री जीके धर्मपत्नि मोन पड़तैन।जे हो परंच दीर्घ कथा क' विस्तार पबैत ई सामाजिक उपन्यास एक राजनीतिक षढयन्त्र क ' नजारा बड़ा जैमकेँ देखबैमे समर्थ भेल छैई। नवतुरिया लोकनीक राजनीतिक दल गठन होईछ-जनक्रांति दल। एहि दलक हम 'शव्द' सँ तात्पर्य अछि- लेखक स्वंय , जे कदाचित लेखकक हृदयमे बसैत अछि। शक्तिनाथ आ संदीप केँ संग पुरैत नारी निकेतन सँ भागि परायल शिखा प्रमुख पात्र रहैत छथीन।ओम्हर समग्र विकास दलक राज्यप्रमुख नेताजीक सब तरहेँ चलती रहैत छैन।एक तरहेँ अन्तरराष्ट्रीय तस्करी गिरोह 'क परोक्ष समर्थन रहैत छैन। नारी निकेतनक अपना ईच्छा सँ अनैतिक प्रयोग करैत छथि।पाँचटा मूशदण्ड निजी लठैत सदा हरदम अपने छाह जेकाँ काज आबै छैन।सरिया गाममे शीखा नहिँ भेटैत छैक मुसकदण्ड सबके।विकट स्थिति झेलैत जहन आजीवन कारावास भोगय छथि,तँ पत्नीक सहारे पार्टीक तागैत अपने लग राखै छथि।ओहि अपराधी मुशदण्डक दखलंदाजी सँ त्रस्त होइत,हृदय परिवर्तन होय छैन महिमा जीके।आ ओ संदीप सँ जे पहिले पूर्व परिचित कार्यकर्ता नेताजीक रहनि, एसकरे भेंट करय आबि जाई छथिन। ताहि सँ पुर्वधरि अपना पद सँ त्याग -पत्र देबाक जनतब मीडिया केँ सेहो द' देने रहै छथीन्ह।आब विपक्षीक तागैत शिखाजीक नेतृत्वकला सँ एतेक बढैत छन्हि जे विजियोत्सव मनाबैत योग्य होईछ।पाँचटा सीट मात्रे निर्दलीय उम्मीदवार जीतै छैक,सेहो वयह जे हिनका अपनहि पार्टीक असंतुष्ट टिकट वंचित क्रान्तिकारी छथि।राज शासनक सब प्रत्याशी हारि गेलै,कारण दू गुट बनल छलैक आ मतदाता'क बीच सेहो छवि धूमिल भेल रहैक।श्वेत वस्त्रधारी आब गुलाबि परिधान मेँ प्रतिनिधि सभाक बैसारमे आबि अपना जगह

पर स्वयं नँय बनि श्री शक्तिनाथ कैँ फूलमाला लाधैत राज्य प्रमुख मनोनीत करैत सत्ता सोंपलीह। एहि स्वेच्छाचारिता ले समर्थक जनता लोकनि जिन्दावाद नाराक जयघोष करैत रहल। चुनावी राजनीति समयमे महिमाजीक पार्टीक किछ असंतुष्ट नेता आ कार्यकर्ता जे अलग गुट बनाकय पार्टीक प्रतिष्ठा मलीन करैत भट्ठा बैसा देलकैक, ताहि गुटक नामधारी लेखक महोदय नै क' सकलाह।आओर नेताजीक शुभ संज्ञा सेहो किछ राइख सकै छलाह। श्री मिश्र जीक उपन्यास लेखन शैलीक हम कायल छी,किछु एहनसन पाँति द्रष्टव्य अछि-:

सरकारी घोषणा सँ जनता बहुत खुश रहय।मासे-मासे पानि बिजलीक बिल नहिं देबय पड़ैक। मासमे दू बेर किलोक किलो मंगनीमे राशन भेटि जाइक। सभ अपन-अपन दरबाजा पर तास खेलाए,भोजन करए आ सांझ पड़तहि सुति रहए । पृष्ट-११० सँ उधृत।

उपन्यासमे दू दलक उपरचढ़ , पुलिसिया कार्रवाई , हवाई जहाज यात्रा , अस्पतालक दृश्य, सीबीआई जांच , माननीय उच्च अदालत केर निष्कर्ष रोचक लागत।आब २० शाल सँ बेसिये राज्य करैत समै खपि गेलैक।समाजक अनुकूल वातावरण सृजन भेलैक, जाहि सँ बालिका सब डाक्टर, इंजिनियर बनि रहलैक। सर्व जातीय एकता बढल आ सामुहिक भोजमे- उत्सवमे समरसता देखल जाइक। खानपियन सबजाना हुअ लगलै आ शिखाक त्याग सँ हुनक स्वप्न साकार होईत गेलैक।एहि तरहेँ सामाजिक परिवर्तन सतत् साकारात्मक दिशन बढैत डेग सन बुझाय। सामाजिक सद्भावना सभा जखन-जखन कतौह करथि तँ आखरिमे एक निशन्न शव्द -चरैबेति - चरैबति अवश्ये शिखाजी कहथि।

डोकहर

प्रो० रामचन्द्र राय प्रगतिवादी काव्यान्दोलन'क शिखर कविक रूपें रचना जगतमे समादृत छथि। हिनक आदर्श रहथि - रविन्द्र टाइगोर,इयह कारण थीक जे हुनक कविता 'क फलक व्यापक अछि आओर हुनके सदृश्य हिनक चिन्तनके केन्द्रमे देश आ विश्व'क मानवके शौषण मुक्ति छैक। उत्तर छायावादके श्लाघा कवि , तुलनात्मक गद्यकार आ अप्रतिम अनुवादक प्रोफेसर राम चन्द्र बाबूक व्यक्तित्व आ कृतित्व हिमाचल पर्वत जेकाँ श्रेष्ठता आ धवलता संयोगने छथि। हिनक जनम बिहार - मिथिलांचलके मधुबनी जिला अन्तर्गत भगवतीपुर (नाहर) ग्राममे २ अगस्त १९४९ ई० कैं भेलनि। आरंभ म पैतृक स्थानमे अध्ययन भेलासन्ता बादमे उच्च शिक्षाधरि शांतिनिकेतन (प०बंगाल) गेलथि। एतहि सँ ओ निष्णात भेलाह स्नातकमे आ पीएचडी. केर उपाधि प्राप्त कयलनि। बंगालक बाउल केर साहित्य आ संगीत,जीवन दर्शन सँ प्रभावित भऽ ,एहि क्षेत्रमे प्रायः अनेको विधा पर लेखनकाज कयलाह अछि। सन् १९८२ मैं शाँतिनिकेतन , १९८८ मे सहित्य आ बंगला साहित्य पर हिन्दीमे शोधपरक निबंधक संकलन आ १९८९ मैं तन्हाई बंग्लाभाषाक प्रतिनिधि कथाक संग्रह तथा शांतिनिकेतन एक परिचय एवं बंगालके बाउल पोथी प्रकाशित भेल छन्हि। प्रस्तुत डोकहर हिन्दी कविता संग्रह (२0०८) सँ पूर्व हिनक रजनीगंधा आ आशा देता है लेकिन केर प्रकाशन भ' चुकल रहनि। हिनक कविता 'क पाठ विविध मंच सँ आ आकाशवाणी सँ प्रसारित ओ पत्र - पत्रिकामे प्रकाशित भेल य। हिनका कविता गढ़बाक ओ क्षण होईछ जाहिके अपना आँखिये घटना घटित होइत अपना उपर वा अनका पर होय। ओ विषण्ण भ' उठैत छथि। ऐहि तरहक " डओकहर" मैं अपने पाठक देखैत स्वयं मूल्यांकन सेहो क' सकब।

डोकहर कें जे सारस प्रजातिक पंछी छी, कोना एक विधुर कविहृदय नर डकहर रूपैं चिन्हैत; एसकर अपन घरक समक्ष मैदानमे चराउर करैत देखैत छथि। भरिसक एकर मादा बहेलिया हाथे आखेट भेल होय! तैं करूणा - ममता सहजे जगि अबैत छन्हि मोनमे आ एहन मुक्ताभिलाषी डकहरकैं कोना ओ पकैड़ पैघ खोता बनाकय देताह। कियाक तँ ओ विहंग अछि आ ओ विकलांगता अपनाके बूझय लागतैक। से आओर बेसिए विधुरता एकांगीपन भ' जेतैक। जेना कि भाषा रूपैं संस्कृत शास्त्रविद्गणके महाजालमे आई बिकलांग भेल कुहैर रहलैक अछि। बहैत नदीक धारसन स्वच्छन्द बहैत रहैत तँ ई दशा नहिं रहितैक मानवीय बोलचालक सामाजिक वाणी सतत् बनल रहैत। तहिना स्वच्छन्द जीवन जीबय चाहैत होइक बिधुर बृध्द डोकहर। जेना कि कविवर महोदय'क अपन मनोदशा काव्य रचैत काल भ' गेल होईन। ओ स्वयं मैं मिथिलाक बेटी अर्थात अपन स्त्रीक परित्याग कयला पर द्विजत हासिल कयलाह

बंगालमे आ बंगालिन सँ द्वितीय वियाह करैत एक ललनाके पिता भेलाह तँ ,मुदा कालान्तरमे सहधर्मिणी पत्नी आक्रांत भऽ गुजैर गेलीह। से जनिजातक बैधव तँ अनुभव करत सँ रहि गेलैन आ पुरूष विधुरताक स्वयं अनुभव कऽ समय भोगैत रहलाह अछि। साहित्य क्षेत्रमे अनेक कल्पना आ चिन्तन मनन एहि विषय पर विशद् रूपेँ कयलनि। इयह अनुभव कवितधारा रुपेँ अजस्रत भाव सहेजने 'डोकहर' हिन्दी काव्य पोथीक केन्द्रीय कविता पाठ - ७ पर विषय सूचिमे स्थान पौने छैक। ओना एहि चर्चित पोथीमे ४२ गोट कविता विविध विषयपर अनेकों रस मे अछि। कवितामे छन्द आ तुकबंदी नहि रहने एक स्वच्छन्द परपराक पथगामी बुझाइछ।

एहि पोथीकेँ कविन्द्र रविन्द्र'क कर्मभूमि केँ समर्पण कयने छथि,जतय डॉ० रामचन्द्र राय जीके द्विजत्व भेटलनि अछि। वर्ष २००८ मेँ प्रो० रायजीक 'डोकहर ' हिन्दी कविताक ८० पृष्टक पोथीक दाम ८० टाका छैक। पोथीक आवरण एवम् रेखांकन थीक - सुहास राय जीक, आ एहिक प्रकाशक - शांति निकेतन हिन्दी प्रसार सभा रतनपल्ली (नार्थ) शांतिनिकेतन बीरभूम ,पछिम बंगाल (भारत) छी। उपर्युक्त पोथीक सब कविता उपरा- उपरी आ जाज्वलमान छैक। अपने पाठक एहिक पांति पढ़ि पुलकित होयब।

सपना साकार

मैथिली कथा पोथीक ISBN नं० ९७८९३९३१३५३९१ पृष्ठ सँख्या १२३ पल्लवी प्रकाशन निर्मली सँ सन् २०२३ ई० में प्रकाशित भेल अछि, जाहिके दाम २०० टाका छैक। कथाकार श्री राम चन्द्र रायजी'क पहिल मैथिली साहित्यिक पोथी छी , जाहिमे ९ गोट लघु आ दीर्घ कथा मिज्झर भेल अछि। कथा पोथीक कलेवर देखि सुधि पाठक सहजे अनुमान लगा सकैत छथि जे आगू आबयबला समयमे शिघ्रहि श्री रामचन्द्र जीक मैथिलीमे उपन्यास विधा सेहो आओत। हिनक लगनशीलता कें परेख प्रसिद्ध साहित्यकार श्री गजेन्द्र ठाकुर जी सेहो परिकल्पना कयलनि जे सिद्धहस्त कथाकारके रुपें रामचन्द्र बाबूक लेखन शैली आ वाक् पटुता कें देखैत ई आश जगैत अछि जे आब हिनकर लेखनी वृहत् उपन्यास दिशन अवश्य बढ़त। हिनक रचनाधर्मिता कोना प्रगतिक पथ पकड़ल से श्री रायजी स्वयं " अपन बात" में असपष्ट कयने छथि। दर्जनभरि पोथीक वरेन्य रचनाकार श्री नन्दविलास रायजी सपना साकार 'पोथी' के आमुख लिख बहुत बात पाठकोपयोगी बावत देलाह अछि। तथापि एहि पोथीक न्याय लेल अपना सँ मनन कयल पाठ सन्दर्भ पाठकके सुविधा खातीर अति संक्षेप मे किछु बात लिखबाक धृष्टता करब मानवोचित हमर अभिष्ट थिक। एहि पोथीके केन्द्रीय कथा थीक सपना साकार जे पाठ २. में ३० पृष्ठ पर पाठकके अभरत। एहि मादे कथाकार बढ़ उम्दा सँ खिस्सा गढ़ैत समाजक बीच अभिनव प्रयोग करैत देखेलाह अछि,जे नव संदेश क' संचार करबामे पूर्ण समर्थ भेल छैक। पाठकके ई आत्मकथा जेकाँ बुझाएत,परंच से सरिपहुँ नहि। ई ठोकल ठेठाएल स्व अनुभुति सँ भिजल आ कल्पना सँ फराक बुझिमे आओत। मुदा रामूसर ऐ ले स्वंगे स्पष्टीकरण दैत एहि कथाके आने कथा सदृश्य मोनक उपज बतौलनि हन्। कथाधरि सजीवताके अपना आभामे खूब चिकन सँ समेटने रहैत , परिपक्व रूपें औंटल- पौरल दूधक दहीसन परिवर्तित रुपक एक छँटा देखाइत छै !

कथा नायक रामेश्वर भाय शिक्षक रहैत पूर्णत: सामाजिक कार्यकर्ता छथि। चूंकि बालपनमे ओ पढ़ैत-लिखैत संगतुरिया सभके पढ़ौनी करबाक खेल धूप करैत छैक। आ माय बाबु कें आश्वस्त करय जे पैघ होयब तँ मास्टर साहेब बनब। से पंचायत 'क मुखियाजी पहला सँ स्नातक धरि प्रथम श्रेणी आनय बाला रामेश्वर जीके प्रखंड शिक्षक नियुक्ति करैत अपन बेटी लेल वियाह वर रुपें सेहो हूनके चुनि लै छथि। समृद्धशाली मुखियाजी 'क पुत्री रमा विदुषी भऽ जाइ छैक जे मास्टर जीक मैथिली'क सब रचनानाक पहिल स्रोता आ पाठक थिकीह आ साहित्य विमर्शमे सहायिका सेहो।

उपन्यास रचबाक लेल चिन्तन - मनन चलैतकाल इहो दृश्य हुनका सोझा अबैत छैक जे कोना

गामक वर्तमान परिदृश्यमे आजुक छौड़ा - छौड़ी कोन तरहेँ सोशल मीडियाक दुरुपयोग बेसी करैत प्रेममे उढ़हैर रहल छैक। एहि सं बेटीक बाप शोकमे डुबि जाईछ। फेर विषय सँ भसियाइत दोसर समस्या बिहारमे शरावबंदीक उपरान्तो टोलमे देशी शराब बिक्री सँ किशोर वयशमे बच्चा लोकनि पर केहन प्रतिकुल असैर पड़तऐक? प्रशासन जनैतो छैक जे होम डिलीवरी भ' रहलैक य,तै दिस घिचाइत छै। श्री रामेश्वर प्रसाद मंडल जीक " बगवार " मेँ जहिना माय- बाबूक एके संग अंतिम संस्कार भेलैक,तहिना एहू कथामे देख पड़ैछ। गरीब गुरबा पर गामक सामन्त द्वारा कोना शोषण होइत रहैक; सेहो बचपनके दृश्य चलचित्रके रीलसन आगां सोझमे देखा पड़ैत छै। ई एहि पटकथाक आधार बनाए माय -बाबूजी नामक उपन्यास लिखबाक छटपटाहट के आहट पाठककें सुनाबैत छथि,से अकानबाक विषय छी। मृत्यु भोज आ कर्मकाण्ड केँ तिलांजलि दैत उतरिक उसरगा अपन पोथीक लोकार्पण सँ करताह आ ताहि लेल साहित्यिक सहयोगी साथी उमा जी आयोजनक जिम्मा लैत छैक। रामेश्वर मास्टर साहेब प्रथमत: रजिस्टार औफिसमे जाकय ट्रस्ट लेल जमीन लिखलैन आ नगदी राशि सबा लाख टाका जमा करैत छैक। माध्यमिक आ उच्चतर माध्यमिक शिक्षा बोर्ड परीक्षामे प्रथम श्रेणी सँ पास विद्यार्थिगण केँ आर्थिक मदैत समारोह पूर्वक करैत शिक्षा 'क महौत केँ जन- जनमे प्रचार प्रसार करत। बारहमदिन लेल ग्रमीतके बैसार कराबैत छै। बैठकमे अचरज भरल नजैर सँ सब हिनक नैका कानून सँ हतभ्रभ होइत ओकर क्रियाशीलता देख कौतूहलमे रहैक। सुभेश्वर काका , लाल काका , जोगी काका ,बच्चे काका आदि छगुन्तामे रहैछ। कथाकार एहिमे अविस्मरणीय बनेबामेँ सामाजिक विद्रूपता , रूढ़िवादिता आ अन्धविश्वास 'क विरूद्ध जागरूकता बढेबामे सफल भेलाह अछि। ओना मौजूदा व्यवहारमे नेतानुमा लोक ओ धनिक लोक १२ मोन चाउर सँ बेसिये एक सांझक भोजमे सीदहा रान्हि कार्डधारी सँ परोक्षरूपेँ चन्दा ओसुली करैत अछि,तकरा सोचके संकल्प केँ की कहि सकैत छी। पुरनका छरीदार - मान्यजनी आ मुख्य पुरूषके तँ भोजभातमे चलती आबि जाईछ। रामचन्द्र जीकेँ बहुतों कथाक पाठ करैत आ अद्भुत वाचन शैली ' सगर राति दीप जरय'क कथा गोष्ठीमे अनेकों ठाम देखने- सुनने छी। दोसरो कथा सब उपरा- उपरी बुझाइत अछि जे पाठक स्वयं अनुभव करब। पहिल कथा ' तोंही जीतलेँ हमहीं हारलौं ' एहिमे समसामयिकता केर बोध होईछ। आब नगर - शहर आ आन प्रान्त जेकाँ मिथिलामे सेहो प्रेम वियाहक चलैन सेहो अन्तरजातीय सीमामे सम्पन्न होईत वियाहमे होईछ। ई पढल- लिखल समाजमे नवयूवा पिढ़ि दहेजकेँ चुनौती दैत,मुंह दुसैत स्वच्छन्दता आनैत कूल मूल डीह गोत्र रंगभेद आदि सँ इत्तर एक पृथक पहिचान बनाबैत समाजमे पकठोस बनैत जा रहलैक हन्। मिथिला समाज पौराणिक पद्धति पर अबलंबित रहल छैक,मुदा परिस्थिति आब भिन्न छैक। ताहिक जीबैत जागैत उदाहरण रूपेँ ई कथा ओरियाके गढ़ल गेल देखाईछ। एखनो समाजमे पर्याप्त रूपें नेहाक पितियौत भाय नूनू जँका मर्यादित लोक ऐ नव रीतिकेँ समाजक प्रथा सँ नहिं जुटय देबै चाहैत छैक। पुरूषकेँ आत्म सोभिमान कुलक

कन्याक प्रति रहैछ जे कुबाट नहिँ चलय। मुदा एक नारी'क हृदयके हुनक स्त्री स्वंगे जानि ननैद कैँ नवीन सँ भेंट कराबय लए गाम सँ टपा दैत छै,जे नवीन जी सँगे दिल्ली पहुँच जेठ बहीण बहनोए लग आबि जाईछ। ओहि राति नेहा कुमारीकैँ मारि देबाक आ गठूलामे धरहरा गारि देबाक नियारल कैँ जहन ग्रहण लगैत छैक तँ दोसर उपाए अपहरण 'क नालीश कयल जाइत छै । पैघोत जाति आ छोटका जातिक जे भेदभाव अदौ सँ मिथिलांचलमे छैक से टुटैत नवीनके माय बाबू नोकड़िक पहील पगार सँ कबूला मनौती पुरा करैत सवर्ण - गैरसवर्ण क' बीच ऐ रक्त संवंधी मान्यता धरि दैत उज्जवल भविष्यक ताउम्र ले कामना केलथि। फेकाएल जीनगी कथा स्त्री जीवनक नैहरमे आ सासुरमे अलग -अलग परिस्थिति सँ सामना करैत एक मानसिक रोगी के भेटत। ओ पगली ,पगली नहिं घरक भागमंत बुझल जाईत रहलीह। मुदा वियाहैल भेलासन्ता सासुरमे केहन मोजर देल गेलैक से पाठकक सोझा य । निर्वासित जीवन कथामे मनुखक व्यंग्यात्मक शैली सँ ओतप्रोत बात उठबैत कथाकार स्त्री -पुरूषक लेल बान्ह कछेरमे मलमुत्र त्यागक जगह शौचालय निर्माण दिश आवश्यकता देखेबामे एक झलक मारै छथि। भरामबालीक घरमे चोर नहि उच्छनैर देबाक अनघोल मचेलहाके बुझेबामे संकेत केने छै। बुधनी मायक बेथा पाठ शिर्षकमे पंचायत केर बैसारमे जनिजातक बहुत उपस्थिति नारी शसक्तिकरण कैँ उजागर करैत इन्दिरा आवास ढनमनाएल'क संगे जगत केर पोल खोलैत छैक। ओना थाना गेलापर ओतह ओकर प्रभावकें बुझल जा सकैछ। तैँ कि भ्रुणहत्या जगतके कलंक मेटबय लेल चारू युवक मानतैक? ई सवाल औनाईत छोड़ि औपन्यासीक विधा दिश रामूसर बढलाह अछि! नशामुक्त गाम कथा पर तँ रामूजी कैँ अपन वियाहकालहि सँ विषय पर अधिकार छैन,जे रेडियो वार्ता प्रसारण सँ स्रोता आकाशवाणी कार्यक्रम मे गमने रहैथ। राजूसरके अथक परियास सँ नशामुक्त ग्राम म जीविका समुह हुनका पुरस्कृत करैत छैन। बहिनक बियाह कथामे तेसर छोट बहिनक बियाह लेल सुजीत दिल्ली सं सुरक्षित आबि दरिभंगा लग एन एच ५७ पर दुर्घटनाग्रस्त भ' अकाल मृत्युके प्राप्त करै छै जे ओकर बहिन रेखा आ सब कियो शोसल मीडिया पर बाइरल भेल खबेर सँ जनैत दुखी होईछ। समाजक पिसांच कथामे मानसी शासुरमे सौस-ननैद सँ प्रताड़ित आ श्वसुर 'क बेंतक मारि सँ त्रस्त भऽ नैहर चलि जाईछ। ओतय टिशन पढौनी कराबैत अपन प्रतियोगिता परीक्षाक तैयारी सेहो करैत छैक। से बीडीओ. बनि जाईछ,ई प्रेरक कथा क' श्रेणीमे अबैत य। आखरी कथा ' कुलदीपक' मेँ एक परिवारमे पाँचगोट बेटिये जनमला सँ बेटाक चाहतमे रहय बाली दूनू पूतौह आ सासुमायके घोर निराशमे देखौएल गेल छै,जे सोभाबिक छैहो। कथाकारके साकारात्मक सोच ऐ कथामे फरिच्छ लौकैत य। राकेश शर्माक घर दोसरो बेर धिया जनमली,से परिवारमे चूल्हिधरि नहि पजरैत छैक। राकेशकेर माय पड़ोसनी बलाटबाली कैँ कानि-कानि वार्तालाप करैत छथिन-देखियौ कनियाँ जेठकी पुतौह कैँ तँ तीनटा छौड़ी रहबे करय,आई तँ छोटकीकैँ सेहो दोसरो बेरमे बचिये भेलैन हन्। से भगवान- भगवती हमरा डीह पर पुतक आँखि कहिया धरि देखेताह! एम्हर

विज्ञान पढल- युवक परिवार नियोजन लेल तैयार पत्नी सँ कहैत रहल मुदा ओ आपरेशन लेल तैयार नै भेलीह। ओ स्वयं अपन नशबंदी कराकेँ आत्मसंतुष्टिमे रहय। रूबीके जेठ बेटी डाक्टरी पढ़ाय केलक,जमाय डॉ० सुबोध शर्मा मिलकय रूबी-राकेश नामक पैघ होस्पीटल फोलैत छैन आ छोटकी बेटी अनुप्रिया आ ओकर पति अनुपम राय सेहो दूनू जिला पदाधिकारी पद पर बहाल होइत राकेश -रूबी नाम पर गरीब कल्याण विद्यालयके स्थापना करैत परोपट्टामे नाम बजौलकै। ऐ कथा सँ ' बेटी पढाऊ- बेटी बचाऊ' केन्द्रीय नारा केँ मजबुति भेटैछ ,जे समसामयिक घटनाचक्र छी। रामचन्द्र जी केँ कथाक जे लालित्य आ गरहैन सौष्ठव भेल अछि से कथा पढ़ि पाठकगण अभिभूत अवश्ये होयब । हम तँ खूब प्रशन्नता पूर्वक आशिर्वाद दैत छीयैन। बेरमाक कथा गोष्ठीमे एहने स्तरीय कथा गैढ़केँ आनथि। एखन एतबे!

पोथी चर्चा -: स्पेशल परमिट

हालहिमे नरहिया (मधुबनी) मेँ सगर राति दीप जरय'क कार्यक्रम कथा गोष्ठीमे लोकार्पित मैथिली पोथीक रचियता छथि श्री ओमप्रकाश झाजी। एहि 113 पृष्टक मैथिली भाषा मेँ साहित्यिक पोथी स्पेशल परमिट केर दाम 200 टाका छैक जे निर्मली 'क पल्लवी प्रकाशन सँ बहराएल एहि साल 2023 ई० मेँ। श्री ओमप्रकाश झा कृत मैथिली साहित्य क' पोथीमे 32 गोट शिर्षक बिहैन कथाक आ शेष 12 टा लघुकथा 'क विषय-सूचिमे मिज्झर छैक। अंग्रेजी क' शव्द मैथिलीमे ' स्पेशल परमिट ' बिहैन कथा छी,जे कथाकार महोदय 80म् सगर राति दीप जरय'क कार्यक्रम -निरमली वजाज धर्मशाला मेँ दि0 30-11-2013 ई० केँ हमरा समक्षे गोष्ठीमे पाठ कयने रहथि। पहिलेहुँ लिखलौंह अछि सद्यप्रकाशित एहि पोथीक' लोकार्पण 30 सितम्बर केँ भेल रहय,ताहि सँ पुर्व एहिक सीडी कैसेट्स रूपमे बेरमा गाममे दि० 21-12-2014 केँ सेहो आदरणीय जगदीश प्रसाद मंडल,कल्पकवि उमेश नारायण कर्ण आ राम विलास साह जी द्वारा लोकार्पण भेल रहैक। महज पुस्तकाकार रुपेँ ई छपिकय पाठक बीच हुनक धर्मपत्नी श्रीमती रेखा झा केर कोशिलिया कैंचा सँ भेल अछि,जे अधिक प्रशन्नताक बात भेल। साहित्यकारक संवेदना अपना रचनाक प्रति व्याकरण केर दृष्टि सँ मजगूत छन्हि। एहि दूनू स्तंभमे सँ कोनू विधा कमजोर नहि भेल छन्हि। ई मैथिली पोथी एतेक रास रोचकता सँ भरल छैक जे पाठक वर्गकेँ पढि सतत् मोने रहतैन। ओना बहुतो कथा अनेको कथाकारके पढ़ि लेब मुदा मोन रहि पबैछ बढ़ कमे साहित्यकार'क । से पहिलहुँ कहलौं ओम प्रकाश झाजी अपन पहिलुक लघुकथा आ बिहैन कथाक संग्रहमे खुब जमलाह अछि। श्री झा जीक पिताजी सेहो साहित्य अनुरागी छथि आ बाबाक सहोदर भाय स्व० जीवकांत प्रसिद्ध कथाकार डेवढ़ - घोघरडीहा जि० मधुबनी सँ साहित्यकिए वातावरण बाल्यकाल सँ हिनका बिरासतमे भेटल छन्हि। तैयो ओ आदरणीय जगदीश प्रसाद मंडल जीक कथालेखन सँ बढ़बेसी आबेश हेबाक गछैत छथि। मूलत: झा जी कवि ओ गजलकार छथि। हिनक मौलिक रचना सभ इन्टरनेट पर सदा अभरैत रहल हन। सन् 2012 मेँ 'कियो बुझि नहि सकल हमरा ' आ 2023 ई०मेँ " कोन रंगक ई तान- खन अपन खन आन" गजल संग्रह प्रकाशित भेल रहनि। हिनक बिहनि कथामे किछ लघुकथा, तँ लघुकथा मेँ पूर्ण कथा शव्द आ वाक्यके परिमाप अनुसारे सूचीमे पैसल आवश्य छन्हि। एहि सँ आगू आबयबला समयमे एक पूर्ण कथाकार रूपेँ हिनक दीर्घ कथा पाठकक समक्ष आओत से संभवत: स्पष्ट दृष्टिगोचर होईछ। उप आयकर पद पर दिल्लीमे कार्यरत रहि श्री झाजी दि० 15-9-2023 केँ अपन पोथी बावत 5 पृष्टक" अपन कथा " लिखैत एहि मैथिली भाषा

केर साहित्य कैँ माता श्रीमती रामकुमारी झा आ पिता श्री पीताम्बर झा जीकैँ समर्पित करैत पहिल खिस्सा " स्पेशल परमिट " लिखबाक अभिप्राय सँ एहि पोथीक शुभ संज्ञा ' स्पेशल परमिट ' रखबा पर सम्यक दृष्टिकोण रखलनि अछि। सद्यप्रकाशित एहि पोथीक'पृष्ठ संख्या 72 पर शिर्षक डिहक जमीन साढ़े छह पन्नामे दीर्घकथा सन बुझाएत। नरेश नामक नायक भोपालमे शिक्षा अधिकारी रहैत छैक। आरंभमे ओकर पारिवारिक अवस्था अत्यंत विपणतामे रहैछ। बालपनमे ओकर माय मरौनाबाली पढ़ाबैक विमर्श अपन पति फेकन मरड़ सँ कयने छलीहे। जहनकि चारिये सालक बालकके चरबाही धराबैले हुनक गिरहत भुटकून बाबू कहैत रहनि। विशेसर मास्टर कैँ चटिया भर्ती करैक रहनि तैँ नरेशक पलिबारमे हुनकर नामक चर्चा आगू बढ़ैत बटिया खेतक मालिक आ पशुपालक भुटकुन बाबू लग भ' गेल छलैक। मालिकके तर्कसंगत बात रहैक जे तोहर बापो तँ हरवाही चरवाही हमरा ऐठाम करैत तोरा चारिमे बरखक वहिक्रम मे संग लगौने रहौक। ताहि पर मरड़ जीक युक्तिसंगत उक्ति होईछ आब पुरना जमाना नै ने छै! से बेटाकैँ पढ़ाबैत मैट्रिक 80 प्रतिशत अंक सँ बोर्ड परीक्षामे पास करबैत छैथ । तत्पश्चात दरभंगा कालेजमे पढ़य जाईछ। जहन टियूशन पढ़ाबैत अपन प्रतियोगिता परीक्षाक तैयारी सेहो करैत ओ कुशल व्यवहारक रहने सहपाठी आ अध्यापकक नजैरमे प्रिय बनैत छै नरेश। आओर नरेश'क वियाह भ' जाईछ, कालेक्रमे ओकर कनियाँ संग धरैत मध्यप्रदेश ओकरा लग रहैत शहरी बनै छथिन। गाममे माय बाबूक सुधि लैत रहैत एकबेर आग्रहो कैलनि नरेश जे दूनू गोटे शहरे हमरा लग रहय चलू। मुदा आठ धुर घर-घरारी छोड़ि हुनक बाबू किन्नौ ने जाए चाहैत य। धरि नरेश अपन बाबूजी कैँ हरबाही छोरा देलकैक। बालबच्चा 'क पढाय लिखाइमे आ सरकारी सर्विस मे लटपटाएल कतेको साल ओतहि गिरहबासु होइत पिताक मोबाइल वार्ता सँ गाममे घरक सटल जमीन नहीं किनबाक आ जे पुश्तैनी डीह छै सेहो बेचयके निधोख गप्प राखि देला सँ पिता मायुस भ' जाई छन्हि। जहन कि चालीस हजार टाका जरसेमनके दू कट्ठा परति बाड़ी मात्रे हिनका पच्चीस हजार रुपए मैँ भुटकून बाबू द'दैतैन। गामसँ पिण्ड छोड़ेबाक नियार कैँ एकाएक अधात पुहुँचैत छैक नान्हिटा छोटकी बेटीक गप्पसँ नरेश जीकैँ। चौथा वर्गक पढ़ैत बेटी सुनन्दा'क अकिल जेहन ने उत्प्रेरित केलकैन जे नरेश बाबू के मरल विचारमे प्रेरणा जगलैन। से पाठक अपने ओहि बुच्चीक स्नेहिल गप्पसप जानै ले ऐ पोथीक केन्द्रीय कथा 'स्पेशल परमिट' कें नहिं,रेलयात्रा सँ चिकना स्टेशन आबि अपन- माय कैँ दस शालपर सजल नयन सँ एकाएक दिठादर्शनक संगहि डीह किनैत गामक लोकके अपना छोट मरैयामे खूशी सँ चाह पर चाह पियबैक प्रसंग नीक लागत डिस्क जमीन मैँ। भुटकून बाबा केर आशिर्वाद धरि सदा बनल रहैक। स्पेशल परमिटमे सिनेमा हॉल केर मैनेजर साहेबक दिस सँ बहुत राश स्वागत आ विनम्र वार्ता सुनि छोटकी बेटी प्रशुन्न दिए कहैत छैक अपन बाबूकैँ। ओ स्कूलक गेटक भीतर अपन गाड़ी सँ उतरैत छै आ हमरा आने विद्यार्थी जेकाँ गेटक बाहरे उतारि देल जाईछ। से अहां कैँ जहन स्पेशल परमिटक कारणैँ एतेक बेसी धाक अछि

तँ आब सँ हमरा अपने गाड़ी सँ गेटक भीतरमे आबि उतारल करू! बेटीक बाप ई कोना ओहि ललनाके बुझा पाओत जे प्रसुन्न तँ कलक्टर केर पुत्र थीक,से ओकरा हमरा सँ पैघ परमिट छैक। आखिर बालबोधकेँ स्तरक थाह नहिँ लगैत छै। ऐ बिहैन कथामे डेढ़ पन्ना अजबारल गेलैक हन्। ओम जीक बिहैन कथा पढ़ैत पाठककेँ अतिशय आनन्दक अनुमति निठाहे होयत। गरम मसाल्ला शिर्षकमे अपने निहारब सोनू - मोनू दूनू कालेजक संगी रहैछ। एकदिन सोनूकेँ नव परिधानमे सजल आ इतर फुलेल सँ गमागैम पाबि ओकर सब संगी घेरकय ऐ तरहक अचरज सन तैयारी 'क रहस्य जानबाक तीव्र जिज्ञासा करैछ। सोनू अपना महल्लामे नव आगन्तुक परिवार जे भाड़ापर डेरामे बसय ऐलैक हन,तकर अति सुन्नरि छौड़ी बावत रूपक प्रशंसा मादे रसगर वार्ता करैत छैक। ताहि पर मोनू कहैत छै,तोड़ा मुहल्लामे तँ इयहटा यार बडसुन्नरि नवयुवती थोड़े छौक! हमर तँ तिक्ष्ण नजैर रहय से एकटा टेबि लेने छी। तैपर ओ बजैत छै चल देखा तँ ,आखिर हमरा पैनी निगाह सँ आईधरि कोना बाँचल रहि गेल? जहन दूनू आगू बढ़ैत गेलैक तँ एक छात्रा टियूशन पढैय अबैत छली से देखते मातर ओ ओकरा दिश संकेत करैत बताबैत छै। कहलकै देख ले हमर गरम मसाला कोना छमकैत चलि रहलैक अछि। सोनूक माथ सन्न रहि मोनू केँ तराक झापड़ गालपर मारैत चेतौनी दैत बाजलै ई हमर छोट बहिन छी। आब तँ दूनूक कल्पित सुआद उखड़ैत तीत भेल जाइत रहलैक। ई सब उमेरक दोख छी आ विज्ञान कहैत छै विपरीत ध्रुव लिंगक आकर्षण सहजे रहैछ। आश करैत छी ओमजीक नीक कथा पोथी मैथिली साहित्य आन्दोलनमे शिघ्र दोसर आओत,इयह कामना अछि।

आकर्षण : ढ़ाई आखर प्रेम का

'दो हंसो की जोड़ी बिछुरी गयो रे,गजब भयो रामा - जुलुम भयो रे' उपर्युक्त गीत - संगीत सुनि ककर मोन ने विभोर होएत होयत। कतेको बेर रेडियो - टीवी० पर आ ध्वनि विस्तारक यंत्र संचार सँ तथा भजन संध्यामे ई पाँति सुनि आनन्दित भेल छी। से हाँस दम्पतिक प्रेम कोनू कारणेँ खंडित होयबाक चित्र " ढ़ाई आखर प्रेम का " पोथीक आवरण कलेवर देखि मोनमे प्रेमक संदर्भमे अनेको चित्र सिनेमाक रील जेकाँ आयल अछि। ओना संकिर्तनमे राग पूर्वक गायन बालपनमे अपन छोट मामाजी सँ हरिणी - हरिणाक व्यथा सुनि जे संयुग्म जोड़ी पर व्याधाक समधानल वाण नर केँ लगतहि मादाक विलाप अटुट प्रेम संदेश पसारैत रहलैक। से बिलखि -बिलखि प्रसंगक जे प्रेमगाथा गाम - गाममे स्रोता सुनैत य, तँ प्रेमक रहस्यमय परिस्थिति सँ अनुभव बढ़बैत छै। आ दग्ध हृदयमे क्रौंच पंछिक शिकार करैत शातिर बाल्मिकी के तीर धनुष सँ घायल भेल पंछीक क्रन्दन सँ आत्मग्लानि हुनका होएतहि पहिल काव्य क' पाँति संस्कृतमे स्वत: प्रस्फुटित भेलनि,जे हुनक हृदय परिवर्तन भेलासन्ता ओ अध्यात्म मार्गक ब्रह्मज्ञानी कहेलाह। से ऐ हिन्दी साहित्य सृजन केँ काव्यपोथी'क आकर्षकता केँ भीतर ऋणात्मक संकेत परोक्षरुपेँ दृष्टिगोचर पाठकके होयत। दुनू पंछीक मुँहमिलानी बाला चित्र साझा कयल रहैत तँ धनात्मक ऊर्जा 'क स्थान बुझाइत। तेँ पोथीक आवरण साहित्यिक संकेत देवामे पछुआ गेल हन्। से अढ़ाई आखर (वर्ण सँ) सँ बनल शव्द ' प्रेम' केँ बुझय ले रहिमन कवि केर पाँति सहजे मोन पैड़ जाएत -: रहिमन धागा प्रेम का.....! आ संतप्रवर कबीर साहेब केर साखी,शवद ओ रमैनी मेँ विस्तार सँ मानव ,जीवन - जन्तु आ प्रकृतिक मादे प्रेमक निहितार्थ भावपुर्ण वर्णन लोक सुनैत बुझैत आयल अछि। हुनके पाँति सँ लेल गेल सद्यप्रकाशित एहि पोथीक' नाम 'ढ़ाई आखर प्रेम का' लेल गेल निठाहे छैक। नरहिया मे हालहिमे लोकार्पित ऐ पोथीक रचियिता नव युवती कवियत्री कु० पल्लवी मंडलके पहली सोपान देख पढि मोन जुड़ा गेल य। प्रथमत: गीत कविता के स्री हस्ताक्षर सरोजनी नायडू आ हिन्दी जगत केर सुविख्यात कवियत्री महादेवी वर्मा आ महास्वेता देवीक रचना सोझामे लौकैत य। कविता केँ साहित्यके सबसँ पैघ विधा कहल गेल छैक। से आजुक साहित्यिक परिदृश्य मेँ चन्द रस सँ सराबोर दोहा सोरठा जंका तुकबंदी कविताएमे कम अभरैत अछि। तहिना पल्लवी जीक सेहो ओई सँ सम्पृक्त नहिं बुझाइछ। ओ अपन अभिव्यक्ति केँ सोझे कविता भावमे गढ़ैत उनसैठ गोट रचना केलीह हन। 'भाषा' शिर्षक कविता कतेको मंच सँ आ विद्वतजनके बीच अपन हिन्दी कविता क' पाठ प्रस्तुति देलीह आ सराहल गेलीह अछि। वर्तमान समाजमे विशेष कय वंचित लोकमे जे चन्द तरहेक समस्या अछि,ताहिक समाधान

दिश अपन कलमकेँ गतिमान करबामे समर्थ भेलीह अछि। जहिना प्रकृतिमे सात रंग (पनिसोखा) होईछ, तहिना प्रेमके सात तत्व होईछ। एक परिवार दोसर परिवार सँ अपन पड़ोसमे सद्भावना पूर्वक प्रेम राखय ,जेना बेटी माय सँ पिता - पुत्र सँ प्रेम रखैत अछि। हिन्दू मुस्लिम सँ सिनेह लिखैत छथि-तहिना बूढ़ पुरान सँ पौत्र नाती प्रेम रखैत छै , आ ई एक गामक लोक दोसर गामक लोक सँ खइल्लत- मिल्लत निमाहैत; सांस्कृतिक सौहार्द मेँ रहैछ। एक पंचायत दोसर पंचायत (जिला परिषद क्षेत्र),एक प्रखंड दोसर प्रखंड सँ (विधानसभा क्षेत्र) आ एक जिला दोसर जिलाक (लोकसभा क्षेत्र) लोक सँ प्रेम राखि राज्य,देश,महादेव। आ विश्वमे मानवीय सरोकार बने रहैछ से प्रेमक निहितार्थ दर्शन थीक। इयह मानवीय सद् व्यवहार प्रेम रूपी कन्ट्रोल यूनिट छी। इयह ताना बाना जौं कदाचित टुटैत, भंग होय तँ अव्यवस्थित वातावरण जर्जर हालत में जाईछ। ऐहिके समन्वय आ हस्तक्षेप लेल बल , कन्ट्रोल आदि प्रवन्धन केर आवश्यकता पड़ैछ। मानवीय संवेदना आ प्रेम सँ उंच नीच, अश्यपृश्यता, घृणा,आदि भेदभाव समाज सं समाप्त कयल जा सकैछ। प्रेम तोड़क ने जोड़क विधान अछैत सामाजिक जीवन वितबैत जे अनुभव कयल , तकर वानिकी देखबाक एक झलक कोर्ट कचहरीमे मनुखक भीड़ सँ स्वत: आश्वस्त भऽ सकैत छी। भारतीय समाजमे व्यापक रूप सँ व्याप्त पीड़ा, विसंगति आ विद्रूपता 'क हलाहल केँ अन्तर्मन सँ अखियासैत काव्य सृष्टिमे कर्म कयलीह पल्लवी मंडल तेँ हिनका हम कविर्मणीषी परिभू स्वयंभू कहैत छीयैन। पहिले पहिल साहित्य रचना जगतमे श्रेष्ठ रसमय कविता पटल पर आनवाक ले कोटिश: बधायके संग मंगल कामना करैत छियैन।

प्रेम बनल रहय तँ सब समुदाय मेँ सहिष्णुता कायम रहतैक आ झगरा फसाद केर जगह शांति बहाल रहतैक। जाहि सँ अदालत आ ग्राम कचहरीमे सेहो अमन चैन हेतैक। लोक तंगहाली सँ अनेरे बांचत। तेँ आवश्यक छै एहन स्तरीय कविता संग्रह पढ़ि अपनेआपकेँ प्रथमत: आदर्श नागरिक बनिके समाजमे एक उदाहरण बनी। पुस्तक सुधि पाठक पढि हृदयतल सँ ऐ कविताक भाव भंगिमा पर आत्मसात भऽ अपन सम्पूर्ण दृष्टि राखि 119 पृष्टक पल्लवी प्रकाशन 'क अभिनव कीर्ति केँ 200 टाका दाममे कीनकेँ सहेज सकैत छी। अपनी बात स्तम्भ लिखैत कुमारी पल्लवी हमरोसन अदना साहित्य सेवीकेँ सादर नमन केलीह ,से हुनक बड़प्पन थीक।

बदलैत गाम

पोथी समीक्षक -: लाल देव कामत

कालीदास विद्यापति साइंस कॉलेज, उच्चेठ - बेनीपट्टी (मधुबनी) केर प्रधानाचार्य डॉ० शुभ कुमार वर्णवाल रचित ६१ गोट मैथिली काव्यके संग्रह " बदलैत गाम " पढबाक सुअवसर भेटल। एहि १४३ पृष्ठ 'क २०२२ ई० मेँ पल्लवी प्रकाशनक पोथीक दाम तीन सय टाका अछि। सद्यप्रकाशित एहि मैथिली भाषा मेँ पोथी क' आवरण पृष्ठ पर ग्रामीण क्षेत्रक परिवेश आकर्षक देखाईछ। पोथीक पछिला कॅभर पर कविवर महोदय के सचित्र छवि - व्यक्तित्वक परिचय छन्दमे देल गेल छैक। श्रीमान वर्णवाल जी सन् २००७ सँ मैथिली कविता रचवाक दिस उन्मुनेलाह,ताहि सँ पूर्व ओ हिन्दी भाषा क्षेत्रमे काज करैत धरि हिन्दी कविता संग्रह " शुभ कल्प " पोथी निकालि चुकल छलाह। ओना वर्णवाल जी भूगोल विषयके प्राध्यापक रहल छथि। तेँ हिनक नव कविता मे भूगोलीय - खगोलीय छँटा देखबाक जतन करी। सद्यह हिनका कविता मे छन्द,अलंकार, रस तँ छन्हि मुदा तुकबंदी सबठाम नहिं मिलैत छैक। तैयो पहिल मातृभाषामे पोथी ' बदलैत गाम ' एक अभिनव प्रयोगक दस्तावेज थीक। गाम समाजमे जे परिदृश्य अखनो बाँचल अछि आओर पैछमी सभ्यता सँ सम्पृक्त नहिं भेल अछि से निशन लोकाचार मादे कविता गढ़िकय कविवर महोदय साहित्य क्षेत्र मे पैघौत पौलनि अछि। बदलैत गाम 'क रचनाकार डॉ ० वर्णवाल जीक संदर्भ मे अपना शुभाशंसामे कामेश्वर सिंह दरभंगा संस्कृत विश्वविद्यालय के कुलपति श्री शशि नाथ झा लिखने छथि - "मैथिली कविता संग्रह मे डॉ० शुभ कुमार वर्णवाल क' स्वरचित विविध भाव'क कविता संग्रहीत अछि । विशेष कय गाम घरक माँटि पानिक सौरभ सँ ई मह- मह कए रहल अछि।" किछु कविता के ओ विशेष रूप सँ सराहलनि अछि,यथा-: राष्टभावना, अतिथि सत्कार, मिथिला,गंगा, पर्यावरण,करोना,सुनामी, दाही, रौदी , भूकम्प, आतंकवाद।

मधुबनी सँ प्रो० जेपी. सिंह जी अपन शुभोद्गार मेँ कहैत छथि- " डॉ० शुभ कुमार वर्णवाल जीक कविता मे ज्वलंत समस्या स्वयं रूप ल' लैत छैक। भूगोलविद् डॉ० वर्णवाल जी सँ समाजक भूगोल दुर नहिँ भय सकैछ। समस्याक ध्वन्यात्मक आ गीतात्मक अभिव्यक्ति हिनक कविताक विशेषता अछि। आधुनिक सभ्यता ग्राम संस्कृति केँ निगलैक प्रयास करैत छैक। एखनो संवेदनशील व्यक्ति गामकेँ नहिं बिसरि सकैत अछि।"

खेत'क ई एकपेड़िया पीपड़क छाँव !

भैया बिसरि गेलहुँ अप्पन ई गाँव !!

अपन शुभोक्तिमे प्रो०(डॉ०) टुनटुन झा 'अचल ' सेवानिवृत्त विश्वविद्यालय प्रचार्य एवं विभागाध्यक्ष स्नातकोत्तर भुगोल विभाग लनामिविवि० दरभंगा सह पूर्व अध्यक्ष , बिहार - झारखण्ड भूगोल परिषद - पटना लिखैत छथि -:

' बदलैत गाम ' काव्य संग्रह मे अधिकांश कविता गेय अछि। वस्तुत: कविता जखन संगीत केर चाशनीमे लपेट देल जाइत अछि त' अति माधुर्यक संग लोकप्रिय बनि जाइछ । हम हृदय सँ आशिर्वाद दैत अभिव्यक्त क' रहल छी जे डॉ० ' शुभ' माँ मैथिलीक' सेवा मे निरन्तर अपन लेखनी चलबैत रहथि ताकि वर्तमान आ भविष्यक पीढ़ी लाभान्वित होइत रहए। चरैवेति.....चरैवेति..... !

कविक ' पावन मिथिला धाम ' वाचन करैत अपने पाठक देख सकब जे एहि धराधाम पर अतितमे जनक, याज्ञवल्क्य, भारती - मण्डन , उदयन, विद्यापति, शिव रूप उगना, अयाची , राष्ट्रकवि दिनकर, जगजननी सीया, दीना-भदरी, लोरिक दुलरा, राजा सलहेसक गौरवगाथा सँ भरल अछि। कवि पाँति ऐ तरहेँ रचलनि अछि। यथा-

..... पग-पग पोखरि ताल- तलैया
नामी माछ - बखान
सुन्नरि वाला सुन्नरि शाला
पान भरल मुख आम ।
परम प्रिय .....!!

अपना देशमे ७०प्रतिशत कृषि काजमे संलग्न कृषक आ खेतिहर मजदूरक अबदशा पर चिंता करैत कविजी ' पीड़ा - दर्द किसानक मुख' कविता 'क रचना कयलनि। एहिमे किसानक प्रमुख समस्या आ तकर समाधान धरि रेखांकित क' सरकारके कठघरामे ठाढ़ करैत छथि।एहिक पाँति द्रष्टव्य -:

..... खेती देशक रीढ़ कहाबैछ
अछि किसान देशक कंगाल;
ऋण सँ दबल आत्महत्या करैछ
घर - गृहस्थिक हाल - बेहाल। .....

कवि जी ' वाढ़ि - सुखारक नैहर मिथिला ' कवितामे समाजक आह्वान करैत कहैत छथिन; सब मीलि करियौ निदान यौ। एहिमे पाँति देलनि अछि -

..... खेती-बाड़ी सब पिछड़लए
हाल- बेहाल किसान यौ;
ढ़ोकबा - ढुनका,बुचनी- लुटनी
भुखले सुतल मचान यौ।

वाढ़ि l

कवि जी ' नशा मुक्त अभियान यौ' कवितामे बिहार कैँ नशा मुक्त करयमे सबके आह्वान करैत चिन्ता कयलनि अछि। एतुका नवतुरिया धरि भाँग , गांजा,खैनी - बिड़ी, सिगरेट ,गुटका ,तारी - दारू, अन्य मादक द्रव्य उपयोग करैत रूग्न भ' जाईछ। निशावाज सोभावक कारणेँ नीक लोक अपन रस्ता पेरा प्रतिष्ठा कोना बचाएत,कियाक तँ शराबी अबैत जाइत पथिकके देख चन्द तरहक उटपटांग करैछ। आब देखाबटीमे नियमत: नशा मुक्त छैई। पाँति-:

...,..... पैघ - पैघ जे होईछ बेमारी
नशा मात्र केर सेवन सँ
प्राण पखेरू उमेर सँ पहिने
फुर्र उड़ि जायत जीवन सँ !
देश हमर गांधी - गौतम केर
दिव्य महाबीर ज्ञान यौ!
दुर गरीबी l

हम आब हिनक दोसर रसगर कविता पोथी " रूसल प्रकृति " पढयके ताकमे छी!

आधुनिक चिट्ठी : ई-मेल

लाल देव कामत (साहित्य)

इलेक्ट्रॉनिक मीडिया सँ सामग्री उर्जा आ उपकरण'क उपयोग प्रिंट मीडिया'क बन्सब्त तीव्रतम होईछ। एहिक सीडी रोम , ऑनलाइन सामग्री, स्लाइड परिचय , ध्वनि खाता, वीडियो क्रोनिकल्स आ इन्टरैक्टिव मीडिया परिचायक छैक। नव मीडियाक पैघ भाग इलेक्ट्रॉनिक मीडिया रूपेँ होईछ। सरल इलेक्ट्रॉनिक जनतब आ डिजिटल इलेक्ट्रॉनिक जनतब दू तरहक होईछ। इलेक्ट्रॉनिक मीडिया कोनू संरचनामे भ' सकैछ। कंपेनियन ऑडिट प्रस्तुत रचना आ सब्सिडी आवेदनक स्क्रीनिंग मध्य कयल काजक संकेत करैत अछि। इयह प्रक्रिया रचनाकारगणके हुनक नियन्त्रण केर स्वीकृत दिशानिर्देश केँ पूर्ण करबाक आग्रह करैछ। आओर महत्वपूर्ण ख़ोज अनुचित संदर्भ , स्वीकार्य समझ आ व्यक्तिगत दृष्टिकोण क' छिरीयाई सँ कम करैछ। समाचार मीडिया जनसंचार माध्यमक ओहन तत्व छी जाहि सँ आम जनता (एनवाइड मोबाइल उपभोक्ता) वा जनताधरि समाचार जनसम्पर्क उपर धियान केन्द्रीत करैछ। एहिमे प्रिंट मीडिया आ रेडियो - टेलीविजन हालमे बसियाइल लगैछ, शिवाय इन्टरनेट के। ग्लूबल मीडिया जर्नल, इंटरनेशनल सोशियोलॉजी जुगमे मास कम्युनिकेशन सोसायटी आगू सदैत रहत। मैथिली मे इन्टरनेट सँ श्रीमान गजेन्द्र ठाकुर जी द्वारा (संचालित याहू सिटीज पर) ई-पत्रिका ' भालसरी 'क गाछ' नामसँ पहले पहिल उपस्थिति २००० ई० मे भेल छल। से ब्लागर सँ संबंधित एकाउंट बोन भेलापर २००४ मे एहि नाम सँ ब्लाग श्री ठाकुर जी बनौलनि। ताहिक जनवरी २००८ मेँ विदेह नाम पड़लैक। तेँ पछिला २००४ सँ ISSN भेटलैक। मैथिली विकीपीडिया केर शुरुआत सन् २०१४ सँ जे कहल जाईछ,से पूर्णतः भ्रामक अछि। मैथिली वेब पत्रकारिताक इतिहास के लेखक आशीष अनचिन्हार एहि तथ्य केँ सुस्पष्ट केलनि अछि। जहिना मिथिला 'क इतिहास संदर्भमे विभिन्न इतिहासकारक टुकरी - टुकरीमे प्रमाण पृथक - पृथक भेटैछ, तहिना मैथिली विकीपीडिया संबंधमे मत अलग - अलग आयल अछि। अक्टूबर २०१४ सँ पूर्वहि सितम्बर धरि कम मैथिली अनुवाद रहितो मैथिलीक पन्ना गजेन्द्र जी आ राजेश रंजन जीक सफल परियास सँ विकी घोषणा धरि भेल रहय। एडमिन बनबाक लेल गजेन्द्र जी केँ प्रस्ताव एलनि तँ हुनका अपन समय देखय पड़लनि आ ओ राजेश जी सँ मन्त्रणा करैत बिप्लव आनंद नाम पर सहमति कयलनि। ई हुनक महानता थीक जे एक्टिभ बिप्लव आनंद जीके विकिपीडिया टीम गैछ लेलक। आओर अक्टूबर २०१४ मे मैथिली विकीपीडिया लाइभ भ' गेल। विकिपीडिया केर एडमिन बनबाक जे मेल सब छै से पाठक लेल विदेहक अंक- ३५१ द्रष्टव्य होएत। गजेन्द्र ठाकुर जी द्वारा

यूनीकोड, गूगल ट्रांसलेशन एवं विभिन्न Community Project मेँ हुनकर जे संलिप्तता छनि ताहि सँ संबंधित ई-मेल सार्वजनिक कयल गेल छैक। सन् २००८ क' जनवरीमे रद्द भेलासन्ता फेर गजेन्द्र ठाकुर रिक्वेस्ट केलखिन आ अनूवाद काज पूरा करबाक लेल ओ अपना टीम सँ सहयोगक अपेक्षा केलनि। से विदेह अंक-३ ,१ फरबरी के अपील छपल रहनि।

ई घोर आश्चर्यक बात छी,जहन जे कोनू काज आरंभ करैछ तँ ई मनोवृत्ति पोसि लैत जाइ छथि जे हमहीं ई काज प्रथमत: शूरू कयल। ई जे पहिले पहिल बनबाक लोभ समरण नहि कए बलथोथरि करैछ,तकर तँ प्रमाण दिअ पड़त किनै। मुदा आधुनिक इतिहासकार समय- समय पर एहन मनोवृतिके मैथिल सभक पर्दाफाश करैत रहलाह अछि। ताहिक्रम मे आब कहबाक अछि जे , मैथिली विकिपीडिया 'क सेहो इतिहास एहने छैक। जाहि बिप्लव आनंद केँ गजेन्द्र ठाकुर आ राजेश रंजन आपसी सहमति सँ विकिपीडियाक संचालक बनाओल,सयह बिप्लव आनंद आ ताहि संग नेपालक किछ लोक ई कहि रहला अछि जे मैथिली विकिपीडिया के शुरुआत २०१४ सँ भेलै। जँ एप्रूवल केँ शुरुआत मानल जाइत हो तखन तँ ई आरो आवश्यक छै, जे एप्रूवल सँ पहिनुक कयल काज सार्वजनिक होय। से निहायत ज़रूरी छैक। गजेन्द्र जीक आ राजेश रंजन जीक नाम अलोपित कोना क' सकै य कियो। आशिष अनचिन्हार जीक सम्पादनमे " एहि मैथिली " पोथीमे पुष्ट तथ्यके संग गजेन्द्र जीक साहित्यिक योगदान लेल विशेषकय मैथिली वेब साइट मादे अनेको विद्वतजनके आलेख सँ धोईन लागल परिवेश अवश्य फरिच्छ होयत। विदेहक ३१३ म् अंक १ जनवरी २०२१ वेब पत्रकारिता विशेषांक सँ अध्येताकेँ ज्ञानमे वृद्धि भेलै य । विदेह मैथिलीक ई-पत्रिका पहिल सम्पादक गजेन्द्र ठाकुर छथि जे एक सँ अधिक यथा-: ब्रेल,ब्राह्मी, खरोष्ठी ,कैथी,नेबारी, आई पी ए, उर्दू,तिव्वति तिरहुता (मिथिलाक्षर) लिपि आ देवनागरीमे पत्रिकाक अंक नियमित प्रकाशित करय छथि। हमरो किछ कविता संग्रह डॉ० उमेश मंडल द्वारा प्रकाशन लेल हुनका बाबूजीक समक्ष देल गेल रहय।

हमर पड़ोसी गामक मित्रवर अजीत आजाद (मिश्र) एक समय सौभाग्य मिथिला चैनल के काज सँ नौआबाखर- देवनाथपट्टी मेँ बसल सात डोम परिवार (महा दलित) ओहिठाम साक्षात्कार लेल हमरा संग कयके गेल रहथि। ओतय सुअर पालन आ मुर्गा पालन सन्न वातावरण दुर्गंधयुक्त रहैक। तेँ बेसीकाल समय नहीं दैत लखन मल्लिक सभक पारंपरिक व्यवसाय ,घरेलू कुटीर उद्योग- बांस सँ बनैत छीटा कोनियां,पथिया दौरी, चंगेरा ,गुरचल्ला चालनि ,फुलडाली मेघडम्मर,मौनी बियैन आदि कला कौशल के प्रशंसा करैत ऐ पुश्तैनी सामग्रीक' विपणन आ कांच साधन कोन रुपेँ ऐ मँहगी समयमे उपलब्ध होय य से दृश्य आम जनता बीच प्रसारण भेल रहैक। ओहि दिनक वाद ऐ तरहक मैथिली चैनल सँ सिनेह जागल रहय। आनो कार्यक्रम टीवी पर आ रेडियो भुरुकबा सुनि - देखी। मैथिली जगतमे आरो पोर्टल आ मनोरंजन लेल व्हिजीट कय राजनीतिक, सामाजिक आ सांस्कृतिक व्यापकता बुझिमे आएल। नव

पिढि तँ मातृभाषा सँ दुर होइत चलि जा रहल छल , से इन्टरनेट युगमे आब बेसी चिपकल देखाईछ । घसल अठन्नी, कोसी'क दर्द,जंगला -मंगला ,दियर- भौज आदि मैथिली भाषिक बीच विशिष्टता हासिल कयने रहय। आब एहिक प्रवन्ध निदेशक भोला कुमार मिथिला 'क मांटिके सुगंध देश देशांतर धरि पसारलनि। एहि कम्प्यूटर युगमे लाइपटाप सँ आ इन्टरनेट सँ नव पिढिक जुटान ततेक ने भ' रहलैक जे आब ओ खुद अपने सामाजिकता सँ कन्नी कटैत अछि। से एकटा खतराक संकेत छी। अभिभावक नव पिढिक समाज (लोक) पर अपन निगरानि अवश्य राखथि। बिनु खर्चक' आब पत्राचारमे ईमेल अपन उपयोगिता धरि साबित केलक हन्। गजेन्द्र जीक उपल्वधि अनेकों जैन जकर विस्तृत विवरण एहि लघु आलेख मे संभव नहि भ' सकल।

गढ़चिरौलीक स्मरण

९०क दशकमे हम बिनोवा आश्रम स्कूल क' सहायक प्रकल्प अधिकारी छलहुँ।ओही समय एन सी आर डी -नागपुर केर सेक्रेटरी डा०राम काले जी जनौने रहथि, जतय आदिवासी लोकसंख्याँ २०बर्ष पूर्व जनगणना मेँ विरल रहय;आ ओहीठाम शिक्षाक अलख जगेबाक लेल राज्यसभा सदस्य शुश्री निर्मला देशपांडे जी बीड़ा उठौलिह अछि।से अहीं बिहारी सिधेशर राम ,सुभाष गुप्ता आ नारायण श्रमिक केर क्षेत्र पर्यवेक्षण धरि करय सँ आवासीय आश्रमशाला क' काज आगू बढ़त।ओहिठाम प्रकाश भाई आ दिनेश मंडल क'बाद अर्जून भाई काज दैखैत छैक, जे शिक्षक सोमनकर केर संग नक्सली वारदात सँ सहमि गेलैक य।ओतय बिहारक विजय आर्य नक्सली केर सर्वेश्रवा छथि।से ठिके बढ़ वेशी ओही दुर्गम इलाकामे घटना होइत रहैक।गत शुक्रवार केँ पुलिश 'क सी० ६०कमांडोक संग मुठभेड़मे१३नक्शली मारल गेल,जे गढ़चिरौली जिलाक पुलिस उप महानिरीक्षक केर हवालेसँ मीडिया मेँ ई ' खबर आयल। एटापल्लिक कोटमी लग जंगलमेँ एक बैसक लेल नक्सलाईट जमा भेल रहैक।आलापल्ली तोंदेल ,अहेरी तलवाड़ा,गेदा हेडरी आ बिनागुण्डामे हम डेढशाल रहि गुजर काटने छी।बढ़ मोन पड़त य.....! अहिंसक रचनात्मक समाज केर कामकाज सेहो हमरा जीवनमे निर्भिकता आनलक। महाराष्ट्र राज्य केर विदर्भ इलाकामे चन्द्रपुर जिला सँ १६ अगस्त १९८२ केँ फुटे ८०किमी०दुर गढ़चिरौली जिला बनलै। नागपुर शहर सँ १८० किमी० दुरी पड़ैत छैक। वन, पहाड़ आ नदीक बहुतायत दुर्गम क्षेत्र मेँ हाथीक झुंड तबाही मचबैत रहैत छैक।एतुका साक्षरता दर ६०प्रतिशतके लगधक आ २ लोकसभा आ ३ विधानसभा क्षेत्रमे १४,४१२ वर्ग किमी क्षेत्रफल छैक। १२२ गाम नदी - नाला सँ प्रभावित रहैत जाहिमे ६ गाम उपर पहाड़ी पर बसल छैक,जे चारूभर सँ जलाशय सँ मानसुन अयलापर घेरा जाईछ। तेँ बिणागुंडा ,तुरेमार्का , दमनमार्का , कोवाकोडी, पेरिमलवट्टी ,फोडेबारा,सन गामक आदिवासी लोक आ सरकारी स्टाफ छ: मासक रशदपानि पहिले सँ जुमेने रहैत य। ई एरिया प्राकृतिक मनोरम छँटा समेटने अपने आपमे अनोखा अछि। वुर्गी आ सुरजागढ पहार छत्तीसगढ़ आ तेलंगाना राज्य सँ सीमा मिलैत मराठीक संग आनो कतेको भाषा भाषीक' गंगायमुनी संस्कृति संजोगने छैक। महाराष्ट्र राज्य केर विदर्भ इलाकामे चन्द्रपुर जिला सँ १६ अगस्त १९८२ केँ फुटे ८०किमी०दुर गढ़चिरौली जिला बनलै। नागपुर शहर सँ १८० किमी० दुरी पड़ैत छैक। वन, पहाड़ आ नदीक बहुतायत दुर्गम क्षेत्र मेँ हाथीक झुंड तबाही मचबैत रहैत छैक।एतुका साक्षरता दर ६०प्रतिशतके लगधक आ २ लोकसभा आ ३ विधानसभा क्षेत्रमे १४,४१२ वर्ग किमी क्षेत्रफल छैक। १२२ गाम नदी - नाला सँ प्रभावित रहैत जाहिमे ६ गाम उपर पहाड़ी पर बसल

छैक,जे चारूभर सँ जलाशय सँ मानसुन अयलापर घेरा जाईछ। तेँ बिणागुंडा ,तुरेमार्का , दमनमार्का , कोवाकोडी, पेरिमलवट्टी ,फोडेबारा,सन गामक आदिवासी लोक आ सरकारी स्टाफ छ: मासक रशदपानि पहिले सँ जुमेने रहैत य। ई एरिया प्राकृतिक मनोरम छँटा समेटने अपने आपमे अनोखा अछि। वुर्गी आ सुरजागढ पहार छत्तीसगढ़ आ तेलंगाना राज्य सँ सीमा मिलैत मराठीक संग आनो कतेको भाषा भाषीक' गंगायमुनी संस्कृति संजोगने छैक।

रंगपुरमे जगूक परियास : एक विश्लेषण

पोथी समीक्षक -: लाल देव कामत

मैथिली साहित्य जगतमे पहिल पद्य उपन्यासक रचियता श्री रामेश्वर प्रसाद मंडल जीक पोथीके पढबाक सौभाग्य प्राप्त भेल अछि। एहि वर्ष पल्लवी प्रकाशन सँ बहराएल ' बगवार' एक खंड काव्य के समकक्ष ठाढ भेल छैक।

मैथिली सँ हिन्दीमे सुप्रसिद्ध साहित्यकार गजेन्द्र ठाकुर जीक पोथी" जगदीश प्रसाद मंडल एक वायोग्राफी आ साहित्य अकादमी द्वारा पुरस्कृत मैथिली उपन्यास"पंगू" जाहिक रचनाकार जगदीश प्रसाद मंडल जीक पोथीके हिन्दी अनुवाद मेँ प्रकाशित करबामे आगू एलाह श्री रामेश्वर बाबू। हिनक पहिचान कवि -कथाकार रूपेँ भेल छन्हि। बसुआरी हाईस्कूल सँ सेवानिवृत्त प्रधानाध्यापक, अनुवादक ओ साहित्य सेवी श्री रामेश्वर प्रसाद मंडल विरचित 'बगवार' उपन्यासिक प्रवंध काव्यमे एक दुर्गम गाम ' रंगपुर ' केर विशेष चर्चा कयल गेल छैक। मिथिलांचल'क ग्रामीण जीवनक बदलैत परिवेशके चित्रण अतिशय सुन्दर रुपेँ भेल अछि। अपन गामक प्रति जगूजी एक साधारण लोक रहैत कर्मशील छथि। वर्णित काव्यके मुख्य पात्र जगूक आरम्भिक जीवन भीतघरमे माय- बाबूक एकेदिन मृत्युसँ कष्टप्रद बुझाइछ तँ दू बेटाके एकहि मरबा पर वियाह सँ प्रशन्नता भरल छै। ऐ मैथिली पोथीमे पहिल पाठ सँ अंतिम पाठधरि जगूक पारिवारिक हालतक' उतार - चढ़ाव केर जीवंत कथ्य परोसल गेल छै। जेठ बेटा आ फेर एक बेटी जन्मक बाद हुनकर पत्नीक पैर भरिएल रहय। रामेश्वर प्रसाद जी काव्यके पाँतिमे शव्द चयन होईछ,देखल जाए-:

रोशनी देलैन जौंआ बच्चा
झूट नइ हम बजे छी सच्चा
लोक कहलक ई की भेल?
भगवान'क ई अजगूत खेल

जहन बाल- बच्चा चेष्टगर - छँटगर भेलासन्ता तकर नीक परवरिशक संग उत्तम शिक्षा दियाबैत अपने स्वंय चुरी कारखाना - गुलाठीमे कार्यरत रहैछ। तत्कालीन पिछरल समाजमे बालक शिक्षा तँ रहय मुदा बालिका शिक्षा'क घोर अभाव रहैक । यथा-:

बेटाक लेल किताब कलम खरीदै छी
बेटीक हाथमे किएक छिटा-खुरपी धरबै छी

बेटा शिक्षा कैं दीप जरबै छी

बेटी शिक्षा कैं किए दीप मुझबै छी?

तखन समय चक्र एहन घुमैत छै जे अपन सुपरवाइजरी नोकरी आ पुत्र वेदप्रकाश,देव आ निलेशक नौकरी धरि छुईट जाई छै। बेटी चंदाक वियाह शिक्षित वर सँ समय सँ कराओल जाई छै,मुदा धियापुता नहिं समय पर होई छैन। जीविका लेल माछ पालन जे करैत य , तँ गामेक लोक रातिकैं चोरी कऽ लैत छै।ओतयके पंच लोकनि महा घुसखोर छै, उचित निराकरण नहिं होई छैन। संगी रघु मंडल अपने लक्ष्मीपात्र रहैत हिनको धन अरजैक सलाह दैत रहनि। ओ संतान कैं अक्षरबोध नहिँ करेने ' बुढ़ारीमे बेटा पूतौह धरि वृद्धाश्रम मेँ पहुँचेने रहैन। ताहि प्रसंग मित्र दूनू प्राणी कैं जगू गाम आनैत य। पता इहो चलैत छैक कका फुसनी मरड़क बेटा निशेवाज भ' दिल्ली मे वेश्या सँ वियाह कऽ लेने छै। पत्थलतोर मेहनतके बले जगू तरकारी खेती फल - फलहरी सँ नीक अर्जन कयल। समाजमे अभावमंद लोकके सदैत मदैत पहुंचेवामे पाछु नहिँ रहैत , कनिकबे टामे लोटनके पढ़यमे सहयोग केने रहथि। से लोटन दारोगा बनि गेल छै आ चुरी कारखाना लग बोराक छली लगाबैत जगूक बेहोशी समय अकस्मात् आबि टेम्पूपर लाधैत होस्पिटल मेँ ल ' जाईछ,धरि अपन रक्त दैत जियाबैत देखल गेलैक हन्। आरो मानवताक परिचय दैत कर्जा सेहो उतारि मन हलुक कऽ देतैन। अपने गाम आबि जहन ओ बेटा पूतौह सब सँ उपेक्षित होइत अछि, तँ हुबा करैत साग - सब्जी 'क बागबानी आ बानकि करैत सुदृढ़ होईत गेल छै। सतनाकैं महाजन रंगलाल पाँच हजार टाका देलकैक मुदा तगेदा एक लाख टाकाके कयलापर पँचैतीमे जगूक कथनके कियो पँच मोजर नहिँ कएलक। सतनाके टाका दैत महाजनक चपेट सँ हटेलक। गाममे अपना नामे मध्य विद्यालय खोलैत साक्षरता बढेबामे आगू रहला। जाहि सँ फेर कियो महाजन लग ठकाइ नहिं। जगूक पत्नी रोशनी बेराम पड़ैत छथिन से अबतब स्थिति बनैत छै। बीडीओ बेटा नीलेश मात्रे पाँच लाख टाका ओरियाउन केलक शेष पाँच लाख ले अपन मकान बन्हकि धरि राखि समुचित इलाज कराबैत छै। निराश परिस्थितिमे चुरी कारखाना सँ एक चिट्ठी अबैत छैन, जाहि लेल कागत पत्तर तैयार कय गुलाठी नगर पहुँच ,ओतय बढल पेंशन मद केर सोलह लाख टाका पाबैत अछि। गाम अयलापर विमुख भेल बेटा पूतौह सब सँ सौहार्द निश्तुकी होई छैन। मायक अन्दरुनी ममताके जगू जगाबैत देखेलाह अछि। ओना बेटा - पुतोह केर किरदानी सँ माय व्यथित छलीह। गाममे अपना आ पत्नीके नामे होस्पिटल बनेलाह। बेटी ताहि होस्पिटल सँ स्वास्थ्य लाभ पाबि गर्भवती होई छथिन। बिहार क' प्रसिद्ध छैठ पाबैनिक आराधना समय घाटपर एक १८ वर्षीय मयटुअर- बपटुअर खटरी नामक छौरी अचेत भऽ खसि पड़ैत छै,दाँती लगैत छै। तकरा होस्पिटल आनल जाईछ,नीलेश रक्तदान दैत जीवनदान दैत छै। ओकरे सँ विवाह सेहो आदर्श पूर्वक होईछ। दूनू प्राणी सपरिवार विचार करैत एक धर्मशाला बनाय ओहिमे सदाव्रत बाँटैक काज शुरू कयल। दुरौसक प्रचार सुनि कतेको निर्धन, भिखारी,बाबाजीक आबाजाही हुअय

लगलैक। एक एगारह बरखक छौड़ाके पाँतिमे ठाढ़ गरदैने पर लालमस्सा देखि चिन्ह् गेल से ओ रहय हिरबाक बेटा, जे नेना मेँ हेरा गेल छलैक।एहि संस्था सँ ई उपल्वधि चर्चित भेलैक। पछुआयल वंचित समाजक काव्य धारा केँ रसीकजन दाहातर्ज, श्रवण कुमार तर्ज आ राधेश्याम तर्ज पर गाबि शिक्षा जागरूकता कऽ सकैछ।

रामेश्वर बाबू द्वारा मनो विश्लेषणात्मक द्वन्दके यथासंभव संयम विवेक ओ ओचित्यक प्रतिरक्षण कयल गेल हन्। ऐ तरहक सजगता हम गूलोमे सेहो सुभाष चन्द्र यादव जीक उपन्यासमे पेयलहुँ अछि। किसान जीवनक महागाथा रचबाक परम्परा उड़िया भाषाक कथाकार फकीर मोहन सेनापतिक " छमाड़ आठ गुंडे" (१८८७ ई०) सँ शूरू होईछ। प्रेम चंद के गोदान,ललितक पृथ्वीपुत्र आ यात्री जीक बलचनमा ओ पारो उपन्यासमे सेहो किसान - मजदूरक संघर्ष सामंती व्यवस्था केर विरूद्ध भेल अछि। एहि तरहेँ कहल जा सकैछ अपने परिवार समान सम्पूर्ण गाम- समाजकेँ एक परिवार मानैत जगू सफल बागवार (रखबार) बनि गेल छैथ। ऐ तरहक वास्तविक गाम सरौती,टिकापट्टी मेँ कयल गेल अवदानक सहेजें मोन पड़ि जाईछ। पल्लवी प्रकाशन निर्मली सँ सद्यप्रकाशित एहि मैथिली साहित्य पोथीक दाम ३५० टाका आ कुल पृष्ठ सँ.१०७ छैक,जे पाठकके पढैक प्रति विशेष अभिरुचि जगाबैत य।

सर्वश्री राजकिशोर मिश्र जीके - टेमी

उन्नैश गोट मैथिली कविता'क १२५ पृष्ठक पोथी, प्रकाशन वर्ष २०२३ जाहिक किमत २५० टाका अछि। एहि मैथिली भाषा साहित्यके यशस्वी रचनाकार छथि कविवर राजकिशोर मिश्र। श्री मिश्र जीक अन्हारगुज कॅभर पर रंगील छवि 'दीप' केर टेमीमे आगि लेसल छैक ,जे खूब सनगर बरि रहलैक हन्। अन्हरिया सँ ईजोरिया दिस जीवनमे उल्लास आनैत ई प्रतीक महिमा मंडित बुझाइछ। मिथिलांचल 'क मधुश्रावणी पावनिमे नववियौहति कन्या लेल दगनियाँ विध मादे एहि ज्योत जरैत टेमी सँ आगन्तुक अतिथि (पत्नी कैँ पति द्वारा) परम्परागत रूप सँ जाँचैत कष्ट दैत छथि। अहिवाती सोहाग अमरत्व ले पतिदेवक ऐ जटिल विध कैँ अदऔ सँ सहाज करैत फोंका घाव धरि भोगय छथिन। एक घटनाक विशद् चर्चा अपना आत्मकथा " जीनगिक बाट पर " मैँ शम्भू नाथ बाबू कयलनि अछि। इयह दीप थीक जे सगर राति जागिकय वर्षोवर्ष धरि भामति टेमी उसकाबैत पतिक अध्ययनमे सहायक भेल छलीह। ताहि दिनमे विजली रोशनी, सौर ऊर्जा आ किराशनतेल सँ जरैत लालटेन केर अस्तित्व नहि रहैक, मशालो सर्वसाधारण जनके उपलब्ध नहि रहल हेतैक। ताहि जमाना सँ अद्य:पर्यन्त शुभकार्यमे घी-दिया बारल जाईछ! ई दिबारि जौं पाठक अपने स्वंय चौबटिया पर राखि राहिक अनभुआर पथ आलोकित कय दहोदिश प्रकाशवान बनाबी तँ धन्यवादक पात्र होयब! श्री मिश्र जी सहज कविता रचनाक आग्रही छथि। ओ प्रतिष्ठित मैथिली - हिन्दी साहित्य क्षेत्रमे कविता विधाक बहुतो पोथी अपनहि प्रकाशित कऽ चुकलाह अछि। सद्यप्रकाशित ई काव्य पोथी ' टेमी ' पढबाक अवसर भेटल हय। एहिमे संग्रहित कविताक सौंदर्य बढ़ वेसी आकर्षित करैत य। पोथीमे अक्षर-शव्दक शुद्धता मैँ टंकण कार्यमे लीन कवि महोदयक धर्मपत्नी श्रीमती अनीता मिश्रजी प्रशंसनीय रूपैँ अग्रणी भेल छथि। कविताक दौड़मे ई रचना जीनगिक विविध रंगक आधार मानल जा सकैछ। वर्तमान सामाजिक परिवेश जाहि तिब्रता सँ परिवर्तनशील छै, ताहि समय-चक्र क' प्रतिविंव छी ई अक्षर रुपी कविता। पोथी अक्समे समय सँ आएब ,से प्रकाशनक दायित्व हुनक सुपुत्री सुश्री शिक्षा मिश्रके सहयोगात्मक रूख सुस्पष्ट झलकैत देखाइछ। श्रीमान राजकिशोर मिश्र जीक कविता विविध आयाम - विस्तृत , सौन्दर्य छँटा नवीन आ नैका - नैका विचारक प्रतिमान गढ़ैत अछि। सब काव्यके भाव अत्यन्त चित्ताकर्षक आ गूढ़ रहस्य'क द्योतक छैक। टेमी पढ़लाक बाद हिनक आन मैथिली काव्य पोथी -: मेघपुष्प,चाननि, नवपात - नवबात, उपायन, सप्तवर्ण, नव घर उठय - पुरान घर खसय आ जिनगीक सोन सन पाँखि जिज्ञासु पूर्वक पढबाक उत्कण्ठा बढ़त। मिथिलाक माटि - पानि कविता मैँ एतुका भौगोलिक परिवेश आ इतिहासिक पुरान

दस्तावेजी अंश ओ धार्मिक महिमा तथा आहार - विहारक रीति रेवाज सँदर्भित आख्यान कैं अखियाईसके कविजी वीजतत्व भरलनि अछि। मधुमास कवितामे ततेक सुन्नरसन गरहैन भेल छन्हि जे साश्वत सत्यक दर्शन कराबैछ, जेना -

.....

रस सँ सिक्त मधुमासक रभस सँ ,

चारू दिसा मोद सँ मातल ,

फूलक गाछ पर उगल कनोजरि ,

डंटी कुसुम सँ कसि - कसि गांथल ।

.....

आजुक नारी कवितामे महिला सशक्तीकरण केर सजीव चित्रण करैत उत्तरोत्तर विकासक प्रगति पथ पर निरंतर अग्रसर रहबाक दृश्य देखेबामे समर्थ भेलाह अछि। विज्ञान, कला , चिकित्सा, क्रीड़ा ,शिक्षण आ गृहणी सँ अफसर बेटिया धरिक पद प्रतिष्ठा पर अधिष्ठात्री नारी शक्ति 'क उत्थानक बखान कयलाह अछि जे ठमकल नहिं वरन् पुरूखोंके पछोर करैत आगू बढ़बाक अभिप्रेरणा जगाबैत छथीन। एहि पोथीक केन्द्रीय कविता थीक - 'दीप आ फनिगा' जाहिमे तिमिर कैं भगाबैत दीपकके लगीच कोना फतिंगा सभक हेंज धरोंहि लागि जाइछ। एहि फनिगाके कियो नोत दऽ कऽ नहि ने बीझो कराबैत य। ओ एक चुम्बकीय शक्तिक कारणेँ अपनाके आबै सँ वा झरकै सँ नै रोकि पाबैत छै। एहिमे प्रकृतिक आभाक रश्मि देखेबाक कविवर यथेष्ट परियास केने छथि।

शेष कविता - भीखमंगा, भूकम्प, अरण्यक फूल, गाम बनल जा रहल शहर,फगुआ, जिनगीक संघर्ष,बबिताक द्विरागमन,गामक राजनीति,परात, बड़दक गहांकि, उर्जाक महत्व, जिनगीक दर्शन,मनुख आ मशीन, वृध्दाश्रम आओर जँ जग जल नहि होइत! खूब अपील करैत छैक,जे अपनेआपमे सर्वश्री राजकिशोर मिश्र जीके सद्यप्रकाशित ई काव्य पोथी "

टेमी " अत्यन्त सारगर्भित बुझाइछ। ओना देशज आ निशन्न मैथिली भाषा केर जगह बाहरी शव्द सँ ओझल किछ शिर्षक शव्द देल गेल छैन। तैयो एहि तरहक मर्मस्पर्शी काव्य रचबाक आ स्तरीय विषय चयन लेल हम श्री राजकिशोर बाबुक सुदीर्घ जीवनक सफल कामना करैत छियैन। हिन्दीए पुस्तक जहाँति मैथिली 'क पोथी सेहो विशिष्टता प्रमाणित होइत गिनीज बुक ऑफ इण्डिया रिकॉर्ड्स बना सकय।

आंचलिक उपन्यास " भोट " मादे

वरेण्य साहित्यकार डॉ०(प्रो०) सुभाष चंद्र यादव जीक सद्यप्रकाशित सामाजिक उपन्यास 'भोट' पढबाक अवसर भेटल। किसुन संकल्प लोक - सुपौल, बिहार सँ ६८ पृष्ठ 'क मैथिली भाषा मेँ पोथी २०२२ ई०मेँ बहराएल अछि। एहि पोथीक कभर आकर्षक एहि हेतुए बुझि पड़त जे नारी मतदातागण आ कमलफुल , लालटेन,तीर आ हाथ छापल छैक,जाहिक मूल्य सय टाका निर्धारित कयल गेल अछि। उपन्यास विधा एकदिस कोनू व्यक्तिक चरित्र - चित्रण थीक तँ दोसर दिस समाज आओर समयके इतिहास रूपमे साक्षी थिकैक। मातृभाषा मैथिलीक विकास लेल वीहनिकथा, लघुकथा, दीर्घ कथा आओर उपन्यास लेखन कार्य सँ आन विधाक बनस्वत बेशी काज भेल अछि। तकर कारण छै ,लोक वा पाठक अपना - अपना बूढ़ मैयाँ - बाबा, नाना - नानी आ श्रेष्ठजन सँ खीस्सा बालपन सँ सुनबाक अभियासी छथि। आ जिनक पूर्वज पंडित,अध्यापक वा लोकगाथाक मूलगैन रहनि,से श्रोता - पाठक आनक अपेक्षा बेशी अध्ययनशील बालपने सँ भऽ जाई छथि। तेँ उपन्यास पढ़यमे अधिक समय देनिहार कम पाठक होय छथि। पढैक अभिरूचि आ नै पढ़ैक वा कम पढैक अबुहपन दृष्टिये ' भोट' सामाजिक उपन्यास केँ पाठक अपना दृष्टिकोण सँ आंकताह आ मनलगू बूझता। 'भोट उपन्यास'क सौन्दर्य जे होईक, एहिक कथ्य जे बुझाए मुदा एहिक वाणी-बोलीक जे टोन नायक यदुवंश , नायिका सफ़ीना , सहनायक उपन्यासकार स्वंय आ सहनायिका लक्ष्मी कुमारी'क मुहेँ जे शव्द बहराएल अछि से मिथिला'क सिपौल- सहरसा आ मधेपुरा जिला 'क बोलवचन छी। मिथिलाक प्रायः हर गाममे दू तरहक मैथिली बाजल जाइत रहल अछि। वर्ण आ जातीय समीकरण केर आधारपर एहिक मानक तय करी तँ बुझाएत सवर्णक भाषामे तहन, तखन, अखन ,कखन ,जहन केर प्रयोग हरसठे होईछ। आ से वैश्य - सोल्हकन (रार रोहियार) पचपनिया केर मातृभाषा क' तखैन, तब ,तभी,अखैनि, जखैन शव्दक रूप दैत उच्चारण मिथिलांचलके ७०% लोकवाणीक' प्रतिनिधित्व प्रदर्शित करैछ। देखल जाए तँ जाहि गाममे अति पिछड़ा जातिके नोनिया समाज अछि,हुनकर बाजब एक पृथक बोली सुनाईए। ई गंगाकातक आन-आन समाजक बोली वाणी सँ मिलैत छैक। ओना इहो देखल जाए तँ मिथिलाक मुस्लिम समुदायमे जे मैथिली बाजल जाइत छै, ताहिमे उर्दू - हिंदीक' शव्द आ वाक्य अधिक प्रयुक्त होईछ। तेँ उपन्यासकार श्री सुभाष चन्द्र यादव जीक जे मैथिली लेखन छैन से निश्तुकिए वो श्री तारानंद वियोगी, जगदीश प्रसाद मंडल आ ऐ पंक्तिक लेखकक अपन धरोहर मैथिली थीक। ओना संस्कृत फेंटल पांडित्यपूर्ण ऐंठल-ऐंठल- भाषा ग्राह्य जेना दलित ,पिछरल, अधिक पछुआयल तबका केँ अनसोहान्त लगैछ, तहिना कम

साक्षर , अनपढ़ शुद्रक भाषा (बाजब- भूकब) पैघ जातिके (सभ्रान्त लोकके) पसीन नहिँ पड़ैत छन्हि। इयह कारण थीक जे डाक्टर वियोगी जीक मादे कतहु पं. गोविन्द झा जी कहने छथि हिनका व्याकरण - भाषा'क दृष्टिये पासमार्क भेट जाईन; सयह बहुत। अस्तित्वक लेल सामान्य लोकक संघर्ष प्रो० सुभाष चन्द्र बाबूक अभीष्ट रहलनि अछि ,जे हिनक कथा 'काठक बनल लोक' मेँ अभिव्यक्ति भेल हम छात्रहि अवस्थामे मैट्रिकमे पढ़ने छलहुँ। मिथिला 'क भावी पीढ़ी जब - जब सुभाष जी प्रभेत् वृहत अध्ययन करत तँ एक लेखकीय स्वतंत्रता बुझेतैक। से ओ अपन लोकक बोलचाल केँ मैथिली साहित्यमे स्थापित करबामे एक सुमार्ग देखने छथि। एहि रोमांचक पोथीक अध्ययन करैत घरी नाह सँ कोशी नदीक पटुआ लाधल दृश्य आ पालघर बढ़ मनोरम छैक। संगीक सासुर पैच मांगल नैका सायकिल सँ लोड भऽ के गेनाई आ वेसी दिन रहला सँ साइकीलके तगेदा,से साइकिल बाटमे रात्रि विश्राम गद्दी मेँ केयला पर छहरदेबालीक भीतर सँ चोरीक घटना वर्णन हृदयस्पर्शी भेल छैक। सम्पूर्ण दृष्टांत ग्राम पंचायत राज चुनावके पुर्व उम्मीदवार, विधानसभा क्षेत्र सँ विधायक पदके अभ्यर्थी आ पूर्व सांसद प्रत्याशी बाबत गुणदोषक चर्चामे लागल नागरिकक आ दलीय राजनीति पर एक विमर्श देखायल गेलैक हन्। अपन नातेदार जदयू नेता कामता ओहिठाम करिहो गाम पहुँच कय उपन्यासकार यादवजी लालटेन छापक कन्डीडेट केर जे समउमेरिया भातीज छथीन, अपन खर्चा सँ मदैत सदैत करयमे लागल चित्र उपस्थित केलनि अछि। चुनावी चटकार दैत किछ एहन नाम सब यथा - मोहरील विदु जे खानगी शिक्षक बनल छै। ई एकबेर खुद पंचायत समिति सदस्य बनल रहैक। मैट्रिक पास कृषक चन्देसरी राजद.सँ जुटल छै। पैकार मन्नू, परेमी, बिन्दुलिया हिनका सँ विदेसरके दोकान पर चाह पियैत छै,टिरन दोकान पर पान खुअबैत काल लखन महावीर सेहो पान खाइछ। भरि भोट अवधिमे चौक चौड़ाहा सजल गुलजार बुझाइछ। अड्डावाजीमे हरसठे यदुवंश यादव आ विश्व मोहन जी केँ समर्थक सह - सह करै छै। समाजवादी पार्टी के आ कम्युनिस्ट पार्टी के उम्मीदवार केँ भोटकटबा बुझल जाइछ। शव्दरूप विभत्स (जुजिए,गैंर) लेखन सँ परहेज़ नै उपन्यासकार भेलाह हन् । नारी सशक्तिकरण पर जोर दैत गठबन्धन केर कार्यकर्ता केँ कहल जाईछ तीनू पार्टी एकता मेँ छै , तीर छाप नीतीश कुमार आ लालू जीक पार्टी,कॉंग्रेस सँ तालमेल बनौने छै से बात जनिजाइत सबके बुझबामे आबय! धरणा प्रदर्शन,जूलूस ,पर्चा- पोस्टर सँ पाटल दुर्गास्थानक चुनावी सभाक पंडालमे कुर्सी लागल आ प्रचार - प्रसारके कैसेट लाउडस्पीकर सँ गीत लोकतांत्रिक उत्सव मेँ उत्साह भरने छै। प्रसिद्ध बीडीओ केर दोकान पर हारमुनियाँ बाजाक मास्टर नथु ,जमील , सूर्य नारायण,कमलदास,विनोद पटेल आ पाठक टोलक एक छौरा,अशोक भोट मादे गप्प दैत रहैत छै। मुखिया विक्रम केर चुनावक मुख्य प्रतिद्वंद्वी सफ़ीना प्रत्यक्ष रूप सँ आईकॉन बनल छै। विंदुक मुँह सँ श्री यादव जी कहाबैत देखाई छथि सफ़ीना के आवाज जेहन रोवदार रहई ,तेहने आकर्षक ओकर रूप रहै । लोग ओकरा दिस ताइकते रैह जाइ। वृध्द नत्थूके ब्लॉंकमेँ देवीक

अवतार सँ कम नहिँ बुझाय - सफ़ीना। दीना पाठकके तँ मुखिया कन्डिडेट बावत् सफ़ीना करकरा देलकैक,बूझू पानि उतरि गेल होय। उपन्यासमे संवाद कौशल बढ़ सजीव बुझाएत। सफ़ीना दिल्लीमे राजमिस्त्रीक बीबी रहैत जमीन खरीद बिक्री काजमे मोईमके संग पुरैत छै। नीक आमदनीक बल पर नवटोलमे कोठा धरि पीटा लेने य। सफीनाक गात इज्जतदार बुझाइछ। ओकर लचकैत पातर डांड़ , डोका सनक चंचल आँखि गोल मटोल चेहरा,फूलल-फूलल लालटरेश गाल ,मुँह परहक पाइनके चमक खूब नीक लागैत छै। महमह करैत देह सँ अत्तर सुगन्ध मतेने जाएत होय चन्देसरी केँ। फुलसन बिहुंसैत सुरैत पर सँ नजैर नै हँटैबै छैक जेना। चन्देसरी सँ सफ़ीनाके नीक लगरपन छैक। से एकदिन अकस्मात देह छुआ गेलापर ओकरा बरफसन ठरल साँपे जंका लागलैक। चन्देसरीके जखनि सँ थाह चलैत छै सफ़ीना दिल्ली सँ फेर आबि गेल , तखनि सँ ओकर पैर ओनैहि बहकि जाईछ। सफ़ीना सुन्दरिक माया थिकैक,ओकर आंचर दिश कामुक दृष्टिये एकटक निहारत वासनाक आगिमे चन्देसरी तरैप रहलाह। से देखिगमि छगुनैत दीप्त भेल सफ़ीना भोटक गप्प दिस वातावरण क' मारलीह अछि। एहन लालित्यपूर्ण मैथिली साहित्य दिश नव पिढिक लोक जागरूक रहत; उपन्यास कार ई कथा ३५ साल पहिले लिखने रहितथि ,से पछुआ गेला। भोटर आब वोटमे नगद टाका लेमय चाहैत छै से कामता सन सहयोगी आ १० हजार दै बाला बहुतो मददगार लोक यादव जीक खेमामे छै। एक लाख एक दिनक खर्च एके गोटय उठा लेने होईक। तहिना विश्व मोहन केँ कियोट जाति सँ खुब सहयोगी छै। ओकर पत्नी सुजाता सेहो ऐ क्षेत्र सँ उपचुनावमे विधायक भेल छलैक। बापो कांग्रेस जमानामे उपमंत्री बिहार सरकार मेँ भेल छलैक। तेँ ओकर समर्थक तँ पाई सँ होरी खेलय सेहो कोनू विशेष बात नहि। ५६ इंची सीना बाला मोदीजी केँ बातकेँ गठबंधन बाला कहैत छै भोटक खातिर कहीं पाकिस्तान पर नै चढ़ाए कऽ देख । बिहार क' चुनावी दांव-पेंच केर अनाड़ी उपन्यासकार तँ प्रभावशाली रूपेँ सम्पूर्ण कथानकमे आयल छै।

मिथिलामे मांगैन खवाश छइ!

पोथी समीक्षा -: लाल देव कामत

जगत जननी माय मिथिला उर्फ जानकी'क पर्यायवाची नामे जे जिला अछि , अति श्रधान्वित रुपेँ तै सीतामढ़ी सँ चर्चित नाम उभैर आयल अछि आचार्य रामानंद मंडलक । मैथिली भाषा'क कवि श्री मंडल जीक हालहिमे एक नव पोथी केँ मिथिला समाज ट्रस्ट - दिल्ली, प्रकाशित केलक अछि। एहि कविता संग्रह " भासा के न बांटियौ " ९९ पृष्टक पोथी केँ अद्योपरान्त पढल। मनलगू विषय सब पाठक केँ सद्यप्रकाशित ऐ ८७ गोट नव काव्यमे सब रसक रसास्वादन करवैत, अनेक तरहक अनुभव सेहो प्राप्त हेतन्हि। सीमावर्ती क्षेत्रक रहवासिक मैथिली भाषा मेँ नेपालक वज्जिका टोन देखाईछ। यथा - मिथिला मे की छइ ? मिथिला मे सीता छइ! सीता'क जनम असथान छइ! मिथिला मे नदी आ पोखर एइ! पान माछ आ मखान छइ ! मिथिला मे दरभंगा राज छइ ! लाल - लाल मकान छइ! मिथिला मे राजकवि विद्यापति छइ! मिथिला मे मांगैन खवाश छइ ! पचगछिया घराना के राग छइ! मिथिला मे भारती आ मंडन छइ! सुग्गा पढ़इत पुरान छइ! मिथिला मे अयाची छइ! परसौत कलियानी माय महान छइ! रचना मे माटि के सौंध छइ ! मिथिला मे शहीद रामफल मंडल छइ! देस लेल सहादत महान छइ ! मिथिला मे पाग छइ ! पगड़ी छइ! मिथिला के शान छइ! रामा मिथिला महान छइ !!

एहि विशिष्ट शैलीक भाषाक उपभाषा ,बोली - वाणीक मानक केर फेरमे किछ लोक आरंभ सँ रहैत अयलाह हेन। परंच ताहि सँ मातृभाषा अनुरागी समस्त लोक बीच सार्वजनिकता मेँ संकीर्णता फेंटैक काज मानल जाइछ। ओना भाषाक मानकीकरण करय बाला कियो के होय छथि? जहन मायक मुखारविन्द सँ निकलल वाणीकेँ नान्हिटा सँ बच्चा सुनैत - सिखैत आगू बढैत अपना परिवेश मेँ अपन गप्प सँ अगिला मैंग पर रहल लोक केँ तथ्य बुझौनाई मे सफल होइते छैक। तखन ई तितम्हा ठाढ करबाक कोन काज? ग्रियर्सन सर्बेमे मानलनि जे मैथिली भाषा अतितमे बाभनके नहिं रहनि। हुनक भाषा संस्कृत आ लोकबाणी वादमे अवहट रहनि,जाहिमे विद्यापति जीक रचना प्रमाणित रुपेँ छन्हि। मिथिला क' सोल्हकन समाजक जे भाषा बोली रहय सयह मैथिली थीक। एहिके राइतो राति मान्यता दैत शासकीय स्तर पर महत्व बढ़ल रहैक। सर्वे में इहो भेटलनि मिथिला'क वासी हिन्दू समाज बीच चौदहो देवान पूजल जाइक। कोनू - कोनू व्यक्ति जाति आ वर्गमे एकहुटा देवी देवता आ ईष्ट गुरूकेँ रूपमे भगवान् भगवती अराध्य देव रहैत आयल छैक। घरक अर्थात् गहवरमे एकटा देवान रुपमे ' साहेब खवास ' क ' पूजा भाव सेहो होइत रहल छैक। एक गोसाईं घरक भगत मुहेँ भाव खेलैत,वाक् दैत सुनल

अछि - "हो सेवक! तों सब खवास शव्दक पैघौत खूब मानैत अयलह। जे पहिले समयमे खवास नहि सम्बोधन करेय तँ मारि खाए छलै आ आब जौं ओहि वंशजके कियो लोकनिके खबाश कहबहक तँ मारि ओकरा हाथे खेबेटा करबह। आजादीक वाद जमाना उनैट गेलैक। ओना समाजमे जे दियादि पैघ संख्याँमे रहैत अछि ,से अल्प दियादि बालाके फुटबैत मोजर नहिँ दैत, उपेक्षा करय सँ वाज नै अबैछ। भारतीय संविधान क' राष्ट्रीय स्वीकृत लक्ष्य य - समानता। मुदा असमानता भरल छैक। सामाजिक न्यायके जगह सामाजिक अन्याय मचल छैक।तेँ कविवर महोदय अपन पाँति सँ मुखर भ' कवितधारा क' अजस्त्र स्रोत बहेने छथि। यथा :-

संस्कृत मे लिखाइ अ शतपथ वराम्हन।
हिन्दी मे लिखाइ अ चतुरी चमार ।।
मैथिली मे लिखाइ अ सतिया धनुकाइन।
लिखेबाला छइथ वर्चस्ववादी रचनाकारगन।।
बर्चस्ववादी के सनमान दलित के अपमान।
सभ ग्रन्थन मे हय वर्चस्ववादी के गुनगान।।
दलित उपेक्षित के हेय कइलन अपमान।
दलित उपेक्षित कर जोरि के करइत प्रभूगान।।
तएं वो दलित उपेक्षित के करइत हैय गुणगान!

आइयो समाज मे पूजल जाइ विभेदकगन!! कवि जीक तात्पर्य छन्हि औजको तिथि मेँ लोक खास बनय चाहैत छैक। खास शव्दक पर्यायवाची रूपमे खवास निहितार्थ पाँति ऐ तरहेँ क्र०-६९ शिर्षक पाठ "खवास" मेँ गबैत छथि। यथा -: खवास छी, राजाक खवास छी।

राजा छी, राजाक खवास छी।
साधू - संत छी , ईश्वरक खवास छी।
हनुमान छी, रामक खवास छी।
संत तुलसी छी , रामक खवास छी।
उगना महादेव छी , विद्यापति क' खवास छी।

सामाजिक व्यवस्था मे , राजनीतिक प्रक्रिया मे ,आईधरि बहुसंख्यक आबादी वाला मिथिला क' लोकक हर स्तर पर उपेक्षा आ दोहण- शोषण होइत रहलैक। सभा सोसायटी क' भीड़क हिस्सा बनैत बैकवार्ड क' बीच मंचक शोभा बढबैत फारवर्ड केँ सचेत करैत अपना कविता मे कवि चित्कार कय उठबैत छथि। पाँति द्रष्टव्य अछि-:

अहां के सुनली,हम्मर सुनूं ।

अहां के मानली, हम्मर मानूं।

अहां के जानली, हम्मर जानू ।

अहां के पढली, हम्मर पढू।

अहां के पुजली, हम्मर पुजू।

अहां के गइली, हम्मर गाउ।

रामा अहाँ के सुनइली , हम्मर सुनू। ऐ तरहेँ सभ क्षेत्र में बाँकियौता बाइकलाग कहियाधरि पूरा होयत। अपन त्याग देखेबाक एखनो रस्ता देल जा रहल य,परंच जम्मा ढेरी कियो नहिँ ढाहत! उदारवादी होयव बड़े कठीण बुझाछ। तेँ कविजीक पाँति समाजके अन्हारो मे इजोतक बाट देखय ले वाद्य करैत छैक।

हुनक एक कविता पढू :-

मिथिला राज्य लेल,बियाकुल मोर जीयरा ।

मिथिला राज लेल, पियासल मोर हियारा ।

मिथिला राज्य लेल ,भुखल मोर मनवां ।

मैथिल भाषा सँ ,अघायल मोर जीयरा ।

मैथिली सनमान सँ , अघायल मोर हियरा।

मैथिली पाग मे। ,समायल मोर मनवां।

बज्जिका भासा सँ डराय मोर जीयरा।

अंगिका भासा सँ घबरायल मोर हियरा।

बोली माने मे हुलसाय मोर मनवां.....

सदरिकाल सँ आबोधरि हम गुलाम छी,हमरा वर्तमान व्यवस्था एखनो गुलामीक जींझिर सँ कसिकय जकड़ने अछि। मुदा खूब जोड़गर झटका धीरे सँ अकान्त करैत य।जेना कि आचार्य जी पाँति गढलैन हन् :-

हम कइसे गुलाम छी!

कहियो हम मुगल के गुलाम छी।

कहियो हम अँग्रेज के गुलाम छी।

कहियो हम राजा के गुलाम छी।

हम कइसे गुलाम छी।

आइयो हम नेता के गुलाम छी।

आइयो हम पार्टी के गुलाम छी।

आइयो हम राजनीतिक के गुलाम छी।

हम कइसे गुलाम छी।

आइयो हम जाति के गुलाम छी।

आइयो हम समाज के गुलाम छी।

आइयो हम अर्थ के गुलाम छी।

हम कइसे गुलाम छी।

आइयो हम धरम के गुलाम छी।

आइयो हम राजवंशी भगवान के गुलाम छी।

आइयो रामा हम राजा के गुलाम छी ! औजको परिस्थिति मे लोक अपने मने आजादी कतय एहसास करा पाएत।तेँ हर पात-पात पर गुलिस्तां तँ बैसले छैक किनै? ऊँच नीच क' भावना समाजमे विद्यमान छैक, संविधान मे अश्पृश्यता - घृणा केर विरूद्ध कारगर कायदा कानून बनल रहलाक वादो लोक कतेक सुरक्षित छैक! ई हमरा एकटा यक्ष प्रश्न ठाढ ,सुरसाक मुँह बौने फरीछ बुझाइछ। एखन तँ एक लेखकीय समाज गुटबंदी कय पचमनियां लिखल के आँय-बाँए मानि रद्दीक टोकरीक शोभा बढवय बाला स्तरहीन रचना कहिकय ,सोसल मीडिया मे छिरयबैत छै। मनोवैज्ञानिक आपत्ति थीक जे ज्ञानक ई पैघ कटोरी अपनहिटा लग बूझैत मानैत , संघर्षरत तबका केँ हतोत्साहित कय अधबटियामे लटकौने चन्द तरहेँ वाधक रुपेँ देखार होईछ। कवि महोदय जनमानस मे उर्जा भरैत उपेक्षित वंचित केँ अपन हक - अधिकार लेल सतत् सजग आ जागरुक रहय ले कहैत अपील धरि कविता विधा माध्यम सँ कयने छथि-:

आई कि होई रहल हैय ।

असहमति के अधिकार

छीनल जा रहल हैय।

आई कि होय रहल हैय।

बोलई के अधिकार

छीनल जा रहल हैय।

आई कि हो रहल हैय।

असहमति के अधिकार

देस द्रोह बन रहल हैय।

आई कि हो रहल हैय।

अमीरी गरीबी के खाइ

बढ़ल जा रहल हैय।...,... आचार्य रामानंद जीक स्पष्ट कथन छैन,पाँति दोसरो देखल जाए :-

भाषा के

सरहद मे न बांटियो।

मैथिली के,

बज्जिका अंगिका मे न बांटियौ।

मैथिली के,

संस्कृत - असंस्कृत मे न बांटियो।

मैथिली के ,

राड़ मानक मे न वाटियो।

मैथिली के,

ऊँच - नीच मे न बांटियो।

मैथिल के ,

बाभन सोलकन मे न बांटियो।

मैथिल के ,

छूत अछूत में न.....

जेना कि सर्व विदित अछि मिथिला मिहिर पत्रिका कविता विशेषांक रूपेँ सितम्बर १९७४ मे एकसय जीबीत कविजीक टटका कविता छापिकय काव्य सौष्टव धाराके गतिमान बनौने रहैक।आ आब तँ दीपा मिश्र (मध्यप्रदेश) १५१ कवियत्री क' एक - एक गोट कविता ' मैथिली ' नामे पोथी छपौलीह आ काव्य धाराके आगू बढौलीह अछि।एहनामे कविताक पोथीक बाढि कए कियो रोकि नँय सकत। आचार्य जीके कविता केँ गुणय केर आवश्यकता छैक। संक्षेपमे ई कहब जे हमरा मंडल जीक मैथिली साहित्य क्रान्ति सँ घनिष्ठ संबंध भ' गेल अछि। आनन्दानुभूति एतेक धरि बढ़ल जे मैथिली भाषा क' अक्षय भंडारके भरैक लेल अनेकों समीक्षकक ऐ पोथी मादे अखबार मे प्रकाशित भेलो उपरान्त , हमहूं अपनाके नहिं रोकि पबैत छी। एहि तरहक सृजन के आलोचना करैत ई अनुभूति होइत रहल जे शनिचरा लेखक कवि के अतिरिक्त अद्यतन अन्य केर पोथी सर्वथा कम छैक।सम्यक विचार करब अँखिगर लोकक काज होयत।जाहिपर प्रकाशक गण सेहो अनुकम्पा देखाबथि। प्रधानाध्यापक पद सँ विज्ञान शिक्षक आचार्य रामानन्द मंडल जी सेवा निवृत्त भेलासन्ता चारि सालसँ अहर्निस माय मैथिली क' सेवा कय रहलाह अछि। सोसल साइट पर सेहो सक्रिय छथि। सबसँ हिनक पैघौत इयह जे सरकारी स्तर पर मैथिली केँ धकियेबाक षढयन्त्र केँ पर्दाफाश केलनि। सीमान कातक बज्जिका आ अंगिका नामे फुट सँ भाषायी बेपार करय बाला मैथिली विरोधी शक्ति केँ चिन्हबाक खगौट दिश मैथिली आन्दोलनीक आँखि फोललनि अछि। हिनक पोथी विविध आयाम के समेटने भाषा विमर्श लेल अपेक्षित रहत। आश य दोसरो पोथी

शिघ्र छपत।

आचार्य रामानंद मंडल । मैथिली भाषा'क कवि श्री मंडल जीक हालहिमे एक नव पोथी कैँ मिथिला समाज ट्रस्ट - दिल्ली प्रकाशित केलक अछि। एहि कविता संग्रह " भासा के न बांटियौ " ९९ पृष्टक पोथी कैँ अद्योपरान्त पढल। मनलगू विषय सब पाठक कैँ सद्यप्रकाशित ऐ ८७ गोट नव काव्यमे सब रसक रसास्वादन करैत अनेक तरहक अनुभव सेहो प्राप्त हेतन्हि। सीमावर्ती क्षेत्रक रहवासिक मैथिली भाषा मेँ नेपालक वज्जिका टोन देखाईछ। यथा - मिथिला मे की छइ ? मिथिला मे सीता छइ! सीता'क जनम असथान छइ! मिथिला मे नदी आ पोखर एइ! पान माछ आ मखान छइ ! मिथिला मे दरभंगा राज छइ ! लाल - लाल मकान छइ! मिथिला मे राजकवि विद्यापति छइ! मिथिला मे मांगैन खवाश छइ ! पचगछिया घराना के राग छइ! मिथिला मे भारती आ मंडन छइ! सुग्गा पढ़इत पुरान छइ! मिथिला मे अयाची छइ! परसौत कलियानी माय महान छइ! रचना मे माटि के सौंध छइ ! मिथिला मे शहीद रामफल मंडल छइ! देस लेल सहादत महान छइ ! मिथिला मे पाग छइ ! पगड़ी छइ! मिथिला के शान छइ! रामा मिथिला महान छइ !!

एहि विशिष्ट शैलीक भाषाक उपभाषा ,बोली - वाणीक मानक केर फेरमे किछ लोक आरंभ सँ रहैत अयलाह हेन। परंच ताहि सँ मातृभाषा अनुरागी समस्त लोक बीच सार्वजनिकता मेँ संकीर्णता फेंटैक काज मानल जाइछ। ओना भाषाक मानकीकरण करय बाला कियो के होय छथि?जहन मायक मुखाविन्द सँ निकलल वाणीकैँ नान्हिटा सँ बच्चा सुनैत - सिखैत आगू बढैत अपना परिवेश मेँ अपन गप्प सँअगिला मैंग पर रहल लोक कैँ तथ्य बुझौनाई मे सफल होइते छैक। तखन ई तितम्हा ठाढ करबाक कोन काज? ग्रियर्सन सर्बेमे मानलनि जे मैथिली भाषा अतितमे बाभनके नहिं रहनि। हुनक भाषा संस्कृत आ लोकबाणी वादमे अवहट रहनि,जाहिमे विद्यापति जीक रचना प्रमाणित रुपेँ छन्हि। मिथिला क' सोल्हकन समाजक जे भापा बोली रहय सयह मैथिली थीक। एहिके राइतो राति मान्यता

दैत शासकीय स्तर पर महत्व बढ़ल रहैक। सर्वे में इहो भेटलनि मिथिला'क वासी हिन्दू समाज बीच चौदहो देवान पूजल जाइक। कोनू - कोनू व्यक्ति जाति आ वर्गमे एकहुटा देवी देवता आ ईस्ट गुरूकेँ रूपमे भगवान् भगवती अराध्य देव रहैत आयल छैक। घरक अर्थात् गहवरमे एकटा देवान रुपमे ' साहेब खवास ' क ' पूजा भाव सेहो होइत रहल छैक। एक गोसाईं घरक भगतां मुहेँ भाव खेलैत,वाक् दैत सुनल अछि - "हो सेवक! तों सब खवास शव्दक पैघौत खूब मानैत अयलह। जे पहिले समयमे खवास नहि सम्बोधन करें तँ मार्ग खाएं छलै आ आब जौं ओहि वंशजके कियो लोकनिके खबाश कहबहक तँ मार्ग ओकरा हाथे खेबेटा करबह।आजादीक वाद जमाना उनैट गेलैक। ओना समाजमे जे दियादि पैघ संख्याँमे रहैत अछि से अल्प दियादिबालाके फुटबैत मोजर नहिँ दैत उपेक्षा करय सँ वाज ने अबैछ। भारतीय संविधान क' राष्ट्रीय स्वीकृत लक्ष्य य - समानता। मुदा असमानता भरल छैक। सामाजिक न्यायके जगह सामाजिक अन्याय मचल छैक।तेँ कविवर महोदय अपन पाँति सँ मुखर भ' कवितधारा क' अजस्त्र स्रोत बहेने छथि। यथा :-

संस्कृत मे लिखाइ अ शतपथ वराम्हन।
हिन्दी मे लिखाइ अ चतुरी चमार ।।
मैथिली मे लिखाइ अ सतिया धनुकाइन।
लिखेबाला छइथ वर्चस्ववादी रचनाकारगन।।
बर्चस्ववादी के सनमान दलित के अपमान।
सभ ग्रन्थन मे हय वर्चस्ववादी के गुनगान।।
दलित उपेक्षित के हेय कइलन अपमान।
दलित उपेक्षित कर जोरि के करइत प्रभूगान।।
तएं वे दलित उपेक्षित के करइत हैय गुणगान!

आइयो समाज मे पूजल जाइ विभेदकगन!! कवि जीक तात्पर्य छन्हि औजको तिथि मेँ लोक खास बना चाहैत छैक। खास शव्दक पर्यायवाची रूपमे खवासा निहितार्थ पाँति ऐ तरहेँ क्र०-६९ शिर्षक पाठ "खवास" मेँ गबैत छथि। यथा -: खवास छी, राजाक खवास छी।

राजा छी, राजाक खवास छी।
साधू - संत छी , ईश्वरीक खवास छी।
हनुमान छी, रामक खवास छी।
संत तुलसी छी , रामक खवास छी।
उगना महादेव छी , विद्यापति क' खवास छी।

सामाजिक व्यवस्था मे , राजनीतिक प्रक्रिया मे ,आईधरि बहुसंख्यक आबादी वाला मिथिला क' लोकक

हर स्तर पर उपेक्षा आ दोहण- शोषण होइत रहलैक।सभा सोसायटी क' भीड़क हिस्सा बनैत बैकवार्ड क' बीच मंचक शोभा बढबैत फारवर्ड कैँ सचेत करैत अपना कविता मे कवि चित्कार कय उठबैत छथि। पाँति द्रष्टव्य अछि-:

अहां के सुनली,हिम्मत सुनूं ।

अहां के मानली, हिम्मत मानूं।

अहां के जानली, हिम्मत जानू ।

अहां के पढली, हिम्मत पढू।

अहां के पुजली, हम्मर पुजू।

अहां के गइली, हम्मर गाउ।

रामा अहाँ सुनइली , हम्मर सुनू। ऐ तरहेँ सभ क्षेत्र में बाँकियौता बाइकलाग कहियाधरि पूरा होयत। अपन त्याग देखेबाक एखनो रस्ता देल जा रहल छैक,परंच जम्मा ढेरी कियो नहिँ ढाहत! उदारवादी होयव बड़े कठीण बुझाछ।तेँ कविजीक पाँति समाजके अन्हारो मे इजोतक बाट देखय ले वाद्य करैत छैक। हुनक एक कविता पढू :-

मिथिला राज्य लेल,बियाकुल मोर जीयरा ।

मिथिला राज लेल, पियासल मोर हियारा ।

मिथिला राज्य लेल ,भुखल मोर मनवां ।

मैथिल भाषा सँ ,अघायल मोर जीयरा ।

मैथिली सनमान सँ , अघायल मोर हियरा।

मैथिली पागल मे। ,समायल मोर मनवां।

बज्जिका भासा सँ ड्राय मोर जीयरा।

अंगिका भासा सँ घबरायल मोर हियरा।

बोली माने मे हुलसाय मोर मनवां.....

सदरिकाल सँ आबोधरि हम गुलाम छी,हमरा वर्तमान व्यवस्था एखनो गुलामीक जींझिर सँ कसिकय जकड़ने अछि।मुदा खूब जोड़कर झटका धीरे सँ अकान्त करैत य।जेना कि आचार्य जी पाँति गढलैन हन् :-

हम कइसे गुलाम छी!

कहियो हम मुगल के गुलाम छी।

कहियो हम अँग्रेज के गुलाम छी।

कहियो हम राजा के गुलाम छी।

हम कइसे गुलाम छी।

आइयो हम नेता के गुलाम छी।

आइयो हम पार्टी के गुलाम छी।

आइयो हम राजनीतिक के गुलाम छी।

हम कइसे गुलाम छी।

आइयो हम जाति के गुलाम छी।

आइयो हम समाज के गुलाम छी।

आइयो हम अर्थ के गुलाम छी।

हम कइसे गुलाम छी।

आइयो हम धरम के गुलाम छी।

आइयो हम राजवंशी भगवान के गुलाम छी।

आइयो रामा हम राजा के गुलाम छी ! औजको परिस्थिति मे लोक अपने मने आजादी कतय एहसास करा पाएब! हर पात-पात पर गुलिस्तां तँ फैसले छैक किनै? ऊँच नीच क' भावना समाजमे विद्यमान छैक, संविधान मे अश्पृश्यता - घृणा केर विरूद्ध कारगर कायदा कानून बनल रहलाक वादो लोक कतेक सुरक्षित छैक! ई हमरा एकटा यक्ष प्रश्न ठाढ ,सुरसाक मुँह बौने फरीछ बुझाइछ। एखन तँ एक लेखकीय समाज गुटबंदी कय पचमनियां लिखल के आँय-बाँए मानि रद्दीक टोकरीक शोभा बढवय बाला स्तरहीन रचना कहैकय सोसल मीडिया मे छिरयबैत छै। मनोवैज्ञानिक आपत्ति थीक जे ज्ञानक ई पैघ कटोरी अपनहइटआ लग बूझैत मानैत , संघर्षरत तबका कैँ हतोत्साहित कय अधबटियामे लटकौने चन्द तरहेँ वाधक देखार होईछ। कवि मेहरू जनमानस मे उर्जा भरैत उपेक्षित वंचित कैँ अपन हक - अधिकार लेल सतत् सजग आ जागरुक रहय ले कहैत अपील धरि कविता विधा माध्यम सँ करने छथि-:

आई कि होई रहल होय ।

असहमति के अधिकार ।

छीनल जा रहल हैय।

आई कि होय रहल हैय।

बोलई के अधिकार

छीनल जा रहल हैय।

आई कि हो रहल हैय।

असहमति के अधिकार

देस द्रोह बन रहल हैय।

आई कि हो रहल हैय।

अमीरी गरीबी के खाइ

बढ़ल जा रहल हैय।...,... आचार्य रामानंद जीक स्पष्ट कथन जैन,पाँति दोसरो देखल जाए :-

भाषा के

सरहद मे न बांटियो।

मैथिली के,

बज्जिका अंगिका में न बांटियौ।

मैथिली के,

संस्कृत - असंस्कृत मे न बांटियो।

मैथिली के ,

राय मानक मे न वाटियो।

मैथिली के,

ऊँच - नीच मे न बांटियो।

मैथिल के ,

बाभन सोलकन मे न बांटियो।

मैथिल के ,

छूत अछूत में न.....

जेना कि सर्व विदित अछि मिथिला मिहिर पत्रिका कविता विशेषांक रूपेँ सितम्बर १९७४मे एकसय जीबीत कविजीक टटका कविता छापिकय ऐ धाराके गतिमान बनौने रहैक।आ आब तँ दीपा मिश्र (मध्यप्रदेश)१५१ कवियत्री क' एक-एक गोट कविता ' मैथिली ' नामे पोथी छपौलीह आ काव्य धाराके आगू बढौलीह अछि।एहनामे कविताक पोथीक बआढइकए कियो रोका नँय सकता। आचार्य जीके कविता केँ गुणवान आवश्यकता छैक। संक्षेपमे ई कहब जे हमरा मंडल जीक मैथिली साहित्य क्रान्ति सँ घनिष्ठ संबंध भ' गेल अछि। आनन्दानुभूति एतेक धरि बढ़ल जे मैथिली भाषा क' अक्षय भंडारके भरैक लेल अनेकों समीक्षकक ऐ पोथी मादे अखबार मे प्रकाशित भेलो उपरान्त हमहूं अपनाके नहिं रोकि पबैत छी। एहि तरहक सृजन के आलोचना करैत ई अनुभूति होइत रहल जे शनिचरा लेखक कवि के अतिरिक्त अद्यतन अन्य केर पोथी सर्वथा कम छैक।सम्यक विचार करब अँखिगर लोकक काज होयत। जाहिपर प्रकाशक गण सेहो अनुकम्पा देखाबथि। प्रधानाध्यापक पतद सँ विज्ञान शिक्षक आचार्य रामानन्द मंडल जी सेवा निवृत्त भेलासन्ता चारि सालसँ अहर्नइस माय मैथिली क' सेवा कय रहलाह अछि।सोसल साइट पर सेहो सक्रिय छथि।सबसँ हिनक पैघौत इयह जे सरकारी स्तर पर मैथिली केँ

धकियेबाक षढयन्त्र कैँ पर्दाफाश केलनि। सीमान कातक बज्जिका आ अंगिका नामे फुट सँ भाषायी बेपार करय बाला मैथिली विरोधी शक्ति कैँ चिन्ह बाक खगौट दिश मैथिली आन्दोलनीक आँखि फोललनि अछि। हिनक पोथी विविध आयाम के समेटने भाषा विमर्श लेल अपेक्षित रहत।

मिथिलाक स्वतंत्रता सेनानी : सलहैता - गुरूमैता

पोथीक समीक्षक -: लाल देव कामत

मैथिली भाषा मेँ "सलहैता - गुरूमैता " पोथी पल्लवी प्रकाशन निर्मली सँ बहराएल हन्। एहिमे पृष्ठ सं०-८१, एहिक मूल्य २०० टाका निर्धारित कयल गेल य। चारिगोट स्वाधीनता सेनानीक व्यक्तित्व एवम् कृतित्व पर लिखल गेल पाठ अति महत्वपूर्ण अछि। पहिल पाठ सल्हैता पृष्ठ सं०-१७ सँ ४८ केर बीच आ दोसर पाठ गुरूमैता पृष्ठ ५० - ७१ पर मुन्दर्य छैक। तेसर पाठ स्व० रामफल मंडल ७२ सँ ७७ आओर आखरी पाठ. स्व० अनन्त लाल कामत पृष्ठ ७८ - ८३ धरि प्रमुखताक संग छपल छैक। एहि पोथीके मादे गजलकार ललन सल्हैता (नहरी) आ डॉ० धनाकर ठाकुर जी सन् १९२० - ३० केर देशक गुलामी के जीझिर तोड़य मेँ महात्मा गांधीके नेतृत्व मेँ स्वतंत्रता संग्रामके गंभीर संघर्षमे सँग पुरैत उक्त चारू महानायकके योगदानक चर्चा पोथी बावत कयलनि अछि। प्रसिद्ध साहित्यकार आ सेवा निवृत्त डिविजनल कमान्डेंट तेज नारायण खेड़वार लिखलैन अछि " नव सोच सँ भारतके गाम जागि गेल य। कोसी कमला केर क्षेत्र सँ अनेकों लोक देशक आजादी ले खूब लड़ल छलाह। स्वयं अपन बातमे जीवनी लेखक श्री यादव जी कहलनि अछि मिथिलांचल मध्य स्वाधीनता सेनानीक चर्चामे अनेकों लेखक बढ़ि - चैढ़ कs लिखलनि, मुदा एहि चारू महानायकके योगदानक चर्चा पोथी मेँ नहिं के बरोबरि कयल गेल छैक। तेँ नव पिढिक लोक हिनका सभक कीर्ति सँ अनभिज्ञ रहि गेल छैक। सद्यप्रकाशित ऐ पोथीमे क्रांतिकारी चारू योद्धा केर विषयमे गंभीरता पूर्वक कलम चलौलनि अछि। आजादीक पचहत्तरम अमृत महोत्सव वर्षक समाप्ति पर गुमनाम स्वाधीनता सेनानीक संदर्भ मँ खोज करैत वरेण्य साहित्यकार श्री नारायण यादव जी अद्भूत लेखन कार्य कयलनि अछि। अपने पाठक केँ बताबी सर्वप्रथम श्री नारायण यादव जीक संबंधमे। ई कवि लेखक रुपमे कविता संग्रह - नाती दुसलक नानाकेँ, कथा पोथी - बाबा नाम केवलम, समझौता, नवकी पुतौह आ 'खाली घर' केर रचना कयने छथि। मैथिली विषय सँ एम•ए• पास केला पछाति हिनक हाई स्कूलमे शिक्षकक पद पर नियुक्ति भेलनि। उच्च विद्यालय जयनगर के प्रधानाध्यापक पद सँ सेवानिवृत्ति पाबि कनेक अस्वस्थ रहैत छैथि। एहनो परिस्थितिमे ई मैथिली अभियानी रहि अन्तरराष्ट्रीय मैथिली परिषदक महासचिव छथि। श्री नारायण यादव जीक माता सव• महेश्वरी देवी स्वाधीनता सेनानी स्व• रामलखन सल्हैताजी केँ पुत्री रहथिन। पिता स्व• राजेश्वर यादव आ दादाक नाम स्व• भोला यादव रहनि । श्री यादव जीक जन्म स्थान छैन डुमरा, प्रखंड अंधराठाढ़ी आ मातृक नहरी अंचल खुटौना जे आब मधुबनी जिलान्तर्गत अछि। हिनक सारगर्भित आलेख विभिन्न पत्र-

पत्रिकामे विविध तिथिकेँ प्रकाशित भेल छन्हि। पाठक केँ ' सल्हैता - गुरूमैता ' पोथीक रसास्वादन एहन विलक्षण लगतैन,जे एक बेर हाथ आयल पोथीके बिनु पढ़ने छोरल पार नहिं लगतैन। बढ़ मनोयोग सँ ऐ वीर स्वाधीनता सेनानीक व्यक्तित्व केँ जानबाक आवश्यकता होयत। एहि पोथीमे यादवके अनेक शाखा, यथा -: घोषिन,कन्नोजझिया,गड़ेरी, मझरोठ,मझरौट, दहियार,बड़गुआर आ देवहरि आदि(कृष्णौट) छैक। ऐ समाजक गोत्र अत्री अनेक पदवी विशेष कय घोषिन यादवके मूल ३११ संख्याँ मेँ उल्लेख भेल अछि। जाहिमे गोईत केर अन्य प्रभेद -: बहुकुलिया, खुरा, विसनपुरिया, ग्वासारे, छजनैत, मछड़िया आ सगहा थीक। सल्हैता आ गुरूमैता टाईटिल घोषिन यादवके छैन। आदरणीय रामलषन सल्हैता के पूर्वज सहरसा जिलाक सितोहबरहा गामक रहथि। आत्मा सल्हैता आ परमात्मा सल्हैता दूनू भायमे विमर्श उपरान्त आत्मा सल्हैता १००-१२५ गाय चराबय पछिम दिशामे हांकलनि। जंगल आ परती जमीन ढ़एड़ परल रहने गैवार-चरवाह हुनका संगे रोमैक काज करय ले छलैक। जाहि गामक लग सांझ पड़ैक,ओतय बथनिया डेरा कायम करथि। वाटमे गाईक दूध-दही खाइत पियैत रसे - रसे १००-१२५ किमी० पछिमधरि नहरी गाम भीड़कय आबि गेलाह। एहि पिढ़ी सँ खेरहा नारायण जी आरम्भ करैत ,एतुका भुगोलक पूब समता आ पछिम सुगरबे नदीक बहुत कलकल धारा सँ परिचीति कराबै पाठकके स्व० कमल नारायण सल्हैताजीक दरवाजा पर अवस्थित परौणीक गढ़ी सँ उपरल शिवलिंग केर दर्शन कराबैत छथि। नीक विन्यास ओ भाव-भंगिमा केर संग सल्हैता परिबारक निजी आ सार्वजनिक जीवन तथा देश आज़ाद करयमे सराहनीय भूमिकाके संक्षिप्त इतिहास बतेबाक परियास अपना जनैत कयलाह अछि।एहि वंशवृक्षक कुर्सीनामा देला सँ पाठके पात्र लोकनिक खानदानी नाता बुझयमे सेहो सुगम आ फरीछ कयल गेल छैक। गाय ,बच्चा ,दूध घी बेचला सँ नहरी क्षेत्र मेँ खुब धनीक होयत गेला । अहीगाममे मित्र ठुकाई सौव हुनक विवाहो करौलनि ,जाहिमे रघु नामक संतान सुख भेलनि।गौपालन कार्य जे पुश्तैनी रहैन,तकरा आगू बढ़बैत रघुके विविहोपरान्त मुशहरू आ फुदी दूगोट पुत्र होई छन्हि जे पैघ भेलापर खूब जगह जमीन अरजैत छथि। दरभंगा महाराज सँ केश मोकदमा'क टक्कर कलकत्ता हाईकोर्ट मे होई छैन। वादमे दोस्ती भ' जाई छैन। मुसहरू जीक तीन पुत्र क्रमशः गुदर,बच्चा आ बाबूलाल सल्हैता धन सम्पत्ति देखभाल आ आरो अधिक बढ़ेबाक काज निमित विभाग बाँटिके सम्मिलाइत परिवारक नाम परोपट्टा मेँ बढ़बैत रहलाह। गूदर बाबूके छोट भायक पुत्र रामलखन सल्हैताजी खूब जानकार रहथि। रामनारायण गुरूमैता जीक मृत्यु क' वाद संगठन'क नेतृत्वकर्ता रामलखन सल्हैताजी बनलाह। से ओ हिन्दी भाषी जंका बोलचाल रखलनि। हुनका नेतृत्व मेँ देवनारायण गूरूमैता , सुर्यनारायण सिंह,सुबोध झा, गुलाबी सोनार , यमुना सिंह,जीलेवी खरगढू आ रामलखन जीक छोटभाय रामकृष्ण सल्हैता , जयकृष्ण सल्हैता आन्दोलनमे एवं हुनक १० हाथक दन्तरवा हाथी खुब अभियान चलाबैक।देश आजाद कराबयके दौड़मे ब्रिटिश सरकार हिनक लोहा मानैत छलैक। सन् १९४४

मे दियाबाती सँ एक दिन पूर्व रामलखन बाबूक दरबाजा पर रात्रिके १० स्वतंत्रता सेनानी भोजन कयके सुतल रहैक , ५०० मीटर दुरे सँ अंग्रेज़ सिपाहिक टार्चक रोशनी सँ इजोत झलकलै । पहरा पर गुरूमैता जी मुस्तैज रहि सिपाहीके डांटने रहैक। विस्तार सँ जानबाक लेल उपरोक्त पोथी अवश्य पढि।एहिमे पुर्ण जनतब गुरूमैता क' वंशाबलीक संगहि रामफल मंडल आ अनन्त लाल कामत जीक संघर्ष आ जीवन गाथाक विरूदावली देल गेल अछि। बिहारी गुरूमैता के ५० मौजेमे कामत छलनि आ नेपालमे सेहो दिघवा आ रामपुरामे कामैत रहनि। हिनका दूई बेटा -: रामनारायण आ देवनारायण रहथिन । कलकत्ता सँ मिथिला'क पथम वा दोसर स्नातक भेल रहथि रामनारायण बाबू ,जे नेताजी सुभाष चन्द्र बोस के संग नीक परिचय बनाबैयमे सफल छलाह। वादमे महात्मा गांधी आ राजेन्द्र प्रसादजी सँ नीक संवंध बनल रहलनि। १०वर्षीय भुवनेश्वर गुरूमैता केर हुलासपट्टी मध्य विद्यालय सँ नाम कटला पर मुज्जफरपुरमे नाम बड़कठिनता सँ लिखाओल गेल रहय । एक बैंकमे ओतय मैनेजर पद पर हुनक काका रहथिन। एक संस्थामे नाम नै लिखल गेलैक तँ दोसर विद्यालयमे एम० ए० पास एच एम साहेब १०० अंकक सबाल दैत परीक्षा लेलनि , शत-प्रतिशत जाँच परीक्षा में खड़ा ऊतलाह। ओतय ओ संघ शाखामे आर एस एस के प्रचार-प्रसारमे लागल रहलाह। देशक आजादी लेल अपन सर्वस्व न्यौछावर करयमे जे योगदान हुनका लोकनिक भेल अछि,ताहिके भारतके नव पिढिक बच्चा - बच्चा एहि पोथीक उपयोगिता बुझत।हम शुभकामना दैत छीयैन जे हुनक पोथीक नव संस्करण शिघ्र होय!

मैथिल भैया करू विचार

पोथी समीक्षा - लाल देव कामत

कविवर बद्रीनाथ राय " अमात्य" जीके पाँच दर्जन काव्यके मैथिली पोथी " मैथिल भैया करू विचार" पल्लवी प्रकाशन निर्मली सँ बहराएल हन्। १०९ पृष्टक एहि पोथीके दाम २०० टाका अछि। ई नव कविता वस्तुत: मंचीय - गेयातत्मक बुझाइछ। मिथिलाक किछु गीतकार अपना अंदाजमे एहिमे सँ लयवद्ध गौउने छथि। हिनक काव्य रचना अत्यन्त सौष्ठव भेल छन्हि। सद्यप्रकाशित ऐ गेयातत्मक कविता संग्रहमे भावक अविरल आओर अजस्त्रधारा प्रवाहित भेल य। कविताके विचार भाव अत्यन्त नैयका आ मौलिक दृष्टिगत होईछ। हिनक कविता कैँ सम्पुष्टि दैत अनेको कविजनके लघु आ दीर्घाकार कविता सँ मूलभूत तुलना कयल जा सकैछ। एके शिर्षक सँ दीर्घ अथवा खंड काव्य अनेकों कविजीक छन्हि,परंच साहित्य अकादमी पुरस्कार विजेता प्रोफेसर (डा०) इन्द्र कान्त झा जीक कतेको कविताक शिर्षक'क नाऊ एके छन्हि। मुदा ताहू सँ दू डेग आरो आगू बढि हिनक भेल अछि। मुदा से अप्रकाशित रहि गेलनि अछि। पाठक कैँ विविध शिर्षक सँ कविता पढ़यमे आओत , जाहिमे रस अलंकार आ छंद लालित्य बुझाएत। से हिनक पोथी रूपैँ आब कहिया धरि आओत? एहि पोथीके हाथ लगेबाक माने भेल जे आद्य:उपरान्त शिघ्रे पढ़य बिना रुकि नै सकैत छी। एहि निहितार्थ वरेण्य साहित्यकार श्री नन्द बिलास राय जीक अभिमतमे तथ्य सेहो पुष्टि करैत छैक। स्वयं बद्रीनाथ बाबू अपन बातमे कविताक रचना संदर्भ मैँ सांगोपांग व्याख्या कयनहि छथि । ताहि सँ पाठकवर्ग कैँ कविताक रोचकता सेहो सहेजे बूझिमे आबि जाएत। समसामयिक विषय पर पाँति गरहैत रायजी निमग्न भ' गबैत छथि। देखल जाऊ :-

पालक परम कठोर भेल अछि,
मुदा विकासक शोर भेल अछि।
अपने रान्हल तीसी तीमन ,
नोनगर करूगर झोर भेल अछि।।

मिथिलाक समृद्धि तखने होएत जहन एतुका सर्वहारा वर्ग 'क लोकके बेरोजगारी खत्म होय :-

हकन कनइए मिथिला धरती ,
जनमानस लाचार बहुत छै ।
बाउ विकाश विलम्ब जुनि करियौ ,
खाली हाथ बेकार बहुत छै।।

मिथिलामे मैथिली'क नाम पर किछ जरदगव अपना वर्ग आ जाति'क नहिँ ,वरन् बिनु परवाह कयने अपन गोतिया आ गोधिंयापनिक चलाकी सँ एक गुट ठाढ केने छैक

।ताहिक वर्चस्ववादी संस्कृति पर व्यंग करैत कवि पाँति लिखने छथि -:

माला मंच माइकमे मिथिला,
माथमे चाही ललका पाग ।
आब सुधरि जो निर्लज्जा तूँ ,
गत्तर गत्तर लगलौ दाग ।।

मंच- माइक- माला पहिर खूब नितराइत, यशस्वी बनैत ,दीपके ईजोत पसारबाक आकर्षक पेनी देखू तँ अन्हारे आ हहाकारे केने छै । से व्यक्तिगतो जीवनमे कनेक यश बटोरने रहनाय मनुखता हैत! तेँ कवि कटाक्ष करैत ई पांति देलनि -:

लात खाइतमे उमर बितल छौ
गारि सुनैतमे पकलौ केस ।
तन्द्रा के तूँ त्याग पतितहा
देहमे नञि छौ लाजक लेश।।

भारतीय नागरिक केँ विशेष कय लेखकीय काजमेँ लागल कलमवीर केर दू गूट - एक वामपंथ तँ दोसर दक्षिण पंथमे बँटल देखल जाइछ,से हदघरी मानसिकता आधार पर बँटले बुझाइछ। मुदा संतुष्टि कतौ नै न छैक? यथा-:

राजनीतिक दलदल के कारण,
सबहक मनमे रार बहुत छै ।
अपना मनसँ सब सिन्धु छै ,
देखलहुँ सुख्खल धार बहुत छै।।

मिथिलांचल प्रायः रौंदी (अकाल) आ वाढिमे त्रस्त रहैत छैक। सरकार दिशसँ सरकारी कर्मी आ त्रि-स्तरीय पंचायती राज क' जनप्रतिनिधि राहत सूची लाभार्थी लेल बनाबयमे घोर अनियमितता करैत खूब धन डेकारैत छैक। निगरानी जाँच दल सेहो वादमे मालामाल होईछ,आ हाथी तँ दहा जाइछ मुदा चीरै दू बूँन जल बिना छटपटाइत रहि जाइछ। एहि मार्मिक दृश्यके चित्र खींचैत कवि समानताक लेल बेकल देखाईछ। यथा-:

चास बास संसाधन रहितहुँ
सब कनहापर भार बहुत छै।
पीपड़ पाखरि के मोजर नञि

छाँवहीनटा तार बहुत छै ।।

छै समाजमे बहुत विषमता

भ्रष्टाचार विकार बहुत छै ।

किछुए के चुनरी मलमल छै

बाँकि लोक उघार बहुत छै ।।

अपन कविताक उपयोगिता मादे कविजी घोषणा करैत छथि। यथेष्ट पढल- लिखल आ अफसर बनल मिथिलाक बेटा जे शहर नगरमे रहि पैघौत झाड़ैत छथि से आब गाम घरक मैथिल सन मैथिली बजनिहार नहिँ छथि।ओ आब अपन परिबारिक धियापुता सँ अंगरेजीये हिन्दीमे वार्तालाप करैत अपना कैँ श्रेष्ठ बुझैछ आ मिथिला मंच पर मैथिली लेल नोर बहबैत रंगल नढ़िया बनल देखाईछ,से ऐ पांतिमे स्पष्ट लौकैत य -:

माँ मैथिली हमरा कहलनि -

जे पुत छथि पढल - लिखल नञि,

खूबे ओ देलनि सम्मान ।

पूत हमर जे पढल लिखल छथि ,

माँ नँय बूझलनइ , बुझलनि आन।।

मैथिली साहित्य आन्दोलन मेँ हिनक योगदान लेल हम अभिभूत छी। हिनक पोथी 'प्राकथन' मेँ शंभूनाथ मिश्र लिखैत छथि-: मैथिली जगतमे एक सँ बढिकय एक साहित्यकार भेलाह, जे मैथिली साहित्यिक विकास लेल अपन लेखनी कैँ गति दैत रहलाह। एहि क्रममे श्री बद्रीनाथ राय "अमात्य" उदेमान नक्षत्र रुपमे सोझा अयलाह अछि। हिनक कविता बरबरि फेसबुक पर अभरैत रहल अछि। हिनक रचनामे मुख्य रूप सँ मिथिलाक समस्या उजागर होइत रहलनि। कतेको काव्य हिनक व्यंग्यात्मक होई छन्हि,जे पाठक कैँ कविता विधा दिश सहेजें आकृष्ट करैत अछि। प्रस्तुत पोथी " मैथिल भैया करी विचार " मेँ देशक आ नगर विकास क' कथा-कविता मादे श्री रायजी कहैत छथि-:

हेहर - थेथर , आंकड़- पाथर ,

भ्रष्ट शिरोमणि मुखिया भेल ।

सुगरक खुरके पूजा होइए ,

कुक्कड़क मुँह गमकौआ तेल।।

वर्तमान पंचायती राज व्यवस्था'क जे परिवेश भारतमे बनैत जा रहल अछि, ताहिमे ई कविता रोचक ओ सटीक बुझाइछ।

एकटा कवितामे कविजीक कहब छन्हि, जहन हमसब मिथिलावासी छी, तहन जाति-

पाति,धर्म सम्प्रदाय की? सब एके जाति - एके धर्म आ एके सम्प्रदायक छी; सब मैथिल छी। यथा, पाँति द्रष्टव्य -:

हम जातिके छोड़ि देने छी ,
अहूँ जातिके छोड़ू भाय।
आऊ एके पांतिमे बैसि,
भुखल छी? तँ खाऊ मिठाय ।।

कविवर रायजी आत्मकथा नामक कविता मादे अपन जीवनक व्यथा कथा रखलनि अछि , जाहिमे कैंचाक अभावे सोचल लक्ष नहिँ भ' पबैत छैन! यथा-

अर्थक हीन मनोरथ सबटा,
छल सपना सपने रहि गेल।
देखब कहिया दिन सुदिन हम,
दग्ध हृदय जरिते रहि गेल।।

अछि द्वेष दंभ सँ दुषित समाज,
उपहासे मात्र करईए ।
मन मारि अपमान सहै छी,
झर - झर नोर बहाए ।।

प्रस्तुत मैथिली साहित्य पोथी ' मैथिल भैया करी विचार 'कविता संग्रह'क सब काव्य बेश उपरा- उपरी अछि। आशा अछि पाठककेँ चहटगर लगतन्हि । एहि पोथीके पछिला कोभर पर कवि जीक छविक संग परिचय देल गेल छैक। संगहि वरेन्य साहित्यकार गजेन्द्र ठाकुर जीक मंतव्य सेहो पाठकके नजैर पड़तैन। हालहि २०२३ जूनमे ई पोथी सगर राति दीप जरय कथा संगोष्ठी में लोकार्पण भेल अछि।

मैथिल भैया करूं विचार
पोथी समीक्षा - लाल देव कामत

कविवर बद्रीनाथ राय " अमात्य" जीके पाँच दर्जन काव्यके मैथिली पोथी " मैथिल भैया करू विचार पल्लवी प्रकाशन सँ बहराएल हन्। १०९ पृष्टक एहि पोथीके दाम २०० टाका अछि। ई नव कविता वस्तुत: मंचीय - गेयातत्मक बुझाइछ। मिथिलाक किछु गीतकार अपना अंदाजमे एहिमे सँ लयवद्ध गौउने छथि। हिनक काव्य रचना अत्यन्त सौष्ठव भेल छन्हि। सद्यप्रकाशित ऐ गेयातत्मक कविता संग्रहमे भावक अविरल आओर अजस्त्रधारा प्रवाहित भेल य। कविताके विचार भाव अत्यन्त नैयका आ मौलिक दृष्टिगत होईछ। हिनक कविता केँ सम्पुष्टि दैत अनेको कविजनके लघु आ दीर्घाकार कविता सँ मूलभूत

तुलना कयल जा सकैछ। एके शिर्षक सँ दीर्घ अथवा खंड काव्य अनेकों कविजीक छन्हि,परंच साहित्य अकादमी पुरस्कार विजेता प्रोफेसर (डा०) इन्द्र कान्त झा जीक कतेको कविताक शिर्षक'क नाऊ एके छन्हि। मुदा ताहू सँ दू डेग आरो आगू बढि हिनक भेल अछि। मुदा से अप्रकाशित रहि गेलनि अछि। पाठक कैँ विविध शिर्षक सँ कविता पढ़यमे आओत , जाहिमे रस अलंकार आ छंद लालित्य बुझाएत। से हिनक पोथी रूपैँ आब कहिया धरि आओत? एहि पोथीके हाथ लगेबाक माने भेल जे आद्य:उपरान्त शिघ्रे पढ़य बिना रुकि नै सकैत छी। एहि निहितार्थ वरेण्य साहित्यकार श्री नन्द बिलास राय जीक अभिमतमे तथ्य सेहो पुष्टि करैत छैक। स्वयं बद्रीनाथ बाबू अपन बातमे कविताक रचना संदर्भ मेँ सांगोपांग व्याख्या कयनहि छथि । ताहि सँ पाठकवर्ग कैँ कविताक रोचकता सेहो सहेजे बूझिमे आबि जाएत। समसामयिक विषय पर पाँति गरहैत रायजी निमग्न भ' गबैत छथि। देखल जाऊ :-

पालक परम कठोर भेल अछि,
मुदा विकासक शोर भेल अछि।
अपने रान्हल तीसी तीमन ,
नोनगर करूगर झोदर भेल अछि।।

मिथिलाक समृद्धि तखने होएत जहन एतुका सर्वहारा वर्ग 'क लोकके बेरोजगारी खत्म होय :-

हकन कनइए मिथिला धरती ,
जनमानस लाचार बहुत छै ।
बाउ विकाश विलम्ब जुनि करियौ ,
खाली हाथ बेकार बहुत छै।।

मिथिलामे मैथिली'क नाम पर किछ जरदगव अपना वर्ग आ जाति'क नहिँ ,वरन् बिनु परवाह कयने अपन गोतिया आ गोधिंयापनिक चलाकी सँ एक गुट ठाढ केने छैक
।ताहिक वर्चस्ववादी संस्कृति पर व्यंग करैत कवि पाँति लिखने छथि -:

माला मंच माइकमे मिथिला,
माथमे चाही ललका पाग ।
आब सुधरि जो निर्लज्जा तूँ ,
गत्तर गत्तर लगलौ दाग ।।

मंच- माइक- माला पहिर खूब नितराइत, यशस्वी बनैत ,दीपके ईजोत पसारबाक आकर्षक पेनी देखू तँ अन्हारे आ हहाकारे केने छै । से व्यक्तिगतो जीवनमे कनेक यश बटोरने रहनाय मनुखता हैत! तेँ कवि कटाक्ष करैत ई पांति देलनि -:

लात खाइतमे उमर बितल छौ

गारि सुनैतमे पकलौ केस ।
तन्द्रा के तूँ त्याग पतितहा
देहमे नञि छौ लाजक लेश।।

भारतीय नागरिक कैँ विशेष कय लेखकीय काजमेँ लागल कलमवीर केर दू गूट - एक वामपंथ तँ दोसर दक्षिण पंथमे बँटल देखल जाइछ,से हदघरी मानसिकता आधार पर बँटले बुझाइछ। मुदा संतुष्टि कतौ नै न छैक? यथा-:

राजनीतिक दलदल के कारण,
सबहक मनमे रार बहुत छै ।
अपना मनसँ सब सिन्धु छै ,
देखलहुँ सुख्खल धार बहुत छै।।

मिथिलांचल प्रायः रौंदी (अकाल) आ वाढिमे त्रस्त रहैत छैक। सरकार दिशसँ सरकारी कर्मी आ त्रि-स्तरीय पंचायती राज क' जनप्रतिनिधि राहत सूची लाभार्थी लेल बनाबयमे घोर अनियमितता करैत खूब धन डेकारैत छैक। निगरानी जाँच दल सेहो वादमे मालामाल होईछ,आ हाथी तँ दहा जाइछ मुदा चीरै दू बूँन जल बिना छटपटाइत रहि जाइछ। एहि मार्मिक दृश्यके चित्र खींचैत कवि समानताक लेल बेकल देखाईछ। यथा-:

चास बास संसाधन रहितहुँ
सब कनहापर भार बहुत छै।
पीपड़ पाखरि के मोजर नञि
छाँवहीनटा तार बहुत छै ।।

छै समाजमे बहुत विषमता
भ्रष्टाचार विकार बहुत छै ।
किछुए के चुनरी मलमल छै
बाँकि लोक उघार बहुत छै ।।

अपन कविताक उपयोगिता मादे कविजी घोषणा करैत छथि। यथेष्ट पढल- लिखल आ अफसर बनल मिथिलाक बेटा जे शहर नगरमे रहि पैघौत झाड़ैत छथि से आब गाम घरक मैथिल सन मैथिली बजनिहार नहिँ छथि।ओ आब अपन परिबारिक धियापुता सँ अंगरेजीये हिन्दीमे वार्तालाप करैत अपना कैँ श्रेष्ठ बुझैछ आ मिथिला मंच पर मैथिली लेल नोर बहबैत रंगल नढ़िया बनल देखाईछ,से ऐ पांतिमे स्पष्ट लौकैत य -:

माँ मैथिली हमरा कहलनि -

जे पुत छथि पढल - लिखल नञि,
खूबे ओ देलनि सम्मान ।
पूत हमर जे पढल लिखल छथि ,
माँ नँय बूझलनइ , बुझलनि आन।।

मैथिली साहित्य आन्दोलन मेँ हिनक योगदान लेल हम अभिभूत छी। हिनक पोथी 'प्राकथन' मेँ शंभूनाथ मिश्र लिखैत छथि-: मैथिली जगतमे एक सँ बढिकय एक साहित्यकार भेलाह, जे मैथिली साहित्यिक विकास लेल अपन लेखनी केँ गति दैत रहलाह। एहि क्रममे श्री बद्रीनाथ राय "अमात्य" उदेमान नक्षत्र रुपमे सोझा अयलाह अछि। हिनक कविता बरबरि फेसबुक पर अभरैत रहल अछि। हिनक रचनामे मुख्य रूप सँ मिथिलाक समस्या उजागर होइत रहलनि। कतेको काव्य हिनक व्यंग्यात्मक होई छन्हि,जे पाठक केँ कविता विधा दिश सहेजें आकृष्ट करैत अछि। प्रस्तुत पोथी " मैथिल भैया करी विचार " मेँ देशक आ नगर विकास क' कथा-कविता मादे श्री रायजी कहैत छथि-:

हेहर - थेथर , आंकड़- पाथर ,
भ्रष्ट शिरोमणि मुखिया भेल ।
सुगरक खुरके पूजा होइए ,
कुक्कड़क मुँह गमकौआ तेल।।

वर्तमान पंचायती राज व्यवस्था'क जे परिवेश भारतमे बनैत जा रहल अछि, ताहिमे ई कविता रोचक ओ सटीक बुझाइछ।

एकटा कवितामे कविजीक कहब छन्हि, जहन हमसब मिथिलावासी छी, तहन जाति-पाति,धर्म सम्प्रदाय की? सब एके जाति - एके धर्म आ एके सम्प्रदायक छी; सब मैथिल छी। यथा, पाँति द्रष्टव्य -:

हम जातिके छोड़ि देने छी ,
अहूँ जातिके छोड़ू भाय।
आऊ एके पांतिमे बैसि,
भुखल छी? तँ खाऊ मिठाय ।।

कविवर रायजी आत्मकथा नामक कविता मादे अपन जीवनक व्यथा कथा रखलनि अछि , जाहिमे कैंचाक अभावे सोचल लक्ष नहिँ भ' पबैत छैन! यथा-

अर्थक हीन मनोरथ सबटा,
छल सपना सपने रहि गेल।
देखब कहिया दिन सुदिन हम,

दग्ध हृदय जरिते रहि गेल।।

अछि द्वेष दंभ सँ दुषित समाज,

उपहासे मात्र करईए ।

मन मारि अपमान सहै छी,

झर - झर नोर बहाए ।।

प्रस्तुत मैथिली साहित्य पोथी ' मैथिल भैया करी विचार 'कविता संग्रह'क सब काव्य बेश उपरा- उपरी अछि। आशा अछि पाठककेँ चहटगर लगतन्हि । एहि पोथीके पछिला कोभर पर कवि जीक छविक संग परिचय देल गेल छैक। संगहि वरेन्य साहित्यकार गजेन्द्र ठाकुर जीक मंतव्य सेहो पाठकके नजैर पड़तैन। हालहि २०२३ जूनमे ई पोथी सगर राति दीप जरय कथा संगोष्ठी में लोकार्पण भेल अछि।

शेष युद्ध " जीवटपन" केर नाम थीक!

पोथी समीक्षा - लाल देव कामत मो०७६३१३९०७६१

मैथिली साहित्यकार प्रो0 (डॉ0) राजाराम प्रसाद जीक सद्यप्रकाशित लघु उपन्यास "शेष युद्ध" एक विकट समयमे लिखल गेल इतिहासिक कृति थीक। मैथिली विषय सँ एम०ए०आ पी एच डी श्री राजारामजी पूर्व प्रति कुलपति,पटना विश्वविद्यालय मेँ रहि चुकल छथि।ओ एम एल टी कालेज सहरसा केर पूर्वमे प्राचार्य रहि चुकल छथि। शेष युद्ध मैथिली पोथीक किमत ५५० टाका, पृष्ठ संख्या ११२ पहिल संस्करण २०२० ई० ; सरस्वती प्रेस पटना सँ मुद्रित आ कबिलपुर लहेरियासराय (दरभंगा) केर अभिषेक प्रकाशन सँ बहराएल छन्हि। एक बदनाम शब्द 'कोरोना' संदर्भमे हिनक ई पोथी लिखल गेल अछि।एहि सँ पूर्व श्री प्रसाद जीक अन्य मौलिक रचनाबलीमे कथा परिधि-१९९७, मेघ लागल आकाश २०११ छपि चुकल रहनि। मैथिली लोक नाट्य- (आलोचना २०१०) आ साहित्य सरोरूह -२०१२ प्रवंध निवंध विधाके अतिरिक्त मैथिली लोक साहित्य क' विस्तृत इतिहास - २०१९ प्रकाशित भेल छन्हि। पचमनियाँ समाजिक पहचानकर बीच चोटीक' रचनाकार प्रो० राजाराम बाबू अध्ययन- चिन्तनमे लागल रहैत छथि। आ लेखन सृजनक काज क्रमिक रूप सँ करैत रहैत छथि। हिनक सहभागिता राष्ट्रीय - अन्तर्राष्ट्रीय संगोष्ठी क' व्याख्यान आओर साहित्यिक विधा पर भेल अधिवेशनमे मिज्झर भय मुखर रहैत छथि। पहिले कहलहुँ,एक बदनाम शब्द "कोवीड-१९" पर हिनक कलम जे चललनि से एक लघु उपन्यास रूपेँ सोझा आयल अछि। पाठक दू साल पूर्वहिक समय केँ धियानमे आनि अकानथि तँ एहि शव्दक अनुगूँज सँ कान धरि बहिरसन भ' जाइछ । कोरोना वाइरस सन वैश्विक महामारी आई जाहि रूपेँ संसार भरिमे पसरल आ तकर समाधान ले वैज्ञानिक लोकनि टीका अविष्कार कय समान्य लोकक सुरक्षा क' उपाय स्थाई तौड़पर सोझा आनि देलकैन ; जै सँ आब चैनक शांस भेट रहल छैक। चीनक बुहान शहर सँ प्रथमतया ई छुआछूत रोग निकलल ,जे प्रायः सब महादेशमे त्वरीत गतिये वायु द्वारा पसरल। एहि रोग केर लक्षण देख तत्काल वचाओक तरीका अपनायल गेल। किछु ढिठगर लोक नियम पालनमे सर्वथा शिथिलता बरतैक सँ इतर अकड़पन देखाबै जे अथाह चिंताके विषय रहैक। तैयो सब समुदाय आ वर्गके नेतागण अपना -अपना प्रभाव सँ समाजमे जागरूकता बढौलनि। भारतवर्षके यशस्वी प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र भाई मोदी जी सब तरहक हथकंडा अपनाबैत जन जागरण करैते रहलाह। एहि महत्वपूर्ण काजमे हुनकर बात मानि जे कर्मी सेवार्थ जुटलाह से अदम्य साहसक' काज कयलन्हि। सरकारी कर्मीमे डाक्टर - नर्स आ सहयोग करैत स्टाफ वैरियर गजबके साहस आ जीवटपन देखेलनि।

ताहि कार्य बावत ओहि कठिण परिस्थितिके आकलन करैत एक नीमन पोथी क' लेखन काज अलबत अविस्मरणीय भेलैक। पोथीके रोचकताक सँग पढल जाए ताहि लेल उपन्यास मेँ प्रचलित लोकोक्ति आ अमर वाणी एहि रुपेँ जगह - जगह देल गेल छैक। यथा - नाशे काल विनाशे बुध्दि, मारि कम बपराहरि वेशी, एसगर वृहस्पतियो झूठ, उनटा चोर कोतवालके डांटय, बर - बर घोड़ी भासल जाए - नड़ही घोड़ी कहय कतेक पानि, सादा जीवन उच्च विचार, बहुजन हिताय बहुजन सुखाय, बसुधैव कुटुंबकम् ।

गौस्वामी जीक संदेश -:

ईश्वर अंश जीव अविनाशी।

चेतन अमल सहज सुख राशि।।

कवितधारामे उपन्यासकार महोदय गबैत छथि-

माई हे! कोरोनाक कहर कहलो ने जाय.....

दोहा -: कोरोना काल नहिं महाकाल थिक!

लोकक जीवनक लेल महाजंजाल थिक!!

जगत धरणीक विनाशक भूचाल थिक!

विश्व मानवता 'क अभिशाप थिक!!

कोरोनाक महामारी केर वचाउ मेँ लागल महापराक्रमी कर्मीके याद दियाबैत अपनाके महायोद्धा सिध्द करय ले हुनका महाकवि विहारीक पाँति सेहो स्मरण करैत दुःख आ असफलता स्थिति सँ उबरास होइक मनोबल प्रधानता देखेलनि अछि-:

" दई दई क्यों करत है , दई दई मीनिहोरि!

जापै सुख चाहत लियोँ ,ताकतें दुखहि न फेरी!!"

पोथीक एगारहो पाठ धरि पाठकके ऐ विषय मेँ एक -एक पल कोना मानव मात्रके बित रहलैक आ आगूक समय कोना खेपल जाए, से चिन्तित रहैत अपन लेखन कार्यमे पुरान श्लोक संस्कृत मेँ सेहो ठाम - ठाम प्रयोग कयने छथि। जेनाकि-:

यदा यदा हि धर्मस्य ग्लानिर्भवति भारत।

अभ्युस्थानम धर्मस्य तदात्मानं सृजाम्यहम्।।

एहि तरहेँ देखल जा सकैछ -:

परित्राणाय साधूनां विनाशाय च दुष्कृताम् ।

धर्मसंस्थापनार्थाय सम्भवामि युगे - युगे।।

गीता - रामायण, महाभारत मेँ वर्णित कतेको तथ्यके एहिमे समेटने छथि । जाहि सँ उपन्यास पढैत काल आस्था प्रगाढ़ भ' उठैछ । यथा -:

कर्मप्रधान विश्वकरि राखा

जो जस करहि सो तस फल चाखा

जस करनी तस भोगहु ताता नरक जातपुनि क्यों पछताता

सर्वेभवन्तु सुखिन: सर्वे सन्तु निरामया: /

सर्वे भद्राणि पश्यन्तु मा कश्चित् दुःख भागभवेत् //

ईहाँ न लागए राऊर माया

अछि वृथा न जाए देव - ऋषि वाणी

आब संस्कृत भाषा सँ समान्य पाठक दुर होइत जाइछ,से एहि उपन्यास 'शेष युद्ध ' कैं पढैत घरि सहजे अभ्यास क' सकैत अछि -: कर्मणा मानसा वाचा सर्वावस्थासु सर्वदा ।

सर्वत्र मैथुन त्यागो ब्रह्मचर्य प्रचक्षते ।।

दोसर देखू -: दम्भो दर्पोऽमिमश्च क्रोध: पारूव्यमेव च ।

अज्ञानं चाभिजातस्य पार्थ सम्पदमासुरीम् ।।

असत्यमप्रतिष्ठं ते जगदाहुरनीश्वाम् ।

अपरस्यास्मभूतं किममन्यत्कामहैतुकम ।।

एतां दृष्टिमवष्टभ्य नष्टात्मानोऽल्पबुध्दय: ।

प्रभवनत्युग्रकर्माण क्षयाय जगतोऽहिता: ।।

भुमिराजोऽनलो वायु: को मनो बुध्दि रेव च ।

अहंकार आत्मीय में भिन्नता प्रकृतिरष्टधा ।।

एहि तरहेँ देखल जा सकैछ जे दुर्गासप्तशती सँ सेहो पाँति मोन पाड़लनि अछि -:

जयन्ति मंगला काली भद्रकाली कपालिनी।

दुर्गा क्षमा शिवा धात्री स्वाहा स्वधा नमोस्तुते।।

उपन्यासकार जीक'क पहिल ऐ विधामे डेग उठलन्हि अछि, तेँ भाषल तँ नहिये छथि,परंच गाँथल वा गुथल प्रचलित देहाती शव्द केर जगह पर पिरोयल नइशन्न शव्दक प्रयोग कयने छथि। अपन कवित भावें ऐ तरहेँ राजाराम प्रसाद जी पाँति रैचके मैला आँचलके अमर कथा शिल्पी फणीश्वरनाथ रेणु जीके शैलीकेँ जीवन्त रखलनि हन्।

कोरोना जायत अपन कलिकपुर गाम ।

भारती आँगन बनत मनोरम नाम ।।

नव चेतन नव - विहान सँ देवकी होयत प्रयाण ।

जन - जन करत राष्ट्र गुणगान ।

सर्वधर्म समन्वय सँ सभक होयत उत्थान।

देवकी जन - लोकमे नव अभियानक होयत मान ।।

आ करोना महायोद्धा लोकनिके समर्पित करैत अपन उपन्यास मेँ सेहो कवि हृदय हुनक जागि गेल छन्हि। आब मूलभूत चर्चा करै सँ पूर्व जखन सुख शांति प्राप्ति पर ओ मगन भ' गाबि रहलाह ,से पाँति हरसठे मोन पड़ैत य -:

अयं निजं परोवैत्ती गणना लघु चेतसाम्।

उदार - चरितानां तु वसुधैव कुटुंबकम्।।

ज़हन कोनो समय संकट उपस्थित होइछ तँ सनातनधर्मी लोक थपरी पारनाई,शंख फूकनाई आ थारी बजौनाई आदि काज करैछ। से दिनांक २२-३-२०२० केँ ५ मीनट धरि रविदिन सांझकेर ५ वजे जनता कर्फ्यू केर आगाज भेल। प्रधानमंत्री नरेन्द्र दामोदरदास मोदी जीके रेडियो पर "मन की बात" कार्यक्रममे जनतब सेहो देल गेलैक। भारत वर्षमे प्रथम चरण केँ २४ मार्च सँ २१दिन ले ९ मीनट तक दीप लेसकय मध्य रात्रि २९ मार्च ९ वजे रात्रि सँ शूरू रहैक। फेर द्वीतिय चरणके ३ मई सँ २० मेई धरि आ पुनः घोषणा १४ -४-२० केँ माननीय मोदीजी जयनाद कयलन्हि। रोग बढैत गेल,मर्ज बढैत गेल। तेसर बेर फेरों लाकडाउन कें बढाओल गेल , जे ४ मई सँ १७ मई २०२० ई० तक दू सप्ताह लेल आदेश जारी भेलैक। १८-५-२० सँ ३१-५-२०२० तक १४ दिनक लेल प्रभावी लाकडान रहल। जाधरि दवाई नँय तावत् धरि ढिलाय नहिँ ! सन नारा गामेगाम शहर-बजारधरि जोरसोर सँ चलल। चारीम १ ८- ५ सँ ३१ तारीख धरि दू सप्ताह लेल बढाओल गेलैक। चारीम १ सितम्बर २० कें निर्देश जारी भेलैक जाहिमे देशक विभिन्न राज्यमे आन्तरिक विशेष सुविधाक सँग जारी भेलैक। अनलाक ८ जून २० सँ चालू भेल, २१ जून केँ होयबाला छठा अन्तराष्ट्रीय योग दिवस करोना केँ बैल चढि गेल। १६ जुलाई सँ ३१ ता० तक लाकडाउन रहल। ई तिथि ऐतिहासिक महत्व के छैक जे कोरोना विषय पर शोध कयनिहार शोधकर्तागण केँ एहि उपन्यास सँ बहुत किछ ज्ञान भेटतनि।

कहल गेल छैक ' सेवा ही परमो धर्म:' से " वयं सेवा महे" भारत केर मिशन थीक - सेवा करब, परोपकारी होयब।हरेक गामक स्कूल, सार्वजनिक मकान मेँ गामक लोक जे प्रवासी शहर सँ कोरोना कालीन समयमे अपन गाम आयल तँ खाइक ,चाह जलखै, साबुन सेनेटाइजर आ लुगीं- गमछा धरि मुखिया- वार्ड सदस्य कें आपूर्ति करबाक आदेश बीडीयो सँ भेटलैक। राहत काजमे अनियमितता करय बाला सब नेहाल भेल। जिला प्रशासन अनुमंडल केँ , ओतुका अधिकारी अंचलमे अपन जिम्मा थोपलनि। एहि उपन्यास पढैत काल इहो बात सब पाठक केँ समक्ष आओत। कोरोना वारियर्स मास्कक आदैत धरि सबके लगाके छोड़लक। नन्द विलास रायकेँ सेहो अपन मैथिली कथामे विनु मास्कके प्रहरी चेकपोस्ट लग तैनात पुलिसकर्मिगणके मोटरसाइकिल सवार सँ मास्क नहिं लगेबाक कारणें दण्ड

ओसुलैत देखल नहिं गेलैक। गाम आयल आगंतुक अतिथि कैँ लोक ठहराव केनाय छोड़िए देने रहय। आवश्यक काज सँ अल्प समयमे हाट बजारक काज निपटाबैक। बाईलीके नव जान पहचान छोड़ि, चिन्हारे लोक सँ सेहो लसघैर केर आशंकामे लोक सचेत रहथि। एहनामे राज्य सरकार द्वारा सख्त घोषणा भेल रहैक - मृतकके दाह संस्कार मेँ मात्र ५० गोटे ,आ वैवाहिक कार्यक्रम मेँ दूनू पक्ष सँ २० गोटे वर-वधू सहित भाग लिअ। हमरो कचोट य जे भातीजाक आदर्श वियाहमे हीत अपेक्षित कैँ बराति सिपौल नहिं ल ' जा सकलौंह। जौं कदाचित कियो मोबाइल सँ फोटो खिचकय जिला प्रशासनमे विडियो वाइरल करैत तँ , समधीन जीके परेशानी बढि जयतैन। खायर अठबभनो ल' कैँ तँ जनेऊ उपनाइनमे पारघाट नीको समयमे लागिये जाईछ। कोरोना महामारी एक तरह सँ जीवनक हर मोड़ पर किछु न किछ समय अनुरूप सहजीवन सीखेलक।लोकमे स्फूर्ति स्वत: बढलैक। मानव जतेक भोग कोरोना समयमे भोगलक से अपन अनुभव सँ राजाराम प्रसाद जी सन अनेकों लेखक ऐ ज्वलंत मुद्दा पर सब विधामे खुब रचना कयल। परंच छपाई केर समस्या बहुत राश रहैक।एहनामे 'परिचय प्रकाश' केर लेखन काज स्वयं दीनानाथ प्रसाद " जुबराज" अपन कविता क' टीका कयलन्हि, से श्लोक प्रकाशन दरिभंगा सब तरहक धरि पापड़ बेलनाई सीखा छोड़लैक छपाई काल। दोसर कोनू रचनाकार धरि एतेक लगरपन सँ कोनो समयके एहन उदाहरण अतितमे नँय य, जेहन कोरोना समय वृहद रुपेँ धरि साहित्य सृजन भेल य। ई पोजेटीव बात भेल परंच पोजेटीव होय सँ सबके बँचय पड़ैक। इयह विनाश लीला केर बीच अदम्य साहसक परिचय देलनि महायोद्धा लोकनि। हुनक संघर्षक दस्तान थीक ई पोथी। एहि कृतिकैँ जहन -जहन पढल जाएत , रोम-रोम पुलकित होइत रहत से आश जगैत अछि। देश - विदेश, दोसर राज्य नगर सँ प्रवासी धैर्यक सँग अपन गृह पहुँच कय आर्तनाद गाबथि -:

जननी जन्म भूमिश्च स्वर्गादपि गरीयसी!

सुनैना बेटी - मैथिली सामाजिक उपन्यास

समीक्षक - लालदेव कामत

मैथिली साहित्य क' दीर्घ कथा केर आंशिक रूप थीक उपन्यास। उपन्यास विधा में वरेण्य साहित्यकार श्री जगदीश प्रसाद मंडल जी अगूआयल छथि। हिनक दर्जनों उपन्यासमे ' पंगू' कें मैथिली भाषा मूल पुरस्कार साहित्य अकादमी द्वारा भेट चुकल छन्हि। सद्यप्रकाशित "सुनैना बेटी" उपन्यास पढबाक सौभाग्य प्राप्त भेल अछि। पल्लवी प्रकाशन सँ बहराएल एहि 116 पृष्टक पोथीक किमत 250 टाका छैक। ई एकटा नव इतिहासिक सामाजिक उपन्यास थीक। ऐ तरहक अभिजात वर्गक वा कहू पैघौत परिवार क' व्यथा-कथा पर आधारित उपन्यास क' चलन मिथिलामे आबि रहल अछि। स्वयं मंडल जीक कतेको उपन्यासक कथ्य विम्व एके सुनैना बेटी - मैथिली सामाजिक उपन्यास

समीक्षक - लालदेव कामत

मैथिली साहित्य क' दीर्घ कथा केर आंशिक रूप थीक उपन्यास। उपन्यास विधा में वरेण्य साहित्यकार श्री जगदीश प्रसाद मंडल जी अगूआयल छथि। हिनक दर्जनों उपन्यासमे ' पंगू' कें मैथिली भाषा मूल पुरस्कार साहित्य अकादमी द्वारा भेट चुकल छन्हि। सद्यप्रकाशित "सुनैना बेटी" उपन्यास पढबाक सौभाग्य प्राप्त भेल अछि। पल्लवी प्रकाशन सँ बहराएल एहि 116 पृष्टक पोथीक किमत 250 टाका छैक। ई एकटा नव इतिहासिक सामाजिक उपन्यास थीक। ऐ तरहक अभिजात वर्गक वा कहू पैघौत परिवार क' व्यथा-कथा पर आधारित उपन्यास क' चलन मिथिलामे आबि रहल अछि। स्वयं मंडल जीक कतेको उपन्यासक कथ्य विम्व एके तरहक देखमे आयल अछि। ऐ उपन्यासमे नव बात देखयमे जे आएल अछि से मानसिक भिन्नता कें मनोवैज्ञानिक रुपें देखाओल गेल अछि। कथानक आगू बढैत एक परिवारक' तीन पिढिधरि क' किस्सामे समाएल अछि। किर्तपुर गाममे एक रुपकांत बाबू आ हुनक पत्नी सरिता रहैत छथीन। रुपकांत जीक अपन शिक्षा- दीक्षा मातृकेएमे भेल रहनि। ओ लोअर प्राइमरी स्कूलक मास्टर रहथि। अपने किसानक बेटा मास्सेव गामसँ पाँवपैदले नीतरोज 5 किमी0 चलिकय आध घंटा पहिले जाथि आ पढौनीके आध घंटा वाद ओतय सँ प्रस्थान करथि। पेरामे हित अपेक्षित सँ सेहो तमाकुले लाथे सेहो कुशलक्षेममे समय ओझरानि। एहन स्फूर्ति जकाँ दैनिक दिनचर्या नइमआहऐत आभा रहल छथि। हुनका पुतरत्न रुपें रविशंकर जन्म लैत छन्हि। जे पढि-लिखकय उच्चतम शिक्षा पटना बीएन कॉलेज सँ सेकेण्ड क्लास एम ए करय छैक। एक नव कालेजमे प्रोफेसर क' नौकड़ी कमे वेतन पर करैत छैक। से प्रो०जीक वियाह विधिवत डाक्टरनी सुभद्रा सँ होइत छैन। डाक्टरनी कें

सरकारी नौकरी आ अपन प्राइवेट क्लीनिक सँ खुब चिकन आमदनी होइत छैक। डां०सुभद्रा कैं पुत्र भेलनि जकर नाम पड़ल भवनाथ। भवनाथ जीक पढाय - लिखाय आरम्भे सँ नीक स्कूलमे बाहर होअय लगलैक।ओतय अधलाह आदैत शराव पीबाक चसक लगलैक। माय बाबू डाक्टर बनेबाक अभिक्रम मेँ लागल। ताहि बीच शहरके देखा-देखी अपनों घर परिवारमे वर्थडे आ मैरेज डे नहिँ मनौने रहैक से एहिबेर विवाह केर पन्द्रहम् वर्षगांठ मनेबाक ओरियानमे जुटलीह। कारणों रहय , जिनकर भोज खायब तँ खुऐबाक सेहो चांकि राखय पड़ैत छैक। आब डाक्टर सुभद्रा चाहैत छथीन, पर्दाक भीतर सँ संकेत रूपेँ अपन असल विचार राखथि जै पति बैसल - बैसल डेरामे समय बितबैत छथि से ताहि समयक उपयोग विद्यार्थी गणकेँ ट्यूशन पढाकय वेतनों सँ बेशी कैंचा कमाबथि। मुदा प्रो० साहेब तुष्टिकरण के लेल ओ एक शिक्षक पुत्र आ अपना कैं एक अलग बेढप छाप छोड़यबाला साबित करयमे अपन संकल्प कैं तिरोहित नहिं करय चाहैथ । प्रतिष्ठित लोक प्राईवेट ट्यूशन पढौनाई कैं आखिर अपराध बुझैत छथि। ओना पत्नी सँ सम्मानों भेटनि , सुभद्रा हुनकामे अर्धनारीश्वर केर परतिरुप आंकने रहथिन। मुदा गाड़ी क' चालक आ नौकर सह कम्पाउन्डर केर पगार स्वंय दैत रहलीह। एक गरीब घरक सुनयना सँ भवनाथक वियाह घटकक विचारे समय सँ सम्पन्न भेल। सुनैनासन पुतोह पाबि सासु-श्वसुर नेहाल भेलैक। पति के थथमारैत घर - परिवार मे सुनयनाक लक्षण कर्तव्य बढ सुन्नर रहल। पाठक उपन्यास पढैत-पढैत जहन आठम पराव पर पहुँचता तहन सुनैना बेटी विषयमे जानबाक प्रसंग भेटत। एक दिन प्रोफेसर साहब मायके निछोह उदारता सँ बहकल बेटाक प्रति चिंतित होईत जे सोचलाह; शराब अफरजए पीबके बौआ भवनाथ बेसुध बाट- नालीमे खसल पड़ल देखाएत तँ लोकलाज सँ गड़ि जाएब,मुँह ककरो देखा पाएब! इयह सोचैत स्वास्थ्य पर प्रतिकूल असर पड़ैत छैन।पूतौह कैं सुनयना बेटी सम्बोधित करैत अपन व्यग्र मनक आकुलता धरि कहने रहथि। एक दिन बेटाक किरदानी पर सोचैत आ अलमीरा वो घरक तहस- नहस स्थिति पर नजर थिर नहिँ कय पौलीह डाक्टर साहिबा। आ मूर्छित परि गेलीह तँ पूतौह सम्हारलखिन। उपन्यासमे 55*60 साल पछुलका समाजक परिवेश कें एक आकलन मूल्यांकन रूपेँ कयल गेल अछि। एहिमे ग्रामीण क्षेत्रक रितिरेवाज क' चर्चा भेल छैक। कोशिकन्हाक टाँट माटिक खेतमे परल दड़ारि जाहिमे चोर आ हाथीके चलनाई बहुत कष्टप्रद वार्ता - दृश्य उपस्थित भेल अछि। खेत पटौनीक साधन देहातमे करीण आ तकर सब पाटपुर्जा के चर्च भेलैक अछि। ऐ शव्द सब सँ नव पिढिक लोक अपरिचित होइत जा रहलैक हन्। कारण आब सिँचाईक साधन बोरिंग पम्प सेट ,स्टेट बोरिंग आ चैनीज दमकल आ विद्युत मोटर सँ गाममे गाम उपलब्ध छैक।

ऐ उपन्यासमे सुखान्त अध्याय सँ आरंभ कथा दुखान्त अध्यायमे जाकय समाप्त होईछ। देशमे अथवा मिथिला मे 50 साल सँ कम वयक्रम के 75% आवादी छैक। तकरा ई उपन्यास पढिकय किछ नैका संदेश नहिँ उत्प्रेरीत करैछ। शेष बाँचल 25% जे अधवयसू आ वृधजन छथि , हुनक निजी जीवन

रुग्णावस्था मेँ छैन। आ ओहिमे साक्षरता दर लगधक 50% रहितो महिला तँ महिला जे पुरूष वर्ग सेहो पोथी, पत्र -पत्रिका सँ उबाऊपन मेँ रहैछ। अपवादमे सेवानिवृत्त लोक स्तरीय आओर विशेष कय हिन्दी -अंग्रेजी उपन्यास पढैमे रमल रहय छैक। तेँ सुनैना बेटी सन मैथिली उपन्यासक' बढ़ थोर पढ़ाकू पाठक पढैत गुनैत छथि। ओना पुस्तकालय केर शोभा बढाबय लेल एहि प्रभृतिक उपन्यासकार सभक पोथी जाक लागल अवश्य रहैछ। तेँ जगदीश बाबू क' प्रकाशित पोथी सभ "सगर राति दीप जरय" कथा गोष्ठीक अवसर पर हर तीन मासे मास आगन्तुक बीच बेन बिलहल जाईछ। एहि सँ पोथीक उपादेयता बढैछ , दलान दुरापर राखल पोथी देख परपाहुन मोबाइल राखि हुलैसके नवपोथी उत्सुकता सँ देखैत अछि देखमे आयल अछि। ऐ उपन्यासमे नव बात देखयमे जे आएल अछि से मानसिक भिन्नता केँ मनोवैज्ञानिक रुपेँ देखाओल गेल अछि। कथानक आगू बढैत एक परिवारक' तीन पिढिधरि क' किस्सामे समाएल अछि। किर्तपुर गाममे एक रुपकांत बाबू आ हुनक पत्नी सरिता रहैत छथीन। रुपकांत जीक अपन शिक्षा- दीक्षा मातृकेएमे भेल रहनि। ओ लोअर प्राइमरी स्कूलक मास्टर रहथि। अपने किसानक बेटा मास्सेव गामसँ पाँवपैदले नीतरोज 5 किमी0 चलिकय आध घंटा पहिले जाथि आ पढौनीके आध घंटा वाद ओतय सँ प्रस्थान करथि। पेरामे हित अपेक्षित सँ सेहो तमाकुले लाथे सेहो कुशलक्षेममे समय ओझरानि। एहन स्फूर्ति जकाँ दैनिक दिनचर्या नइमआहऐत आभा रहल छथि। हुनका पुतरत्न रुपेँ रविशंकर जन्म लैत छन्हि। जे पढि-लिखकय उच्चतम शिक्षा पटना बीएन कॉलेज सँ सेकेण्ड क्लास एम ए करय छैक। एक नव कालेजमे प्रोफेसर क' नौकड़ी कमे वेतन पर करैत छैक। से प्रो०जीक वियाह विधिवत डाक्टरनी सुभद्रा सँ होइत छैन। डाक्टरनी केँ सरकारी नौकरी आ अपन प्राइवेट क्लीनिक सँ खुब चिकन आमदनी होइत छैक। डां०सुभद्रा केँ पुत्र भेलनि जकर नाम पड़ल भवनाथ। भवनाथ जीक पढाय - लिखाय आरम्भे सँ नीक स्कूलमे बाहर होअय लगलैक।ओतय अधलाह आदैत शराव पीबाक चसक लगलैक। माय बाबू डाक्टर बनेबाक अभिक्रम मेँ लागल। ताहि बीच शहरके देखा-देखी अपनों घर परिवारमे वर्थडे आ मैरेज डे नहिँ मनौने रहैक से एहिबेर विवाह केर पन्द्रहम् वर्षगांठ मनेबाक ओरियानमे जुटलीह। कारणों रहय , जिनकर भोज खायब तँ खुऐबाक सेहो चांकि राखय पड़ैत छैक। आब डाक्टर सुभद्रा चाहैत छथीन, पर्दाक भीतर सँ संकेत रूपेँ अपन असल विचार राखथि जै पति बैसल - बैसल डेरामे समय बितबैत छथि से ताहि समयक उपयोग विद्यार्थी गणकेँ ट्यूशन पढाकय वेतनों सँ बेशी कैंचा कमाबथि। मुदा प्रो० साहेब तुष्टिकरण के लेल ओ एक शिक्षक पुत्र आ अपना केँ एक अलग बेढप छाप छोड़यबाला साबित करयमे अपन संकल्प केँ तिरोहित नहिं करय चाहैथ । प्रतिष्ठित लोक प्राईवेट ट्यूशन पढौनाई केँ आखिर अपराध बुझैत छथि। ओना पत्नी सँ सम्मानों भेटनि , सुभद्रा हुनकामे अर्धनारीश्वर केर परतिरुप आंकने रहथिन। मुदा गाड़ी क' चालक आ नौकर सह कम्पाउन्डर केर पगार स्वंय दैत रहलीह। एक गरीब घरक सुनयना सँ भवनाथक वियाह घटकक विचारे समय सँ सम्पन्न भेल।

सुनैनासन पुतोह पाबि सासु-श्वसुर नेहाल भेलैक। पति के थथमारैत घर - परिवार मे सुनयनाक लक्षण कर्तव्य बढ सुन्नर रहल। पाठक उपन्यास पढैत-पढैत जहन आठम पराव पर पहुँचता तहन सुनैना बेटी विषयमे जानबाक प्रसंग भेटत। एक दिन प्रोफेसर साहब मायके निछोह उदारता सँ बहकल बेटाक प्रति चिंतित होईत जे सोचलाह; शराब अफरजए पीबके बौआ भवनाथ बेसुध बाट- नालीमे खसल पड़ल देखाएत तँ लोकलाज सँ गड़ि जाएब,मुँह ककरो देखा पाएब! इयह सोचैत स्वास्थ्य पर प्रतिकूल असर पड़ैत छैन।पूतौह कें सुनयना बेटी सम्बोधित करैत अपन व्यग्र मनक आकुलता धरि कहने रहथि। एक दिन बेटाक किरदानी पर सोचैत आ अलमीरा वो घरक तहस- नहस स्थिति पर नजर थिर नहिँ कय पौलीह डाक्टर साहिबा। आ मूर्छित परि गेलीह तँ पूतौह सम्हारलखिन। उपन्यासमे 55*60 साल पछुलका समाजक परिवेश कें एक आकलन मूल्यांकन रूपेँ कयल गेल अछि। एहिमे ग्रामीण क्षेत्रक रितिरेवाज क' चर्चा भेल छैक। कोशिकन्हाक टाँट माटिक खेतमे परल दड़ारि जाहिमे चोर आ हाथीके चलनाई बहुत कष्टप्रद वार्ता - दृश्य उपस्थित भेल अछि। खेत पटौनीक साधन देहातमे करीण आ तकर सब पाटपुर्जा के चर्च भेलैक अछि। ऐ शव्द सब सँ नव पिढिक लोक अपरिचित होइत जा रहलैक हन्। कारण आब सिँचाईक साधन बोरिंग पम्प सेट ,स्टेट बोरिंग आ चैनीज दमकल आ विद्युत मोटर सँ गाममे गाम उपलब्ध छैक।

ऐ उपन्यासमे सुखान्त अध्याय सँ आरंभ कथा दुखान्त अध्यायमे जाकय समाप्त होईछ। देशमे अथवा मिथिला मे 50 साल सँ कम वयक्रम के 75% आवादी छैक। तकरा ई उपन्यास पढिकय किछ नैका संदेश नहिँ उत्प्रेरीत करैछ। शेष बाँचल 25% जे अधवयसू आ वृधजन छथि , हुनक निजी जीवन रुग्णावस्था मेँ छैन। आ ओहिमे साक्षरता दर लगधक 50% रहितो महिला तँ महिला जे पुरूष वर्ग सेहो पोथी, पत्र -पत्रिका सँ उबाऊपन मेँ रहैछ। अपवादमे सेवानिवृत्त लोक स्तरीय आओर विशेष कय हिन्दी -अंग्रेजी उपन्यास पढैमे रमल रहय छैक। तेँ सुनैना बेटी सन मैथिली उपन्यासक' बढ़ थोर पढ़ाकू पाठक पढैत गुनैत छथि। ओना पुस्तकालय केर शोभा बढाबय लेल एहि प्रभृतिक उपन्यासकार सभक पोथी जाक लागल अवश्य रहैछ। तेँ जगदीश बाबू क' प्रकाशित पोथी सभ "सगर राति दीप जरय" कथा गोष्ठीक अवसर पर हर तीन मासे मास आगन्तुक बीच बेन बिलहल जाईछ। एहि सँ पोथीक उपादेयता बढैछ , दलान दुरापर राखल पोथी देख परपाहुन मोबाइल राखि हुलैसके नवपोथी उत्सुकता सँ देखैत अछि।

कोनो टुटल अछि तन्तु

मैथिली भाषा केँ महत्वपूर्ण कवि श्री नारायण जी क' सद्य: प्रकाशित मैथिली साहित्य कविता क'पोथी "कोनो टुटल अछि तन्तु"केर किमत १६५टाका अछि।१२८पृष्टक एहि पोथीक प्रकाशक दीपनारायण विद्यार्थी,मधुबनी अनुप्रास प्रकाशन वर्ष २०२१मेँ बहार कयलनि अछि। दक्षिण भागक टोल घोघरडीहा निवासी नारायण जीक ई पांचम काव्य संग्रह थीक।

बालपनमे हम अपन माईक मुहेँ सुनल पाँति-:

पूँजीपति धनवान, मजदूर किसान भाइ,

छिट्टा -कोदारि ले,चल-चल,चल...।

कोशी बांध तटबंध बनैत कारक ई समवेत प्रयाण गीत बनि चुकल रहैक,से कोसी पीड़ितक श्रमदानक महत्ता आ भारत समाज सेवक संस्थाक स्व०ललित बाबूक भूमिका सहजे स्मरण भ'उठैछ।कविताक अतिरिक्त नारायण जीक कलम आनो विधा पर चलल छन्हि। अनुवाद आ कथा तथा बालकथाक अतिरिक्त स्वयं नारायण जी समीक्षक छथि। ई प्रसिध्द साहित्यकार जीबकान्त जीके मैनटर मानल जाइ छथि।पाठकके हिनक काव्यमे वर्ग संघर्ष,आम जनक उत्कर्ष आ सामाजिक विमर्श लेल खुराक भेटत, जेनाकि एहि बातक सम्पुष्टी उदय चन्द्र झा'विनोद'जी सेहो कभर पर लिख करने छथि।हिनक सिध्दहस्त लेखन एहन होईछ जे सबटा पोथी पुरस्कृत भ'जाइछ।तै सँ कोनू नव पोथीक रचनाकार केँ जरनी कियाक?

उन्नैसटा क्षरण कवितामे काठक घोड़ा बढ़ चर्चित भेलनि।उनतीस टा क्षोभ कवितामे पृष्ट ४७ पर छपल शिर्षक "दराड़ि"मेँ एहि तरहक पाँति पायब-:

.....भरिसक,

कोनो टुटल अछि तन्तु

विश्वासक

देवाले कतहु पड़ल अछि दराड़ि।

२०१४मेँ"धरती पर देखू"हिनक मैथिली साहित्य कविता संग्रह सेहो निकैल चुकल छैन्हि, जे एकटा काव्य केर पाँति केँ पोथीक नाम देने छथि।सयह निरुपण करैत एहू पोथीक शुभ संज्ञा कविताक शिर्षक पर नहिँ,अपितु पाँतिक नाम सँ किताब लिख मातृभाषा मैथिलीक अक्षय भंडार केँ भरयमे लागल होथि। ई नव प्रयोग करैत छथिजे अध्येता आ शोधार्थी गणके अन्वेषण करैक लेल एकटा विषय उपस्थापित कयलनि अछि।प्रस्तुत पोथीमे अठारह टा उद्गम स्तर केँ कविताक संग-संग पाँचटा कविता'प्रवाह' छैक जलविशेष विषयक।यथा-:पाँची,तिलयुगा,बागमति,स्त्रिगण -जे शिवपूजन लेल जाइत छथि आओर कोसी-कथा।हिनक कावयधाराक पाँति देखल जाउ-:

हम कोसी छी

प्रार्थित नहिं

एकटा शापित नदी छी,

प्रतिशोधमे जिबैत

आक्रोशमे बहैत।

एहि पोथिक आवरण राजेन्द्र नेगी आ वितरक फरीदाबाद-पोथी अहाँ दुआरि धरि थिकाह।हम ऐ पोथीमे ग्रामीण जीवन पोलहुँ,एकरा सजीवताक संग रचनाकार जनशुलभ कयलैथ।जखन-तखन दरिभंगाक टीमक समक्ष कवि नारायण जी सँ भेंटवार्ता पर हमरो प्रश्नक गम्भीर उत्तर दैत ई पोथी पढबाक लेल देने रहथि। सम्पूर्ण पढलाक वादे पाठकीय प्रतिक्रिया व्यक्त करैत छी।अन्यथा पोथीक संग न्याय नहिं होयतैक।तेँ क्रमश:केँवाद हम शेषांश धरि लिखलौह ,जे फेर शोशल साइट पर अपने सब पढब।कवि महोदय श्रधान्वित भ'स्व०अपन पिताजी केँ ई पोथी अर्पित समर्पण कयलनि अछि।आश करैत छी आब दोसर पोथी काव्य रसास्वादन(पाठक) लेल यथाशिघ्र निकालताह। अशेष बधायके पात्र छथि नारायण जी।

ड्राईंग रूम में लाफिंग बुद्धा कतेक लाफिंग कतेक थिंकिन?

मैथिलीक दर्जनमरि प्रख्यात कवि अपन एक-एक गढ़ा काव्य रचना लके ठाढ़ छथि। अनुक्रम 7 में लेखक करि सतीश चन्द्र झा केर पहिल कविताक शिर्षक ड्राइंग रूम में लाफिंग बुद्धा के एहेन सीमाग्य भेटलैक जे 48 टा कविता में अपन पैधाउत से मैथिलीक नव कवितावली के स्वयं संज्ञा प्राप्त कयलक अछि। पछिला 2014 वर्ष में साहित्य लोक-बोकारो (झारखंड) से प्रकाशित एडि 112 पृष्ठक मैथिली पोची में तुलानन्द मिश्रा बहुत किए कहि चुकत छथि, संगहि कथा-निबंध महाकाव्य आा गीत संग्रह के 6 टा पोथीक एहि प्रकाशन से विभिन्न रचनाकारक निकलन छैक। एतवे नहि सॉरी अकल नाटक के सेहो प्रकाशन भेलैक जे प्रतिक्रिया के आसाने बाट जोहेत अछि।

आई मातृभाषा वैधिलीक उन्नति लेन प्रयत्नशील अगिता पौद्धीक सेनानीलेल समर्पित केलनि अछि ई पोथी। वरीयता कम में प्रथमतः साहित्यकार अर्धनारीश्वर जीक रचनाके स्थान देल गेल छैक, तकराबाद कविसम छथि। पोथीक कमर आकर्षित करय योग्य छैक, ते समान्यतः पाठक सबसे पहिले पृष्ठ सं० 63 उनटावेत कविताक रहस्य बुझय जेल अपना के नहि रोकि पवताह।

ड्राइंगरूम में लाफिंग बुद्धाक गरज एहिमें छानबीन जॉम पड़ताल आ परीक्षण करबाक भाव देल जाईछ। एहिसें पाठक वर्ग के निर्णय लेवामें आ महत्वपूर्ण बात बुझवा में आओत। समालोचना के समीक्षाक अंग कहल गेल छैक तें सूक्ष्म विश्लेषण आ तर्कपूर्ण विवेचन लोकमंगल भावना से प्रस्तुत कए रहल छी। आ से नैतिकवादी मुल्यक कारणे आर्दशवादक मजमुत बुनियाद होयत। एहिमें सब कवि के मात्र एक-एकटा रचना के प्रतिनिधि कविताक दर्जा भेटिजाई, ताही दृष्टिकोण से द्वेष आ पक्षपातक ध्येय से फराक सब रचनाकार के जुआयल बुजैत छी। किछु गोटाक रचना विभिन्न पत्र-पत्रिका में पहिनहुँ रॉ पढ़ने छी। अन्तर स्नातक स्तर घरि के व्याख्याता पद से सेवानिवृत्त शिक्षक गिरिजानन्द झा 'अर्धनारीश्वर जे दु विषयमें (हिन्दी-अंग्रजी) स्नातकोत्तर रहितहुँ मातृभाषा मैथली लेल अपन कलम सदा चलबैत रहलाह अछि, हिनक पहिलक्रम के कविता कतिका कुमर मेलाक दर्शन कराने छैक। देवधर्म के साक्षी रखैत कतेको गाम में सय साल से एहन आयोजन होईछ आ कुश्ती दंगल सेहो आयोजित रहैत अछि, जाहिमें

खलीफा केर बुता आ दाऊ प्रदर्शनक अवसर भेटैत छैक, परंच से संस्कृतिक जगह पर बीजे० आरकेस्ट्रा आ कैसेट पर पॉपगीत चकमक विजुलीक इंजोत आ कान फारय जोकर ध्वनि विस्तारक यन्त्रक संग एक हैज नर्तकीक नृत्य से कोलाहल लगेछ। अगिला जगह छेकिकए बिराजमान दर्शको बीच-बीच में नृत्य आ सीटी बजबैत पछिला दर्शक के देखबानें बाधा उपस्थित करैत छैक। हो-हल्लाक बीच साटा पर आयल कलाकार टीमकें हरेक नाच पर टाका इनाम देबाक नव धनाढ्य के एक खास प्रतियोगिता बुझाईत छैक। जे शहर से बन्दा उगाही कए आ ठिकेदारी से मेल आमदनी के बकशिश में लुटाबैत छैक। गाममें जापरि लोक बसल रहताह ता ई कतिकाकुमर पूजा होईत रहत। परंच आधुनिक रूप लैत सांस्कृतिक कार्यक्रम में अपसंस्कृतिक समावेश नहिं होअय ताहि लेल कवि चिन्तित देखेलाड, तें विसर्जन में जे शाही खर्च आ दारू पीवकए जूलूस निकलैत छैक ताही लेल शासन-प्रशासन सेहो फिरीशान रहैत अछि 'मसियाले रहब हे कतिकाकुमर' उत्प्रेरित करय योग्य कविताक श्रेणीमें स्थापित मेल अछि।

दोखी कविता में प्रियतम से भेंट आ वार्ता उपरान्त पुराना जमानाक नुक्का चोरिस दलान परसँ घर जायब आयन के नब पिढ़ी नहि पसिन्न करत। ओकरा में खुलापन दिनोदिन आरों बेसीये मेल जेतैक। कारण स्पष्ट अछि, एहमें संचारक साधन मोबाईल-पेजर टी०वी-कमप्यूटर आ रंगीन सचित्र व्यस्क लेल पत्रिका आ सीनेमाक अडल्ट फिल्मक' योगदान छैक। आ से बियौहति नायिका झटदय अपनबैत छैक ओ इहो कहैत छैक जे पिढीदर पीढ़ी से जे अनुवांशिक गुण आयल छैक, डी एन ए० रिर्पोट बताबैत अछि जे पहिलुका लोक अपनेलक तँ अखनुका नवलोक कोना परहेज नहत। बादल केर रंग आसमानी पिया हमर चढ़त्त जवानी यौ. गीत से मधुश्रावनीक मधुमय वातावरण बनैत देखल गेल अछि। आब में फुल लोदनिहारि पल-पलक वार्ता पति से फोन पर करैत छैक। आबय वाला दिन में बाप पित्ती जेठमा के समय दम्पति आपसमें फदियाइत से कोनोटा अचरज नहिं। डिनीया मिजेबाक जमाना लदि गेल। सबटा समयक तीब्रता दोष थिकैक। मनुखक खोज कविता नव आयाम दिश डेग बढ़ावैत जे जेहेन से तेहन समुच्य में रहेछ। सेट ब्योरी में क्रिकेट खिलाड़ी के बैइट-बॉल-बिकेट आ कैप-पाइढ संग देखल जाइछ ते कतेको उदाहरण से क्षेत्रीय दल सहित उभयनिष्ट सेट लेल ताकीद कयल गेल अछि, मनुसंतानक बीच लोककल्याण काज लेल पाँचो गोटेक मिलान विशुद्ध मुन्नुख्क सेट पतनुकान लेने अछि। कवि विज्ञान कविता भस्मासुरी सिधान्त में सेहो बहुत किछु गप्प केयने छथि। बस्तुतः भस्मासुर मिथक नहि सिद्धान्त थीक अपने रोपल गाछी होईत छैक भूताहि। पोसा आतंकवादी जहन बात माननाई अनठबैत छैक आ

विपरीत काज करैत छैक, विनाशकारी पसाही के मिजहेबाक अत्यन्त चिन्ताक पड़ी रहेछ, जेनाकि अविवेकी भस्मासुर के वरदान देला पर त्रिनेत्र शिवके स्वयं पराई पड़लैक आ भोगय पड़लैक।

संस्कृत में आनर्स कवि मुटकुन झा शिक्षक पेशा में मिथिला से बाहर रहैत छथि, ओत्तय ओ अहर्निस मातृभाषाक सेवा में जुटल रहैत छथि। हिनक रचना समुचित धर्म शिर्षक में देखावटी आ पाखंड पर प्रहार कहैत निरन्तर दिव्य निजकर्म करवाक विचार भाव दरसेलनि अछि। उपदेश तँ दोसरे लेल होईछ। सकुचल आंगन में कवि रहेत छथि जाहि आंगन में बुढ़ नहि, चौरामें तुलसीक गाछ नहिं से छूछून लगैत छैक। संस्कार आ संस्कृति कर दर्शन सेहो केरलनि अछि।

हृदय आंगन में जे अति कुंठित भेल छैक ताहि के इतिहास बुझि नब पीढ़ी मानव परायण के महत्व बुझथि, ताहि लेल अपील कयल गेल अछि। चूप कियैछी राजूयौ कविता में जाति-पातिक सीमा छोड़ि मिथिला मुक्तिक लेल एकता पर वल देलनि संगहि मिथिला राज्य हेतु मुखर भए बाजब-चुप्पी तोड़न वाजीव थीक। गामक मनोव्यथा में कवि गौओं निशेबाज से खास के युवा वर्गक नशापान कारणें सम्य लोक गामसँ पलायन केलाह आ मजबूरी में अशुद्ध वायु श्वांस ल' रहलाह अछि। गाम्य महिमा जानि हकार दै सन लागत। दयाकान्त झाक दीर्घ कविता महाकुमंक दर्शन बस्तुतः कराबैत छैक। लयबद्ध आ गेयात्मक छैक। नीति बचन में मूलबात जे उभरि के आयल अछि से छी बजनिहार प्रथमः अन्तःकरण में स्वयं देखथि। विलोम पथ में कवि मानव के संकुचित भेदभाव दिश सचेत करैत छैक।

शोसयोलॉजी से एम०ए० घरि शिक्षित राजनीतिक कार्यकर्ता राजीव कुमार कंठ अपन कवित्वक प्रसार विभिन्न मंच से सेहो केने छथि। अल्लाह भगवान में खपड़ा छार्दैवाला कारीगर छदू मियाँक संदर्भ बहुत किछु जनेलाह अछि। आब हिन्दू मोसलीम कट्टरता जाहि कारणे बदि रहल अछि जे सामाजिक तानावाना लेल चिन्ताक विषय अछि। गर्मागरम पौपकौर्न अपना परिश्रमक पाई में से किनबाक भौजीक प्रति ई अनुराग मिथिले में मात्र देखाइत छैक। मिथिलाराज में कवि अपन संवेदना प्रकट केलनि अछि। मठाधीश लोकनि साहित्य एकेडमी सभा आदि में अपनैती पर जे जोर लगबैत अछि तै पर करारा प्रहार गेल अछि। कवि बुद्धिनाथ झा युग-युम धावित यात्री में गरीबी अपढ़ पिता आ मैटुअर के हीनभाव से उपर उठि देखेबाक खगौट बतेलनि अछि युग कवि यात्रीजीक प्रति ई अनुपम श्रद्धांजलि अछि। किछु नीति बचन

पद गेयात्मक लागल। पूतौहक संग केहेन परिहास, तें डींग हाकयसँ परहेज करबापर जोर देलनि अछि। बदलल समीकरण में पेट फुल्लाक घोषि निश्चये कनि सटकल।

विनय कुमारं मिश्र गीतकार छथि। ओ अपन सरस्वती वन्दना सँ महिमा मंडित तथ्य परसलनि अछि। तीनू गीतक माव

मिथिलाक आचार व्यवहार से परिपूर्ण अछि।

कवि सतीश चन्द्र झाक दोसर रचना अन्हरिया में मगजोगनीक चकमक आ पुतिंगाक उड़ान सँ मन प्रफुल्लित होयब सन्न छैक। शांत चुप्पी के तोड़य लेल हुनका ड्राइंग रूम में लाफिंग बुद्धा आ डोलैत सर्कस करैत गुड़िया से प्रेरणा भए कुराइत रहैत छन्हि, प्रेरणादायी एहि कविता से सम्बल भेटैत छैक। अमन कुमार झा बुधियारीक एहसास..... में बहुत किछ एहसास करौलनि अछि। पत्नीक मुश्कि पर आशंका मेल सन्ता मध्यान्तर में आबि देखू तँ आरो सोलह श्रृंगार सन कविता बनैत रहत। हाथीक आत्मा में कवि इहो कहलनि जे मनुख जाति पाति में बाँटि लहासो जरेबाकाल लीला काकासन लीला ठार करैत छैक। डा0 संतोष कुमार झा मायक चेतौनी के नीकजका रखलनि अछि। पुरान समय से ल' के वर्तमान घरि गर्ल फेण्डक संग सतीत्व पर प्रश्नचिन्ह लगैत छैक। आनो कविता रोचक अछि। विजय शंकर मल्लिक सुधापत्ति के जागिजाऊ हृदयग्राही छैक। टटका सिंगरहार में तुकबंदी धारावाहिकता रस से भरल अछि। सुनील मोहन ठाकुर फगुआक अथाह प्रेम पसारलनि पहुँ से समाद में उलहन दैत मातृभाषा जुनि विसरू नायिकाक मनोभाव दृष्टिगोचर भेल। कुमार मनीष अरविन्द निलहामलिकवाक बहन्ने पंचारण कर गाथा मोन पाड़ने छथि, पाठक के स्वयं सब उपरा उपरि कविता पढ़क अवसर भेटत । ई एकटा नीक संग्रह बनि पड़ल अछि। पोथी मूल्य एक सय टाका छैक।

मैथिली कविता भीमभाय सँ सुनल अछि।

जखन तखन-लक्ष्मीसागर, दरिभंगा (मिथिला)सँ भीमनाथ झा कृत वीणा "कविता संग्रह "१९७१ केर द्वितीय संस्करण (२००६) हाथमे अछि।एहि मैथिली साहित्यक ७६ पृष्ठक पोथीक मूल्य ४० टाका छैक,जे प्रकाशक टावर स्थित प्रिंटवेल सँ मुद्रण करौलनि अछि।पोथिक शुभ संज्ञा अपन बाबी स्मृतिशेष वीणा जीक नामे राखि समर्पण काव्यधारामे कयने छथि।लेखकीय जगतमे प्राय: सभतुरक सबकेओ स्वनामधन्य श्री भीमनाथ झा जी कैँ आह्लाद सँ भीमभाय कहैत छन्हि।से हमहूँ वयोवृद्ध श्री झाजीक कतेको मँच पर सम्बोधन आ वक्तव्य क'अतिरिक्त मातृभाषा मैँ स्वरचित कविता धरि सुनने छी। ओना तँ हिनक पहिल कविता संग्रह १९६८मैँ त्रिधारा ,१९७२मैँ धुरी ,१९७७मैँ की फुरैए की ने,१९९७मैँ नाम तँ थिक वैह आ १९९९मैँ बहरायल छन्हि भावांजलि।आनो विधामे एकशोरे सँ बेशिये पोथी प्रकाशित भेल छन्हि।परंच से हमरा पढल नँय य।हालहिमे हम वीणा कैँ मनोयोग पूर्वक पढलौंह अछि। पाठकके ई पोथी रुचिगर लागतनि,से हम गच्छै छी।

सद्यप्रकाशित" वीणा" पहिल झंकारमे कुल १२,दोसर झंकार मैँ सेहो एक दर्जन आओर तेसर झंकारमे मात्र तीन पाठ लागल भेटत।जुड़शीतल ६२पृष्ट पढैत काल ग्राम्य जीवन मैँ विशेष शिकार खेलब आ थाल-कादो आजुक परिवेशमे ठिके स्मृति शेष बुझाइछ।ई बंबई आम शिर्षक कवितामे ओ बाबा क' रोपल आ घैल सँ पटाओल गाछक फरकेर गुणके सर्वाधिक चर्चा कयलनि। जौं शालधरि अपनो दूनू उखराहा पानि उघि-उघि पटबैत जौं मरिखैपि जेताह तँ कोनू हानि नहिँ,कारण अगिला पिढिक लेल कलम लगेबाक जे प्रशन्नता होई छन्हि,से अभिव्यक्ति धरि करने छथि।

डोमनि जे आमक आंठी ल'जाइय,ताहिके सुअरके आगू ओगारैत छैक।किछु नीक आंठी अपनो खाय ले इनिराआवासक छत पर सुखबैत य।पकुआ कोइली तँ अल्सर- कैसरक पहिल अवस्थाक उपचारोमे सुजोग देखल जाइछ।ललीचगर पीपही जे जनमलैक से कोनू उकठिया लोक साफ कयल गेल जगहमे जुमाकय फेंकने होयत।वा भुखंडमे तर दवि गेल हेतैक जे पेंपी छोड़लकै।जन्म तँ प्रजन्नक प्राकृतिक नियम थीक।पाँति द्रष्टव अछि-:

एहि बेर पेपच पड़ि गेल रहै आम।

डिक्क लागि गेल रहै आँठी बाड़ीमे

रंग- विरंगक,

सुपरिया सँ सजमनियाँ धरिक।

आब की होइतै ओ आँठी?

बाड़ीकेँ भरने छलै अनेरे,

आबिकय ल' गेल रहै गामेक डोमनियाँ,

एक्को टा नै छुटलै भरिसक ,

निहारि-निहारिकय समेट लेलकै।

ओकर तँ ईहो आहार थिकै ने!.....

.एहि कवितामे डोम परिवारके मेहतनामा नहिँ भेटैत छैक,से एक तरहक शोषण दिश कवि महोदय परोक्षरुपेँ संकेत कयलन्हि अछि।

शहर आ सब गामक हिन्नू निवासी सत नारायण भगवान केर पूजा परोहीत राखि उपास कय आयोजन करैत छथि।प्रस्तुत पाँतिमे सेहो व्यंग करैत कवि महोदय अपन रचनाक माध्यम सँ समाज सुधारक बाट सुगम करय लेल व्योंत धरेलनि अछि,यथा-:

आइ भ' रहल अछि

सत्यनारायण क' पूजा फल्लाँ बाबूक ओहि ठाम,

काल्हिए सात लाखक सरकारी कंट्रैक्ट भेटलनि अछि

ताही उपलक्षमे।

हकार भेल छनि गोट छsबेक ओभरसीयरके ,

इलाकाक बीडीओ० ,एस डी ओ केँ

एसिस्टेन्ट-एग्जिक्यूटिव - सुपरिटेंडिंग

आ चीफ इंजीनियर केँ,

डिपार्टमेंटल हायर अफसर लोकनिकेँ,आदि-आदि..,,.

मंत्रमे सेंट स्नानीयम,स्वर्ण माल्यानि सपत्निक मंत्रीप्रवराय नमः:!इदं व्हिस्की पेयम् आ ओम् नानाविध अमलेट-कटलेटादि सँ आगूक आरो शव्द आ संस्कृतक वाक्य सुनि-सुनि तँ चनौरागंजक कार्यक्रम मेँ हँसी सँ पेटमे बगहा लागल रहय।पाठक केँ समुचा कविता पढैत काल पंडित जी स्वयं नेताजी आ यजमान ठीकेदार जीक प्रसंग व्यवस्था पर करगर चोट करैत कविजीक लेखनी निठाहे देखाएत।प्रथारूपे सतनारायण पूजामे शाकाहारी रहि नियम निष्ठा आ व्रत उपास केर विपरीत रीत अपना एहिठाम सामर्थ्यवान लोक चलाबथि तँ कोनू हर्ज नहिँ।पैघाउत लोकक झांपल बात केँ एहि कटाक्ष सँ जगजियार करबामे कवि भीमबाबू समर्थ भेलाह अछि। तुलसीदास जीके एकटा पाँति चरितार्थ होईछ:-

सामरथ के दोष नाहिँ गोसाईं।।क्रिमिलेयर केँ सब छजन्ता छैक। सामाजिक जीवन मेँ अदौ सँ मजगुति करय ल' सिध्द पाँतिक आगू आलोचना कयनाइ रामायण के"पाँतिक अपमान मानल जाइछ।भीमभाय शतायु हौथु,हमरा सबकेँ एहिना चिक्कन-चिक्कन कविता सुनाबथि आ माय मैथिलीक अक्षय भंडार केँ भरयमे लागल रहैथ।कोनू नव पोथी फेर बाहर करथि से आश जगैत य।

प्रीति कारण सेतु बान्हल

एकटा नव चर्चित मैथिली भाषा साहित्यमे प्रकाशित पोथी 491पृष्टक एकरा आई एस बी एन (9789334009569) प्राप्त भेल छैक। सद्यप्रकाशित एहि पोथीक' रचियता आशीष अनचिन्हार जीके साहित्य जगतमे खुब विशेष रूप सँ वाहवाही भेटैत छैन। आशीष अनचिन्हार जीके मूलनाउ थिकैन -: आशीष कुमार मिश्र,जिनक जन्म 4 दिसम्बर 1985 ई० कैं भटराघाट, बिस्फी (मधुबनी) निवासी कृष्ण चन्द्र मिश्र आ गमभीरा देवी जीक घर भेल छन्हि।एहि पोथीमे पाठककेँ ई-विदेह केर सम्पादक वरेण्य साहित्यकार श्री गजेन्द्र ठाकुर जी आ प्रीति ठाकुर जीक साहित्यिक योगदानक विस्तार सँ चर्चा कयल अनेकों संदर्भ पढबाक सुअवसर भेटैत छैक। हमर एकटा छोटसन आख्यान सेहो छपल भेटत ऐ पोथीके सार्वजनिक पुस्तकालय आ घरेलू पुस्तकालय मेँ सहेजकेँ राखल जा सकैछ छी आ वर्तमान मैथिली साहित्य आन्दोलनक गतिविधि सँ सरोकार जोड़ी सकैत छी। हिनक रचनाक आरंभ बर्ख 2008 में शुरू भेल मैथिली गज़ल एवं शेरो-शायरीपर इंटरनेट मैगज़ीन (ब्लाग रूपमे) "अंचिन्हर आखर" केर संस्थापक ओ संपादक।

प्रकाशित कृति-

1) अनचिन्हर आखर (गजल, रुबाई ओ कथा संग्रह)
2) मैथिली गज़लक व्याकरण ओ इतिहास (ई भरसन प्रकाशित)
3) मैथिली वेब सामाजिक इतिहास (ई भरसन प्रकाशित)
4) जंघाजोड़ी (गजल संग्रह, ई भरसन प्रकाशित)
5) मैथिली गजलक रेडी रेकनर (ई-भरसन प्रकाशित)
6) कुमारी इच्छा (गजल संग्रह, ई-भरसन प्रकाशित)
7) शब्द-अर्थ-शक्ति (स्वतंत्र रूपे मैथिली गजलक फिल आलोचना पोथी, ई-भरसन प्रकाशित)
8) संदर्भ सहित (गजल-आलोचना)

साझी पोथी-

1) स्वतंत्रचेता (अरविंद ठाकुर: व्यक्तित्व-कृतित्व, विदेहक अरविंद ठाकुर विशेषांक केर विपक्षी रूप)

श्री गजेन्द्र ठाकुरजीक संगे सह-संपादित पोथी

1) मैथिली गजल आगमन ओ प्रस्थान बिंदु (संपादित रूपमे मैथिली गजल आलोचनात्मक पहिल

पोथी), ई-भरसन प्रकाशित

2) मैथिली प्रतिनिधि गजल (1905सँ 2022 धारी), ई-भरसन प्रकाशित

सम्मान-

बर्ख 2014 लेल विदेह भाषा सम्मान (समानान्तर साहित्य अकादमी सम्मान)सँ पोथी "अंचिन्हर आखर" (गजल संग्रह) लेल...

आजु जनकपुर मंगल भुप सभ आओल हे...

अनुक्रम

प्रथम गणेश पद गाओल देवता मनाओल हे...- आशीष अनचिन्हार (पृ. 3-17)

बनहीमे मुँगिया जनमि गेल बनही लतरि गेल हे...- प्रस्तुति-आशीष अनचिन्हार (पृ.18-28)

पीपरक पात अकासहि डोलए शीतल बहए बसात यौ...

खण्ड-1: कृपानंद ठाकुर

1. करोट फेरैत गामक निदर्शक: के.एन.टी- सियाराम झा 'सरस' (पृ.30-65)

पहिल पहर गौरी पूजल...

खण्ड-2: प्रीति ठाकुर

1. प्रीति ठाकुरक गोनू झा आ आन मैथिली चित्रकथा- डॉ. शेफालिका वर्मा (पृ. 67-68)

2. गोनू झा आ आन मैथिली चित्रकथा- वीणा ठाकुर (पृ. 69-74)

3. ‘गोनू झा आ आन मैथिली चित्रकथा’ आ ‘मैथिली चित्रकथा’- डॉ. रमण झा (पृ. 75-78)

4. गोनू झा आ आन मैथिली चित्रकथा- शिव कुमार झा ‘टिल्लू’ (पृ. 79-83)

5. प्रीति ठाकुरक दुनू चित्रकथापर एक नजरि- धीरेन्द्र कुमार (पृ. 84-86)

6. नेना लेल सुन्दर चित्रकथा- दुर्गानन्द मण्डल (पृ. 87-90)

7. मैथिली चित्रकथा- शिव कुमार झा ‘टिल्लू’ (पृ. 91-94)

8. मिथिलाक लोक देवता- शिव कुमार झा ‘टिल्लू’ (पृ. 95-99)

9. मैथिली चित्रकथा केर प्रारंभिक इतिहास (2002 सँ 2016)- आशीष...

#भूगोलमे_मिथिलाराज_कहियाधरि

जगत जननी जगदंबा जानकी महामाया थीकिह। जातेक रामायण संख्याँमे य रामायणक अवलोकन-मनन करैत धारावाहिक टी० वी० पर श्रीमान् रामानंद सागर जीक आयल। आ अहू कोरोना महामारीक लॉक डाउनमे रामायण सीरियल सर्व सुलभ भेल। ताहि लेल हुनकर धन्यवाद अवश्य करैत छी, परंच एकटा कचोट मनमे सदा सर्वदा रहैत अछि: जौ श्री सागर जी एतुका भाषाक (मैथिली) उपेक्षा नहिंकए तत्कालीन जनकपुर मिथिला क जनभाषाक कनेक चर्चा करितथि तँ मैथिली अनुरागीमे उत्साह बढ़ितैक। आओर हमसब जे जानकी नवमी मनाबैत छी, से आरो परिष्कार होइत। सामाजिक दूरीके नीमाहैत कतौह पैघ जमाबड़ा जुनिकरी, मात्रे नैतिक समर्थन करैत अपन पुरान मांग पर अड़ल रही " मिथिलाराज बनाके रहब " एहि संकल्पके फेरसँ दोहराबैत जनक सुता जानकी आ हुनक मातृभाषा मैथिली पर संक्षिप्त चर्चा करबा सँ अपनाके एहि अवसर पर रोकि नहिँ सकब।

महर्षि महामुनि वेदव्यासक अध्यात्म रामायण जे ब्रह्मांड पुराणक उत्तर खंडक आख्यान अछि आ संत बाल्मिकिक प्रतिष्ठा भारतवर्षमे आदि कविक रुपमे छैक जे संस्कृतमे रामायण लवकुश जन्मसँ पूर्वहि रचने रहथि। बहुतो इतिहासकार पौलथि जे सबहक रामायणमे रामेक गुणन बादन बेशी भेल छैक, जखनकि पंडित लाल दासक मैथिली रामायणमे सीताक गुणगान बेसी भेलैक। सीता बिनु रामक मर्यादा पुरुषोत्तम होयब कठिण रहैक। भगवतीरुपे जखन राक्षसके लतियबैत दण्डित करैत छथिन, ताहि प्रसंगके दोसर रचियता सब लालदाससँ फुट विचार केने छैक आ हुनका अपना छाती (थन) सँ असुरक संहार करबाक कहने छथि: जे कियो पतिया नहिँ सकैत छैक।

हमरौ ई तथ्य कनियों नहिँ अरघैत अछि। एहिठाम सीताक प्रति लेखकीय उदणडताक लगाम नहिँ लागने समीक्षक मंथन करथि। हमरा मैट्रिक मे लंका दहन आ आई0ए0 मे वर्षागीत पढ़बाक बाद डाँ0 बच्चेश्वर झाक रेडियो वार्ता सेहो महाकवि लालदास पर सुनवाक सौभाग्य भेटल रहय। हुनकर जन्मभूमि खड़ौआ गाम बहुतोबेर सन् 1980 सँ हालधरि जाकए ओतुका माँटिक चन्दन लगेबाक अवसर भेटल अछि। हुनकर किछु पांति एहि तरहेँ अछि-

निज भाषा जननी निज देश!

स्वर्गहु सँ जानथि जीवेश!!

तेँ हम कथा कहब तेहिरीति!

नहि विद्या कविता गुणगीति!!

मिथिला भाषा मधु माधुर्य!

शेष शारदा कह प्राचुर्र!!

देश विदेश क कयल विचार!

लक्ष्मी जतय लेल अवतार!!

नाम जानकी पड़ल जनीकि!

बजली मिथिला भाषा नीकि!!

कोमल वाणी अमृत समान!

तकर भाव रस क्यो-क्यो जान!!

पुण्य देशमे भाषा नीकि!

मिथिला सभक शिरोमणि थीकि!!

ताहि भाषामे करब सुवन्ध!

सीतारामक चरित प्रबंध!!

मैथिलीमे राज आश्रित दू महाकविमे चंदा झाक मिथिला भाषा रामायण आ लाल दासक रमेश्वर चरित मिथिला रामायण चर्चित भेल। लाल दास सबसँ बढ़िके सीता पर विस्तार देलनि एकटा पृथक पुष्कर काण्ड रचलनि, जकर पाँति देखू-:

मिथिला देश परम अभिराम!

सकल तीर्थमय धर्मक धाम!!

आबथि ततय मुनीश अनेक!

मिथिला वास करथि सुविवेक!!

दुष्कर तप कर मुनि समुदाय!

जनक सुश्रूषा करथि सदाय!!

ऋषि आ घुमन्तु प्राचीन परम्पराक बाद मानव समाज मे जे मैथिली भाषा आ तकर पहिचान दियेबा लेल विश्व प्रसिद्ध हमरा सभक आदर्श सीता दाई लेल आधुनिक उदगार व्यक्त करयमे किछु प्रमुख तथ्य सोझासोझी अछि -:

प्रो0 राम प्रमोद चौधरी अपन एकटा आलेख मे कहने छथि- जनक देश बाइस योजन धरि व्याप्त अछि। एतय हजारों गाम अछि। एहि देश मे नीच जातिमे उत्पन्न मनुष्यो प्रायः उदार होइत अछि। जनकरपुरक दक्षिणमे सात योजन दुर हटा कए डीजगल नामक महाग्राम अछि जतय जनक महाराजाक राजप्रसाद अछि, ग्रामक सटले सरिता सभमे श्रेष्ठ यमुना अत्यंत वेग सँ बहैत अछि। डीजगलक दक्षिण भाग मे आध योजन दूरी पर गिरजा नामक ग्राम देशवासी सभ मे विख्यात अछि। एहिठाम दुई नदीक मध्य मे एकटा प्राचीन मंदिर अछि। तत्पश्चात भैरव स्थान अछि जाहिठाम मुनिक... भैरव पूजन कए ओ सीतामण्डप गेलाह, जाहिठाम प्राचीनकालमे ग्रंथि बंधनक रुपे सीताक विवाह भेल छल।

पांचम शताब्दीक वृहत पुराणक मिथिला महात्म्य खंड मे जे वर्णित छैक तकर अनुवाद कविवर चंदा झा ई पाँति सृजित केलाह-

गंगा बहथि जनिक दक्षिण दिशी पूर्व कौशिकी धारा ।

पश्चिम बहथि गण्डकी उत्तर हिमवत बल विस्तारा।।

मैथिली साहित्य मे सिद्धहस्त हस्ताक्षर किछु कविक पाँति देखल जाए, 'वर्तमान मिथिला' कविता मे राजीव कुमार कण्ठ गाबै छथि -

माँ मैथिली हटावल गेली, हम चुप रही

बीपीएससी सौं धकियावल गेली, हम चुप रही

हम मैथिल कियो नै! कास्यथ, ब्राह्मण,यादव बनल चुप्प रही

जाति-पाति मे बटल समाज, तखन की हैत?...

डाँ0 बुचरू पासवान 'श्री जानकी' कविता शुरू करैत गाबै छथि-

मिथिला मे बहु ग्रह नाना जानकी नवमीक बनल संगोर

बहु संख्यकमे जनमनके जेना पूजा अर्चना मे जन विभोर...

सुभाष कुमार कामत केर पाँति मैथिल मंच सँ प्रकाशित ---

ठाकुरजी, चौधरीजी झाजी मिश्रजीक दलान सँ बहरा दियौक

जाय दियौक यादवजी... पासवानजी भंडारीजी आ बारहौं वर्णक दलान पर

मिथिला राज्यक नारा कें जाए दियौक

घसछिलनी क छिट्टा मे , हरबाहक लागैन पर.....

तेरहम शताब्दी मे ज्योतिरीश्वर केर वर्णरत्नाकर मैथिली गद्य पोथी सँ ल के अद्यतन बहुतो रचनाकर् मैथिली साहित्यक कतेको विधामे अपन कलम चलेबामे समर्थ भेलाह/भेलीह। ताहि सद् प्रयास लेल मैथिली पाठक श्रोता अभिभूत रहैत आयल अछि। सन् 1971 मेँ जननायक कर्पूरी ठाकुर सरकार बिहार विधान सभा सँ एक प्रस्ताव पारित कए भारत सरकार केँ पठौनै छलाह। मैथिली विरोध मे श्री धनिक लाल मंडल सन के नाम अबैत रहलैक । मधेपुरक पहिल विधायक स्व0 जानकी नंदन सिंह जी मिथिला राज्य लेल मांग केर बहस के आगू बढैनै रहथि।ओना 1918 सँ कोलकाता विश्वविद्यालयमे मैथिली विषयक एम0 ए0 धरि पढाई होइत रहल। 1939 सँ पटना विश्वविद्यालय मे क्रमशः इण्टर, स्नातक आ स्नातकोत्तर मेँ मैथिलीक पढौनी होइत रहल। मिथिलांचलक बहुतरास राजनेता मैथिलीक प्रति उदार छथि आ मातृभाषामे सदन मेँ शपथ लैत देखेलाह अछि। एखनो हक्कन कनैत मैथिलीक लेल नेतागण प्रयासरत रहौथु। मैथिली भाषा संविधानक अष्टम अनुसूची मे शामिल होअय, ताहि लेल एहि पाँतिक लेखक 1985 मे झंझारपुरक विद्वान सासंद डाँ0 जी एस राजहंस सँ पत्राचार करैत सरकार सँ

सब एम0पी0 मिलकए भेंट करथि से आग्रह कैने रहैक। एहि दिशा मे संघर्षशील वैद्यनाथ चौधरी बैजूक भाषण एकबेर सरौती (घोघरडीहा) अन्तर स्नातक महाविद्यालयक स्थापना लेल प्रथम बैसक अधिवक्ता सूर्य नारायण कामत केर संग सुनने रही, ताहम अंडर मैट्रिक छात्र सरौती हाई स्कूल सँ रहल होयब। मिथिलाक गौरव गाथाक वर्णन बहुतो पोथीमे मुन्दर्ज छैक। एहि पोथीक नीक कागतक अभावे दीमक कैँ शीघ्रे भेंट चढि जाईछ आ ग्रन्थालयमे धुरा गरदा तरमे सैंतायल रहल। किछु दुर्लभ पाण्डुलिपि प्रकाशन एखनो धरि नहिँ भेल छैक। मिथिला मे कोनो पोथीक ग्राहक सदा अभावै रहैत छैक,तैँ बेसी चलैन आब इलैक्ट्रानिक मीडिया आ ई-पत्रिका क भलैक अछि। एहिक लुत्फ नवपीढि उठवयमे लागले अछि। पोथीदिस तैयो उन्मुख समय पर हेबाक चाही। बिनु कोनो नारा आ बिना फ़ैशन कैँ मैथिली आगू बैढ़ सकैत छलीह आ मिथिलांचल (भारत - नेपाल) सँ बाहर रहनिहार समस्त प्रवासी मिथिला लोक कैँ सिनेमाक माध्यम मातृभाषा दिश आकर्षित करक उद्देश्य सँ मैथिलीक प्रचार-प्रसार चलचित्र माध्यमे हुअय, ताहिलेल धार्मिक बदला सामाजिक समस्या पर एकटा ममता गायब गीत फिल्म बनेबाक धुनकिमे लागल रहथि सर्व श्री केदार नाथ चौधरी (मधुबनी) आ हुनक परम मित्र आर्थिक मददगार स्व0 मदन मोहनदास, उदय भानु सिंह जे राजनगर आ दरभंगा क विराट मठ मे रहल छलाह ओ तिरहुताक (मुजफ्फरपुरक) छलाह। आब तँ बहुत टेलीफिल्म आ सिनेमाक फिल्म चित्रालय सँ देखाईल गेल छैक। नव अभिनेता आ अभिनेत्री जिनक सद् प्रयास सँ मैथिली आरो आगू बढत से आशा जनमानस मेँ बनल छैक। एहि लेल सरकारी मदद चाहियेक।आ सुविधा बंचित समाजक नायिका गंभीरा देवीक' प्रोत्साहन भेटक चाही।

देहाती कोशी क्षेत्रक एकटा गाम सँ मिथिलांचल कोशी विकास समिति हटनी आ एहिक 'कोशी संदेश ' त्रिमासिक मैथिली पत्रिकाक माध्यमे मैथिली लेल कतिपय काज भैलैक अछि। सर्वहारा मंचक रुपे सगर राति दीप जरय कथा गोष्ठी क माध्यमसँ नव लेखकीय समाज तैयार भ रहल छैक। सुच्चा मैथिलक कार्यक्रमक चर्चा चहुँओर पसरल हन। मिथिला मैथिली सँ जुड़ल लोग कैँ एक साथ समेटैय म मैथिल मंच क योगदान प्रंशसनीय अछि।

मातृभाषा मैथिली मेँ गीत संगीत आ नाटक माध्यम आ मिथिलाक बिरुदावली बखानमे लागल महराय,गायकक दिश सँ मैथिली अगूएलिह अछि। मातृभाषा मे बच्चे सँ पढाई लिखाई केर व्यवस्था राज्य सरकार करय, तकर पाठ्य पुस्तक अकादमी तैयार करय, से काज आजुकौ तारीख म फछुआयल छैक। भुल्ली महिष वाला कथा आ मीरा कलम दिनेश सँ बाल वर्गक विद्यार्थीक मनोविज्ञानिक तरहेँ विकास होइत रहैक से ठमकल छैक तेँ आगू बढवामे पिछैड़ अधिगम स्तरधरि देरी सँ पहूँचैत छैक। जखन कि विदेशोक खानगी स्कूलों म नर्सरी सँ मातृभाषामे धियापुताक पढाई हुअय लागल अछि।

मिथिलाक्षर कैँ आजादी पूर्व दरभंगा महाराजाधिराज शासन कालेमे पाछु छोड़लक आ कैथी लिपिमे दस्तावेज लेखन कार्य अपन स्थान बनेलक से अद्यतन देवनागरीक ईजोत सँ नेपथ्य चलिगेल सन छैक। नैका पीढी अपन भाषा आ अक्षर पकड़ब केर बनसब्त इंगलिश दिश झूकल छैक। मधुबनी पेंटिंग केर पहिचान विश्व भरि मेँ छैक। एहि सभक संवर्घन होयब परमावश्यक छैक। मिथिला मैथिली लेल बाबा यात्री जी द्वारा स्थापित चेतना समिति पटना आओर छोट पैघ संस्था संगठन लक्षित लाभ लेल काज करैत रहलैक, करितौ अछि जाधरि पूर्ण सफल नहिँ होयत ताधरि ई बैनर "हमरा मिथिला राज्य चाही " जिंदाबाद रहत से विश्वास जमि गेल अछि। एहि छोट सन रिपोतार्य मेँ बहुत रास पैघ विद्वान क आ रचनात्मक कार्यकर्ता गणक चर्चा करब संभव नहिँ भ सकल जे अहर्निश माँ मैथिली जानकी नवमी आ मिथिला राज बनेबा ले अपन सर्वस्व निछावर केने होथि। हम एहि अवदान लेल हुनको सबहक प्रति आभार प्रकट करैत छी। प्रज्ञान रामायणक माध्यम सीताराम मिश्रक कहब-

यदि राम छोड़ि दोसर पुरुष नै कएलौं चिंतन

तखन सेँ पृथ्वी देवी हमरो दिअ शरण अपन

सीता जीक श्रधान्वित एहि पाँति सँ समाप्त करब जे रामायणमे बहुत बेर पढ़ने होयव

युग- युग जीवथु बसथु लखकोस

हमर अभाग हुनक नहिँ दोष

जानकी जीक महात्याग कैँ शत् शत् नमन्।

लालदेव कामत

स्वतंत्र पत्रकार एवं लेखक

https://www.maithilmanch.in/news/bhoogol-me-mithila-kahiya/

#जानकीनवमी

#मिथिलाराज्यसंकल्प_दिवस

#ISupportMithilaRajya